चैत्र माह, कृष्ण पक्ष, 21 वर्ष, अंक 89, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | शनिवार 23 अप्रैल 2022 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

ब्रिटेन ने किया 'आत्मनिर्भर भारत' का समर्थन

मोदीमय हुए जॉनसनः ब्रिटिश पीएम बोले- माय खास दोस्त नरेंद्र, मुझे तेंदुलकर और बच्चन जैसा अहसास

नई दिल्लीः ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन शुक्रवार को दिल्ली दौरे पर थे। उन्होंने हैदराबाद हाउस में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। इस दौरान दोनों देशों के प्रतिनिधमंडल के बीच द्विपक्षीय रिश्तों को और मजबूत करने के लिए कई मुद्दों पर बातचीत हुई। द्विपक्षीय वार्ता के बाद बोरिस जॉनसन ने मीडिया को संबोधित किया। इस दौरान वह भारत में मिले सम्मान से गदगद नजर आए। मीडिया को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, माय फ्रेंड नरेंद्र, माय खास दोस्त। मेरी गुजरात में शानदार अगवानी हुई। मुझे सचिन तेंदुलकर जैसा अहसास हुआ। मुझे लगा जैसे मेरा चेहरा अमिताभ बच्चन की तरह हर जगह मौजूद है।

हमने अपने रिश्ते को हर तरह से मजबूत कियाः ब्रिटिश पीएम ने कहा कि, आज हमारे बीच शानदार बातचीत हुई और हमने अपने रिश्ते को हर तरह से मजबूत किया है। भारत और ब्रिटेन के बीच साझेदारी हमारे समय की परिभाषित दोस्ती में से एक है। ब्रिटेन नौकरशाही को कम करने और रक्षा खरीद के लिए डिलीवरी के समय को कम करने के लिए खुला सामान्य निर्यात लाइसेंस बना रहा है।

मुझे भारत का बना टीका लगा हैः बोरिस जॉनसन ने कहा कि कोरोना से बचाव के लिए भारतीय टीका मेरे हाथों में लगा है और यह अच्छे से काम कर रहा है। इसके लिए भारत को बहुत धन्यवाद। उन्होंने कहा, हिंद-प्रशांत क्षेत्र को मुक्त और नियम-आधारित रखने में दोनों देशों का साझा हित है। दोनों देश वायु, अंतरिक्ष और समुद्री खतरों से निपटने के लिए सहमत हुए हैं। हम स्थायी, घरेलू ऊर्जा के लिए कदम उठाएंगे।

रक्षा क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर सहमति बनी

शुक्रवार को राजधानी दिल्ली स्थित हैदराबाद हाउस में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और ब्रिटिश पीएम बोरिस जॉनसन की मुलाकात हुई। दोनों के बीच प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता हुई और इसमें कई अहम मुद्दों पर चर्चा की गई। जहां एक ओर दोनों देशों में रक्षा क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर सहमति बनी।

साल के अंत तक एफटीएम का समापनः बैठक के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि पिछले साल हमने दोनों देशों के बीच व्यापक रणनीतिक साझेदारी की भी स्थापना की थी और हमने रोडमैप 2030 को भी लांच किया था। आज हमने इस रोडमैप को भी रिव्यू किया और आगे के लिए लक्ष्य तय किए। प्रधानमंत्री ने कहा कि फ्री ट्रेड एग्रीमेंट (एफटीए) के विषय में दोनों देशों की टीम काम कर रही है और बातचीत में प्रगति हो रही है। हमने इस साल के अंत तक एफटीए के समापन का निर्णय लिया है।

हाइड्रोजन मिशन में शामिल होने का आमंत्रण

फ्री ट्रेड एग्रीमेंट पर बातचीत करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि पिछले कुछ महीनें में भारत ने संयुक्त राज्य अमीरात (यूएई) और ऑस्ट्रेलिया के साथ भी फ्री ट्रेड एग्रीमेंट का समापन किया है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आज हमने अपनी जलवायु और उर्जा पार्टनरशिप को और अधिक गहन करने का निर्णय लिया। हम ब्रिटेन को भारत के राष्ट्रीय हाइड्रोजन मिशन में शामिल होने के लिए आमंत्रित करते हैं।

भारत को अच्छे से समझते हैं जॉनसनः साझा बयान के दौरान पीएम मोदी ने कहा कि, प्रधानमंत्री के रूप में भले ही जॉनसन की यह पहली यात्रा हो, लेकिन पुराने मित्र के रूप में भारत को अच्छे से समझते हैं। इस समय जब भारत अपनी आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। पीएम जॉनसन का यहां आना एतिहासिक पल है। द्विपक्षीय वार्ता में दोनों देशों के बीच कई अहम समझौते भी हुए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग बढ़ाने को लेकर बातचीत हुई। हम रक्षा क्षेत्र में अपने सहयोग को आगे बढ़ाएंगे। इसके अलावा फ्री ट्रेड पर भी वार्ता हुई है।

यूक्रेन में तुरंत हो युद्ध विरामः मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ब्रिटिश पीएम बोरिस जानसन के साथ साझा बयान में कहा कि, यूक्रेन संकट में हमने तुरंत युद्धविराम और समस्या के समाधान के लिए डायलॉग और डिप्लोमेसी पर बल दिया है। इसके साथ ही हमने सभी देशों की क्षेत्री अखंडता और संप्रभुता के सम्मान के महत्व को भी दोहराया है। इसके साथ ही पीएम मोदी ने कहा कि, भारत और ब्रिटेन के बीच जलवायु और उर्जा पार्टनरशिप को और अधिक गहन करने का निर्णय लिया गया है। हम ब्रिटेन को भारत के राष्ट्रीय हाइड्रोजन मिशन में शामिल होने के लिए आमंत्रित करते हैं।

अलवर में 300 साल पुराने शिव मंदिर पर चला बुलडोजर

भाजपा ने पूछा-यही है कांग्रेस का सेक्युलरिज्म

अलवरः अलवर के राजगढ़ में तीन मंदिरों को तोड़े जाने का मामला सामने आया है। जिसके बाद भाजपा कांग्रेस सरकार पर हमलावर हो गई है। भाजपा के आईटी सेल के चीफ अमित मालवीय ने इस मामले में कांग्रेस को घेरा है। उन्होंने कहा कि करौली और जहांगीरपुरी पर आंसू बहाना और हिंदुओं की आस्था को ठेस पहुंचाना, यही कांग्रेस का सेक्युलरिजम है। रिपोर्टस के अनुसार अलवर के राजगढ़ में तीन मंदिर पर बुलडोजर चलाया गया है। जिससे करीब 300 साल पुराने

शिव मंदिर की मूर्तियां खंडित हुई हैं। मंदिर तोड़े जाने की वीडियो और तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल हो रही हैं। कहा जा रहा है कि 17 अप्रैल को राजगढ़ के शिव मंदिर को तोड़ा गया है। मास्टर प्लान के तहत कस्बे के गोल सर्किल से मेला का चौराहा के मध्य मार्ग में बाधा बने दुकानों और मकानों को ध्वस्त करने को लेकर बुलडोजर चलाया गया। इसी क्रम में मंदिर को अतिक्रमण बताकर प्रशासन की टीम बुलडोजर के साथ पहुंची और उन्होंने मंदिर के गुंबज को तोड़ दिया। इसके बाद शिवलिंग को कटर की मदद से काटा गया। इस दौरान हनुमान जी सहित अन्य देवी-देवताओं की मूर्ति तोड़ी गई है।

आरोप-भाजपा को वोट देने पर लिया गया बदलाः स्थानीय नागरिकों का कहना है कि मंदिर तोड़े जाने की शिकायत लेकर हम कांग्रेस विधायक जौहरी लाल मीणा के पास गए थे।

खुद को मजबूत करने के सिवा कोई विकल्प नहीं: राजनाथ सिंह

नई दिल्लीः यूक्रेन और रूस के बीच चल रहे युद्ध को लेकर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शुक्रवार को कहा कि वैश्विक व्यवस्था तेजी से बदल रही है। ऐसी परिस्थितियों में अपनी रक्षा, शांति और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए भारत के पास खुद को और मजबूत करने के अलावा कोई और विकल्प नहीं है। राजनाथ 'डेफकनेक्ट 2.0' के उद्घाटन के अवसर पर संबोधित कर रहे थे। डेफकनेक्ट 2.0 एक दिन का कार्यक्रम है जो रक्षा क्षेत्र में स्वदेशी इनोवेशन को बढ़ावा देने

के लिए स्टार्टअप्स, बड़ी कंपनियों और सशस्त्र बलों के अधिकारियों को एक मंच पर लाने के लिए आयोजित किया गया है। इस दौरान सिंह ने कहा कि दुनिया में ऐसी बहुत सी गतिविधियां हो रही हैं जो भारत को प्रभावित कर रही हैं।

'कोरोना संकट नहीं खत्म हुआ और यूक्रेन विवाद शुरू हो गया'ः सिंह ने यहां मौजूद लोगों से कहा, 'जब हमारी एयरो इंडिया 2021 (21 फरवरी) को मुलाकात हुई थी, तब से अब तक दुनिया इतनी बदल चुकी है ।

कोरोनाः दिल्ली सरकार ने स्कूलों के लिए जारी की नई गाइडलाइन

नई दिल्लीः दिल्ली सरकार ने स्कूलों में कोरोना से निपटने की तैयारी कर ली है। सरकार ने स्कूल बिना बंद किए इस महामारी से कैसे लड़ा जाए इसके लिए नई गाइडलाइन तैयार की है। इसमें स्कूलों में अलग से क्वारंटीन रूम बनाने से लेकर शिक्षकों द्वारा रोजाना बच्चों से उनका और उनके परिवार का हाल पूछने तक जैसे नियम शामिल हैं। दिल्ली आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की बैठक में बीते दिनों फैसला लिया गया था।

मेरी नाराजगी राहुल-प्रियंका से नहीं...हार्दिक पटेल

नई दिल्लीः गुजरात विधानसभा चुनाव जैसे-जैसे नजदीक आते जा रहे हैं। वैसे-वैसे राज्य में सियासी उथल-पुथल भी तेज हो गई है। अब अटकलें लगाई जा रही हैं कि गुजरात कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष हार्दिक पटेल कांग्रेस छोड़ सकते हैं। हालांकि, शुक्रवार को उन्होंने कहा कि, मुझे हाईकमान से समस्या नहीं है। मुझे कांग्रेस के प्रदेश नेतृत्व से दिक्कत है। वे नहीं चाहते कि कोई यहां काम करे, अगर कोई काम करता भी है तो उसे करने नहीं दिया जाता। उन्होंने कहा हमारी मुख्य चिंता गुजरात के लोग हैं।

चारा घोटाले के पांचवें मामले में भी मिली जमानत, सीबीआई ने किया था विरोध

जेल से बाहर आएंगे लालू

रांचीः राजद प्रमुख लालू प्रसाद यादव को चारा घोटाले से जुड़े डोरंडा कोषागार मामले में जमानत मिल गई है। यह चारा घोटाले से जुड़ा पांचवा मामला है, जिसमें उन्हें झारखंड हाईकोर्ट ने जमानत दे दी। सीबीआई ने जमानत देने का कड़ा विरोध किया था। राजद प्रमुख के वकील ने बताया कि उन्हें आधी सजा काट लेने और खराब स्वास्थ्य के आधार पर जमानत दी गई है। उन्हें जल्द रिहा किया जाएगा। लालू यादव को एक लाख रुपये का बांड व जुमार्ने के 10 लाख रुपये चुकाना होंगे।राजद प्रमुख को चारा घोटाले से जुड़े चार मामलों में पहले सजा मिल चुकी है और उनमें जमानत भी मिल गई है। यह मामला डोरंडा कोषागार से 139 करोड़ रुपये की अवैध निकासी का है। झारखंड हाईकोर्ट ने शुक्रवार को जमानत दे दी। 27 साल बाद कोर्ट ने फरवरी में डोरंडा कोषागार मामले में फैसला सुनाया था। इसमें लालू यादव को दोषी पाया गया था। उन्हें पांच साल की कैद व जुर्माना की सजा सुनाई गई थी। सीबीआई ने 1996 में अलग-अलग कोषागारों से गलत ढंग से अलग-अलग राशियों की निकासी को लेकर 53

मुकदमे दर्ज किए थे। इनमें से डोरंडा कोषागार का मामला सबसे बड़ा था। इसमें सर्वाधिक 170 आरोपी शामिल थे। 55 आरोपियों की मौत हो चुकी है। चाईबासा कोषागार से 37.7 करोड़ के अवैध निकासी में लालू जमानत पर हैं। इसमें उन्हें 5 साल की सजा हुई थी। देवघर कोषागार से 79 लाख के अवैध निकासी के घोटले के दूसरे मामले में भी वे जमानत पर हैं। इस मामले में उन्हे साढ़े 3 साल की सजा सुनाई गई थी। उन्हें 33.13 करोड़ के चाईबासा कोषागार से अवैध निकासी के तीसरे मामले में भी जमानत मिली थी।

भाजपा केवल विकास की बात करती हैः नड्डा

यूपी, उत्तराखंड, मणिपुर और गोवा में सरकार हमारी है, अब हिमाचल की बारी हैः नड्डा

शिमलाः भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा ने कांगड़ा के नगरोटा बगवां में जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि राजनीति की संस्कृति में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बदलाव आया है। कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ता और नेता जातिवाद, संप्रदायवाद, इलाकावाद, भाई-भतीजवाद की बात करते हैं। पीएम मोदी ने परिवारवाद, संप्रदायवाद, इलाकावाद को सीधी टक्कर देकर विकासवाद किया है। ये है राजनीति का अंतर। पीएम मोदी ने 130 करोड़ लोगों को वैक्सीन लगाकर स्वास्थ्य कवच दिया। आज सभी इस जनसभा में बिना मास्क के बैठे हैं तो यह सब वैक्सीन की वजह से संभव हुआ है। मालदीव, भूटान, श्रीलंका, मलेशिया, अफगानिस्तान को भी वैक्सीन दी। वैक्सीन की पहली और दूसरी डोज लगाने में हिमाचल देशभर में पहले स्थान पर रहा। जेपी नड्डा ने कहा कि हिमाचल के डॉक्टरों, हेल्थ वर्करों को सलाम और बधाई। यूक्रेन से 436 बच्चे हिमाचल सकुशल लाए गए। हमारी सरकार जवाबदेह सरकार है, ये

राष्ट्रवाद से ओतप्रोत सरकार है, ये विकासवाद से जुड़ी हुई सरकार है। इसलिए आपने हमारे नेताओं को देखा होगा कि वो बात करेंगे तो केवल विकास की बात करेंगे। ये प्रो एक्टिव, प्रो रिस्पॉन्सिबल सरकार है। भारत में वोट देने का ट्रेंड बदल गया है। विपक्ष के नेता इसे समझ लें तो उनके लिए अच्छा रहेगा। यूपी में 37 साल बाद सरकार रिपीट हुई है। यूपी में कांग्रेस की 387 सीटों पर जमानत जब्त हुई। 377 सीटों पर आम आदमी पार्टी की जमानत जब्त हुई। जेपी नड्डा ने कहा कि उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मणिपुर और गोवा में सरकार हमारी है, और अब आपके आशीर्वाद से हिमाचल की बारी है। कांग्रेस ने हमेशा हिमाचल का हक छीना है और भाजपा ने हमेशा हिमाचल के हक की रक्षा की है और हमेशा हिमाचल को दिया है। 1987 में राजीव गांधी प्रधानमंत्री थे। तब नौवां वित्त आयोग हिमाचल आया। उन्होंने हिमाचल का स्पेशल कैटेगिरी स्टेट का दर्जा वापस लिया। मोदी 2014 में आए हिमाचल को स्पेशल कैटेगिरी स्टेट का दर्जा वापस दिया। मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर ने कहा कि विपक्ष के नेताओं ने कोविड वैक्सीन पर सवाल उठाए।

चीन, पाक और म्यांमार सीमा पर सड़कें और पुल बनाएगा भारत

लगभग तीन-चौथाई सड़कें और सभी प्रस्तावित पुल भारत-चीन सीमा के करीब बनेंगे

नई दिल्ली

सरकार ने भारत से लगी चीन, पाकिस्तान और म्यांमार के सीमा क्षेत्रों में बुनियादी ढांचा मजबूत करने का फैसला लिया है। इन सीमावर्ती इलाकों में 31 हजार करोड़ रुपये से अधिक की अनुमानित लागत से सड़कों और पुलों के निर्माण का प्रस्ताव रखा गया है। तीनों देशों की सीमाओं पर 3,508 किमी. लंबी सड़कें बननी हैं जिसमें लगभग तीन-चौथाई सड़कें और सभी प्रस्तावित पुल चीन सीमा के करीब के इलाकों में बनाए जाएंगे। इन प्रस्तावों को जल्द ही कैबिनेट कमेटी ऑन सिक्योरिटी (सीसीएस) के समक्ष मंजूरी के लिए रखा जाएगा। अधिकारियों ने कहा कि

इन रणनीतिक सड़कों को "इंडिया @75 स्ट्रेटेजिक रोड पैकेज (आईएसआरपी)" के तहत पहचाना गया है। यह सड़कें पड़ोसी देशों की सीमा के साथ "रोड हेड डिफरेंशियल गैप" को कम करने में भी मदद करेंगी। उन्होंने कहा कि अरुणाचल प्रदेश में तवांग के सामने सीमा क्षेत्र में कामेंग सेक्टर को छोड़कर भारतीय सीमा से रोड हेड की दूरी 20 से 120 किमी. तक होती है लेकिन चीन के मामले में यह सीमा पर 8 किमी. से भी कम है। इन 64 सड़क परियोजनाओं में से 41 पर "ग्रीनफील्ड" बनाने का प्रस्ताव है। अधिकारियों का कहना है कि 31 हजार करोड़ रुपये बजट का लगभग 78 फीसदी हिस्सा भारत-चीन सीमा क्षेत्रों में बनने वाली परियोजनाओं पर खर्च किया जाएगा, जबकि भारत-पाकिस्तान सीमा क्षेत्रों में प्रस्तावित सड़कों को कुल निवेश का 14 फीसदी हिस्सा मिलेगा। इन रणनीतिक सड़क और पुल परियोजनाओं का उद्देश्य अरुणाचल, मणिपुर, सिक्किम, मिजोरम, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, उत्तराखंड, राजस्थान और हिमाचल प्रदेश सहित सीमावर्ती राज्यों के साथ संपर्क में सुधार करना है।

खबर संक्षेप

बसनेहटा के युवक की कंटेनर से कुचलने से दर्दनाक मौत

प्रतापपुर। फूलपुर कोतवाली क्षेत्र के बसनेहटा गाँव निवासी देवी शंकर शर्मा की भदोही जनपद के औराई क्षेत्र में गुरुवार भोर में कंटेनर की टक्कर से मौत हो गयी।शव घर पहुँचने पर परिजनों में कोहराम मच गया।बसनेहटा गाँव के देवी शंकर (30)पुत्र प्रेम शंकर शर्मा हार्वेस्टर मशीन का सहायक चालक था।गुरुवार को भोर में मशीन खराब होने के कारण भदोही जनपद के औराई थाना क्षेत्र के कटका(पड़ाव)हाइवे के पटरी के पास मशीन खराब हो जाने पर मैकेनिकल खराबी दूर करने के लिए गाड़ी से नीचे उतरे थे इसी बीच पीछे से आ रही कंटेनर गाड़ी ने देवी शंकर को कुचलते हुए एवं हार्वेस्टर में धक्का देते हुए गोपीगंज की तरफ भाग गयी।घटना के तुरंत बाद पड़ोस का रोहित शर्मा हार्वेस्टर मालिक और परिजनों को फोन से सूचना दी।औराई पुलिस से शव का पंचनामा कर लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।शव शाम चार बजे बसनेहटा गाँव पहुचते ही परिजनों में कोहराम मच गया।

डीएम ने कोहड़ार घाट गो-आश्रय केन्द्र में गो-धाम उत्सव मनाया

गो-वंशों के लिए मूलभूत सुविधाओं के साथ-साथ पर्याप्त मात्रा में भूसा-चोकर उपलब्ध रहे : जिलाधिकारी

भूसा चारा की व्यवस्था देखते जिलाधिकारी

गोवंश आश्रय स्थल का निरीक्षण करते जिलाधिकारी

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री ने शुक्रवार को ग्राम पंचायत कोहड़ार घाट तहसील मेजा में गोवंश आश्रय स्थल पर गो-धाम उत्सव मनाया तथा स्थलीय निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने गो-वंशों को चिन्हित कर अलग-अलग रखने के लिए कहा है। उन्होंने बच्चों के लिए अलग शेड बनाकर उनकी देखभाल करने के निर्देश दिये है। अस्वस्थ गोवंश कों चिन्हित कर अलग रखने तथा उनका समुचित उपचार कराने के निर्देश दिये है, वहां पर 504 गो-वंश रखे गये है, जिसके देखभाल के लिए 10 केयर-टेकर लगाये गये है, वहां पर 4 शेड़ गो-वंशों के लिए बनकर तैयार हो गया है, 1 शेड़ निमार्णाधीन है तथा भूसा एवं चोकर के लिए भण्डारण कक्ष बनाये गये है एवं वर्मी कम्पोस्ट भी तैयार किये जाने के निर्देश दिये है तथा गो-वंशों के लिए खुले स्थान भी रखा जाये। जिलाधिकारी ने आम-जनमानस से भी अपील किया कि जो भी इच्छुक व्यक्ति है, वे इसमें अपना सहयोग दे सकते है, वहां पर जिलाधिकारी ने गो-वंशों की पूजा की तथा गुड़ भी खिलाया। इसी क्रम में पूरे जनपद में 12 स्थानों पर गौ धाम उत्सव मनाया गया। जिलाधिकारी की प्रेरणा से 12 गोशाला पर दान स्वरूप 10 कुंतल प्रत्येक गोसाला को भूसा-चोकर मिला है। उन्होंने ज्यादा से ज्यादा भूसे का भण्डार करने तथा आवश्यक मूलभूत सुविधाओं का निर्माण करना, गोवंशों को इयर टैगिंग कराना तथा साफ-सफाई की व्यवस्था, पशुओं के लिए पीने योग्य पानी तथा नहलाने आदि की समुचित व्यवस्था कराये जाने के निर्देश दिये है। तत्क्रम में जिलाधिकारी ने पंचायत भवन में ग्राम पंचायत कार्यालय का भी निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान मौके पर पंचायत भवन संचालित पाया गया। इस अवसर पर उपजिलाधिकारी मेजा श्री विनोद कुमार पाण्डेय, डीडीओ ए0के0 मौर्य, मुख्य पशु चिकित्साधिकारी आर0पी0 राय सहित सम्बंधित अधिकारीगणों के अलावा जन प्रतिनिधिगण उपस्थित रहे। इसी क्रम में अपर निदेशक पशुपालन डॉ0 अशोक मिश्र ने कुलहड़िया गोशाला, कौंधियारा ब्लाक में गौ-धाम उत्सव मनाया।

गोआश्रय स्थल पांडर व गींज में मनाया गया गोधाम उत्सव

जसरा। जिलाधिकारी प्रयागराज संजय कुमार खत्री के निर्देशानुसार जिले के अस्थायी गोआश्रय स्थलों में खनन पट्टाधारक/संभ्रांत नागरिक को सप्ताह भर पूर्व बयालीस गोआश्रय स्थलों को गोद दिलाया गया एवं गोशालाओं की ब्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने में सहयोग की अपील किया। जिससे जिले में बने अस्थायी गौशाला को आदर्श गौशाला बनाया जा सके। इसी के तहत जसरा के दो अस्थायी गोआश्रय स्थल पांडर व गींज में गोधाम उत्सव मनाया गया। पांडर के गोआश्रय स्थल में सीताराम अग्रवाल ने कहा कि सरकार द्वारा दिये गये जिम्मेदारी का पूर्ण रूपेण निर्वहन करूंगा। राजकीय पशु चिकित्सालय जसरा के पशु चिकित्साधिकारी डा०सुनील कुमार मिश्र ने पांडर गोशाला की चारों ओर बाउंड्री बाल बनवाने का प्रस्ताव रखा। जिस पर गोशाला को गोद लिए सीताराम अग्रवाल ने तत्काल जेई से स्टीमेट बनवाकर देने के लिए कहा है। जिससे गोशाला की बाउंड्री बाल बनवाई जा सके। इसी तरह गींज गोशाला की जिम्मेदारी पट्टाधारक/संभ्रांत नागरिक सुधाकर पांडेय को मिला है। सुधाकर पांडेय ने पशु चिकित्सक जारी डा०दिलीप सिंह से गोधाम उत्सव में न पहुंचने को कहा। डा०दिलीप सिंह के निवेदन पर उन्होंने शाम तक पहुंचने को कहा है। इसी क्रम में डीएम प्रयागराज के निर्देशन में गोशालाओं में सभी गोवंशों का स्वास्थ्य परीक्षण, नर गोवंशों का बधिया करण तथा सभी गोवंशों को इक्टोपैरासाइट और इण्डोपैरासाइट को मारने की दवा का इंजेक्शन लगाया गया। वहीं गोवंशों को स्नान कराकर उनको चारे के साथ चूनी चोकर दिया गया एवं इसी तरह गोवंशों को ब्यवस्थित तरीके से लगातार चूनी चोकर देने की बात प्रधान द्वारा कही गई। इस अवसर पर उप मुख्य पशुचिकित्साधिकारी डा०पीएन पांडेय, पशु चिकित्साधिकारी चिल्ला डा० नीलम सिंह, पशुधन प्रसार अधिकारी जसरा इंद्रजीत सिंह व जगदीश चंद्रा चाका,महेंद्र कुमार कौशल, प्रधान पांडर सुरेन्द्र सोनकर,प्रधान गींज राम गुलाब के साथ भारी तादात में ग्रामीण उपस्थित रहे।

अनियंत्रित स्कार्पियो से कुचलकर अधेड़ व्यक्ति की मौत

आक्रोशित ग्रामीणों ने स्कॉर्पियो को किया आग के हवाले, जलकर खाक

अखंड भारत संदेश

आग के हवाले स्कार्पियो का दृश्य

रत्योंरा। स्थानीय थाना क्षेत्र के सेमरी बाघराय नगई का पूरा गांव में बीती रात को एक अनियंत्रित स्कॉर्पियो से कुचलकर एक अधेड़ व्यक्ति की मौत हो गई। आक्रोशित ग्रामीणों ने स्कॉर्पियो को आग के हवाले कर दिया। जिससे स्कॉर्पियो मौके पर ही जलकर खाक हो गई। सूचना पर पहुंची फायर ब्रिगेड की गाड़ी ने जलती स्कॉर्पियो की आग को बुझाया। जानकारी के मुताबिक बीती रात को 11:30 बजे के आसपास बिजली न होने के कारण पारसनाथ पुत्र स्वर्गीय मटुकधारी सिंह (55) निवासी सेमरी बाघराय थाना कोरांव सड़क के किनारे स्थित अपने घर के दरवाजे पर बाहर बैठे थे कि अनियंत्रित तेज रफ्तार स्कार्पियो चालक श्याम जी पुत्र रामायण निवासी बेलवनिया थाना कोरांव रंग देते हुए स्कॉर्पियो लेकर भागने लगा हादसे में स्कॉर्पियो सड़क के किनारे स्थित गड्ढे में जाकर पलट गई। जिसके बाद आक्रोशित ग्रामीणों ने स्कॉर्पियो को आग के हवाले कर दिया। जिसके बाद परिजनों ने घायल अवस्था में पारसनाथ को कोरांव के एक निजी चिकित्सालय ले आए जहां से इलाहाबाद के लिए रेफर कर दिया गया। जैसे ही परिजन पारसनाथ को स्वरूपरानी नेहरू चिकित्सालय लेकर पहुंचे चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। जिसके बाद शव को पीएम हाउस में रखवा दिया गया। मृतक पारसनाथ के बेटे अभयराज ने कोरांव पुलिस को स्कार्पियो चालक श्याम जी पुत्र रामायण को नामजद करते हुए तहरीर देकर विधिक कार्रवाई की मांग की है।

वैवाहिक समारोह से घर लौट रहे युवक की सड़क हादसे में मौत

टंडन वन के समीप अज्ञात वाहन ने मारी टक्कर, शंकरगढ़- नारीबारी मार्ग पर हुआ दर्दनाक हादसा

अखंड भारत संदेश

हादसे के बाद मृतक के रोते बिलखते परिजन तथा इन्सेट में मृतक सूबेदार सिंह की फाइल फोटो

शंकरगढ़। शुक्रवार की भोर में हुए सड़क हादसे में एक युवक की मौत हो गई। यह हादसा शंकरगढ़-नारीबारी मार्ग पर टंडन वन के समीप हुआ। युवक किसी वैवाहिक समारोह में शामिल होने गया था, और वहीं से घर की तरफ लौट रहा था। हादसे की सूचना मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया। रोते-बिलखते परिजन मौके पर पहुंचे। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर चीरघर भेज दिया है।

जानकारी के मुताबिक शंकरगढ़ थाना क्षेत्र के गदामार के रहने वाले पीआरडी के जवान सीताराम का पुत्र सूबेदार सिंह उर्फ पुष्पेंद्र सिंह 32 वर्ष 21 अप्रैल को किसी वैवाहिक समारोह में शामिल होने के लिए गया था। बताया जाता है कि देर रात करीब 3 बजे अपने वहां से वह ननिहाल अकौरिया जा रहा था।शंकरगढ़-नारीबारी मार्ग पर टंडन वन के समीप से वह पैदल ही घर की तरफ बढ़ रहा था, इसी दौरान किसी अज्ञात वाहन ने उसे जोरदार टक्कर मार दी।हादसे के बाद सुबह उधर से गुजरे राहगीरों के जरिए इस हादसे की जानकारी शंकरगढ़ पुलिस तक पहुंची। मौके पर पहुंची पुलिस ने सड़क पर लहूलुहान पड़े सूबेदार सिंह को अस्पताल पहुंचाया, जहां डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। शिनाख्त होने के उपरांत पुलिस ने हादसे की जानकारी परिजनों को दी। इधर गांव में जैसे ही खबर पहुंची पत्नी संगीता और परिजनों का रो-रोकर हाल बेहाल रहा। पुष्पेंद्र सिंह की 3 बच्चियां दस,आठ,सात साल की हैं।शंकरगढ़ पुलिस ने शव को चीरघर भेज दिया गया है। शंकरगढ़ एसओ मनोज कुमार सिंह का कहना है कि पुलिस टक्कर मारने वाले वाहन की तलाश की जा रही है।

न्यूज झरोखा

ख्वाजा गरीब नवाज की दरगाह पर जियारत करने जाएंगे 53 अकीदतमंद

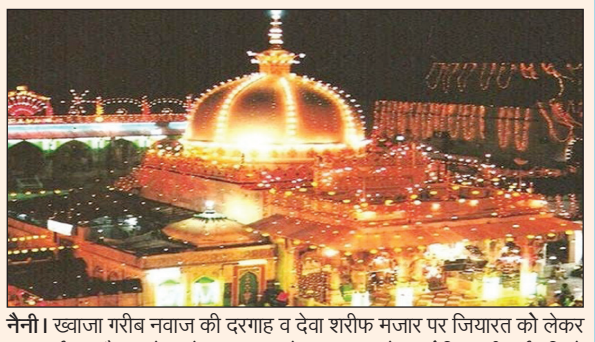

नैनी। ख्वाजा गरीब नवाज की दरगाह व देवा शरीफ मजार पर जियारत को लेकर एक वर्चुअल बैठक देवा सेवा संस्थान के तत्वाधान में आयोजित की गई। जिसे लेकर संस्थान के अध्यक्ष देवा श्रीवास्तव ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि संस्थान का उद्देश्य भारत की धरोहर से लोगो को रूबरू करना है। साथ कि कम खर्च में संस्थान के सदस्यों व आम जन को दरगाह एवं मजार पर जियारत करना है।इसके बाद संस्थान के उपाध्यक्ष अखिलेश शुक्ल व नाजिम खान ने बताया कि सफर नैनी चकदोंदी से शुरू होकर आगरा ताजमहल, किला, राजस्थान अजमेर शरीफ दरगाह, हिन्दलवली ख्वाजा गरीब नवाज की दरगाह, आपके साहबजादे की दरगाह सरवाड़ शरीफ, आना सागर, ढाई दिन का झोपड़ा, लखनऊ छोटा इमाम बड़ा, बड़ा इमाम बड़ा, भूल भुलईया, देवा शरीफ होते हुए प्रयागराज वापस होंगी।संस्थान की अलकमा शेख राहिल अंसारी ने कहा की यह काफी नेक काम है, जियारत करने और करवाने से काफी सवाब मिलता है। अल्लाह ताला इससे खुश होते है और बरक्कत देते है।वर्चुअल बैठक में मुख्यरूप से कर्मवीर आर्या, मनतसा, आलसिफा, राहुल जयसवाल, जैनब, साईना, सानिया, हमजा, हबिबा, जीनत, रेहान, एलिशान, असद सहित तमान लोग मौजूद रहे।

विधायक करछना ने किया स्वास्थय मेले का उद्घाटन

अखंडभारत संदेश

विधायक नें मेले में लगे स्टालो का निरीक्षण कर जायजा लिया

विधायक करछना पियूष रंजन निषाद स्वास्थ्य मेले का कि उदघाटन

करछना। प्रयागराज राज्य सरकार द्वारा विषेश अभियान चलाकर जिले के सभी विकासखंडों पर स्वास्थ्य मेला अयोजित किया जा रहा है जिसमे आयुष्मान भारत के अंर्तगत सभी स्वास्थय परियोजनाओं की प्रदर्शनी लगा कर जनता को जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है , सरकार द्वारा जन जागरुकता पर विशेष जोर दिया जा रहा है ताकि आमजन भी सरकार की सभी योजनाओं तक पहूच बन सके इसी क्रम में विकासखण्ड करछना के सामुदायिक स्वास्थय केन्द्र में स्वास्थय मेला अयोजित किया गया , जिसका उद्घाटन एवम् अध्यक्षता विधायक करछना पीयूष रंजन तथा ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि कमलेश द्विवेदी द्वारा किया गया । वही विकासखण्ड के कार्यलय से ग्राम विकास के (मनरेगा , एनआरएलएम) ,पंचायतीराज विभाग के सामुदायिक शौचालय , पंचायत भवन का माडल प्रस्तुत किया गया, वहीं अन्य सभी विभागों द्वारा स्टाल लगाकर संबंधित परियोजनाओं की प्रचार सामग्री तथा मॉडल प्रस्तुत किया गया, इसी क्रम में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन करछना परियोजना द्वारा स्टॉल लगाकर विभिन्न गतिविधियों का मॉडल प्रस्तुत किया गया जिसमें नारी शक्ति की झलक देखी गई स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा इस्तेमाल में ना आने वाले कपड़े तथा सीमेंट से गमले तैयार किए गए जैविक खाद से सब्जियां उगाई गई तथा जैविक कीटनाशक एवं वर्मी कंपोस्ट तथा केंचुआ खाद प्रस्तुत किया गया महिलाओं की इन प्रस्तुति से वर्तमान सरकार की नारी सशक्तिकरण परियोजना को बल मिल रहा है । खंड विकास अधिकारी रामविलास राय एडीओ पंचायत विवेक मिश्र, द्वारा स्टालों का निरीक्षण कर प्रबंधन की जांच की गई, एडीओ आईएसबी रामेश्वर सिंह द्वारा व्यवस्थापक के रूप में कार्य किया गया तथा प्रोजेक्ट का विश्लेषण भी किया, स्टालों का प्रबंधन ब्लॉक मिशन प्रबंधक करछना आदित्य तिवारी द्वारा किया गया श्री तिवारी ने बताया कि सरकार द्वारा उपलब्ध कराए गए रीड से महिलाएं नित नए उद्यम की ओर उन्मुख हो रही है जिससे कि आर्थिक संबल भी मिल रहा है तथा स्वास्थ्य एवं अन्य परियोजनाओं की जानकारी भी मिल रही है। इस मौके पर वी ओ पीआरडी संतोष सिंह , एडीओ सांख्यिकीसुरेश चंद्र , एडीओ कॉपरेटिव सोनल, ग्राम विकास अधिकारी संजीव श्रीवास्तव , बीएमएम संजय चौधरी , धर्मेंद्र यादव , जलज शर्मा एवम् अन्य ब्लॉक कर्मी अतुल मिश्र , गुलाम गौस , बृजेश यादव , रविंद्र पटेल डॉ नवीन गिरि अधीक्षक , डॉ आशीष कुमार, त्रिवेणी प्रसाद पाण्डेय भाजपा जिला उपाध्यक्ष, शोभ नाथ द्विवेदी, ज्ञान सिंह पटेल, शिव गणेश पटेल प्रधान हथसरा, धर्मराज पटेल, लक्ष्मी शंकर पाण्डेय, विनोद सिंह काका, रिंकू सिंह, बच्चा सिंह, ज्ञान सिंह पटेल, पप्पू तिवारी, राम बाबू, विनय कुमार, सहित हजारों की संख्या महिलाएं और लोग मौके पर मौजूद रहे।

अंगूठा छाप का पैसा हो जाता है गायब, बैंक नही लेती है जिम्मेदारी

लेडियारी। पहले लोग बैंक में पैसा जमा कर देने पर अपना पैसा सुरक्षित मान लेते थे।लेकिन अब इस डिजिटल और नेटवर्क से चलने वाले दुनिया में सुरक्षित नहीं हैं जो कि लोगो के लिए भारी समस्या बन रही है।भारी परेशानी तो अंगूठा छाप लोगो के सामने आ रही है। जिनका अब बैंक के बड़े शाखाओं में काम नही होता है।बैंक के बड़े शाखा के मैनेजर सिर्फ इतना कह देते है कि छोटा लेन देन छोटे शाखा से अंगूठा लगा कर कर लें।बेचारे गरीब और अंगूठा छाप लोग प्राइवेट दुकानदार के यहां जल कुंभी के तरह उगे हुए डिटिटल और नेटवर्क से चलने वाले और बैंक मित्र कहे जाने वाले जगह पर जा कर पैसा निकाल कर अपने कमाई का पैसा अनजाने में गवां रहे है। इस तरह से कोरांव तहसील क्षेत्र के अतिरिक्त सभी बाजारों समेत गावों में मोबाइल से नए युवा लोग पैसा का लेनदेन अतिरिक्त शुल्क लेकर कर रहे है। नए युवा लालच में पड़ कर विश्वास के साथ धोखड़ेते हुए इस तरह से मोबाइल फोन से अंगूठा स्कैनिंग कर पैसा लेनदेन के प्रचलन में बढ़ चढ़ का रुचि ले रहे हैं।अगर इसी तरह यह क्रम जारी रहा तो अंगूठा छाप लोगो का भारी नुकसान हो जायेगा।

संदिग्ध परिस्थितियों में सड़क पर पड़ा मिला युवक का शव

रत्योंरा। कोरांव थाना क्षेत्र के कोसफरा गांव में बीती रात को दो बजे के आसपास संदिग्ध परिस्थितियों में सड़क पर एक युवक का शव पड़ा मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। जानकारी के मुताबिक अरविंद कुमार सिंह पुत्र स्व मिश्रीलाल सिंह (27) निवासी भारतगंज थाना मांडा कोरांव थाना क्षेत्र के कोसफरा गांव में रामगरीब अपने नाना के घर बचपन से ही रहता था। अरविंद प्रतिदिन की तरह बीती रात को भी भोजन करने के उपरांत घर पर ही सो गया। वह रात में कब और कैसे कहां गया इस बात की परिजनों को कोई जानकारी नहीं है, किंतु रात 2 बजे के आसपास गांव के ही सड़क पर उसका शव मिलने से परिजनों में हड़कंप मच गया। ननिहाल के परिजनों ने अरविंद की हत्या कर शव सड़क पर फेंके जाने की आशंका जताते हुए कोरांव पुलिस को तहरीर दी है। पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है। देखना संदिग्ध परिस्थितियों में सड़क पर पड़े मिले युवक के शव को लेकर पुलिस अपनी तहकीकात में कब तक सफल होती है। परिजन जहां हत्या की आशंका जता रहे हैं, वहीं पुलिस हत्यारों की तह तक कब तक पहुंचेगी। हत्या है अथवा मौत किसी अन्य कारणो से हुई यह पुलिस के जांच के बाद ही स्पष्ट हो सकेगा।

करछना स्वास्थ्य मेले में गर्भवती महिलाओं की हुई गोद भराई

करछना। आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर शुक्रवार को सीएचसी करछना में स्वास्थ्य मेले का आयोजन किया गया स्वास्थ्य मेले में करछना विधायक पीयूष रंजन निषाद के द्वारा इसका उद्घाटन किया गया और इस अवसर पर उन्होंने बाल विकास एवं पुष्टहार के इंस्टॉल पर बाल विकास परियोजना अधिकारी एवं अन्य ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों के साथ 5 गर्भवती महिलाओं का गोद भराई भी की 5 गर्भवती महिलाओं में सुषमा देवी, नीलू सिंह, रंजनम देवी, संतरा देवी एवं कंचन सिंह की गोद भराई की गयी।

राहगीरों के लिए प्याऊ की व्यवस्था सुलभ कराई

करछना। माँ सेवा संस्थान रोकडी करछना परिवार के माध्यम से शुक्रवार को कौवा बाजार में राहगीरों को प्यास बुझाने के लिए घडा रखवाया जिसमें गर्मी में लोग प्यास बुझा सके, इस तपती भीषण गर्मी में राहगीरों एवं आमजन के लिए ठंडा पानी पीने के लिए जिसमें हमेशा ठंडा पानी उपलब्ध रहेगा रोड पर वृक्ष न होने से बाजार में दुकान के हफ्ते के भीतर इस प्रकार प्रकार से 10 स्थानों पर ठंडा पान पीने के लिए संस्थान के द्वारा घडा.रखवाया जाएगा लोगों ने संस्थान के कार्यो की सराहना की और आशीर्वाद भी दिया जहाँ पर बी एल साहू सर, अमरनाथ पटेल, साहिल, अंबर, आकिफ आदि लोग उपस्थित रहे।

कमोली विरभानपुर गांव में श्रीमद्भागवत कथा का भव्य प्रवचन सुन, भाव विभोर हुए श्रोता

अखंड भारत संदेश

भागवत कथा सुनाते धराचार्य जी महाराज

सोरांव। क्षेत्र के ग्राम सभा कमोली विरभानपुर गांव में श्रीमद् भागवत कथा का भव्य प्रवचन हो रहा है। कथावाचक श्री धराचार्य जी द्वारा गुरुवार को भगवान श्री कृष्ण जी की लीला और रूकमणि विवाह के प्रसंग पर श्रोता गणों को बहुत ही अच्छी जानकारी देते हुए सीन का मंचन करवाए। श्रोता श्री कृष्ण जी के बारे में सुनकर भाव विभोर हो गए।जानकारी के अनुसार कथावाचक श्री धराचार्य जी महराज अलोपीबाग बाघंबरी मठ प्रयागराज द्वारा 17 अप्रैल से 23 अप्रैल तक श्रीमद् भागवत कथा का प्रवचन सुनाया जाएगा जिसको लेकर गुरुवार को भगवान श्री कृष्ण जिनकी प्रसंग पर बहुत ही मार्मिक प्रस्तुति किए। उक्त कथा शाम 4 बजे से रात्रि 9 बजे तक प्रतिदिन कथावाचक द्वारा कथा सुनाई जाती है। श्रीमद्भागवत कथा के संयोजक कृष्णकांत ओझा व कलावती ओझा हैं। कथावाचक धराचार्य जी महाराज द्वारा श्रोताओं को बताए कि उन्होंने जन्म ही लीलाओं के साथ लिया था। इनके जैसी मनमोहक और अनुपम जीवन लीला और किसी भी देवता की नहीं। श्री विष्णु के दस अवतारो में से आँठवा अवतार श्री कृष्ण का था। उनके सभी दस अवतार (मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, गौतम बुध्द और कल्कि) में से सर्वाधिक अनुपम और अद्वितीय श्री कृष्णावतार है। तथा रूकमणि विवाह के बारे में बताए कि रुक्मिणी भगवान कृष्ण की पत्नी थी। रुक्मिणी को लक्ष्मी का अवतार भी माना जाता है। उन्होंने श्रीकृष्ण से प्रेम विवाह किया था। रुक्मिणी भगवान कृष्ण की इकलौती पत्नी और रानी हैं। द्वारका के राजकुमार कृष्ण ने उनके अनुरोध पर एक अवांछित विवाह को रोकने के लिए उनका अपहरण कर लिया और उनके साथ भाग गए। और उन्हें दुष्ट शिशुपाल से बचाया। रुक्मिणी कृष्ण की इकलौती रानी है। रुक्मिणी को भाग्य की देवी लक्ष्मी का अवतार भी माना जाता है।इस मौके पर पंडित ओम प्रकाश मिश्रा नोटरी अधिवक्ता सोरांव तहसील, पंडित सुरेंद्र नाथ ओझा,राकेश पांडे ग्राम प्रधान, मुन्ना ओझा, शिवमंगल मिश्र, तथा सूर्यकांत मिश्रा संग सैकड़ों श्रोता गण मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

15 वर्षीय किशोर की गंगा में डूबने से हुई मौत

मेजा रोड। उरुवा ब्लाक के अंतर्गत शुकु लापुर निवासी जीत लाल यादव पुत्र सचिन कुमार यादव 15 वर्ष अपने तीन साथियों के साथ कनिगड़ा गांव गंगा स्नान करने गया था उसके साथी डूब रहा था उसको बचाने के चक्कर में सचिन कुमार की डूबने से हुई मौत। गांव के ही अपने तीन साथियों के साथ गंगा स्नान करने कनिगड़ा घाट पर गया था उसमें से एक साथी नहाते समय डूबने लगा उसको बचाने के चक्कर में गहरे पानी में सचिन डूब गया जिससे उसकी हुई मौत लोगों ने देखा तो किसी तरह निकाल कर समुदाय स्वास्थ्य केंद्र रामनगर ले गए जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया ।सूचना मिलने पर जेवनिया चौकी इंचार्ज आशीष कुमार दुबे मय फोर्स मौके पर पहुंचकर शव को कब्जे में लेकर जांच में जुटे। मृतक के पिता बुम्बई में प्राइवेट नौकरी करते हैं इकलौते पुत्र की मृत्यु से घर में मचा कोहराम माता उर्मिला देवी का रो रो कर बुरा हाल।

पत्नी पर कमेंट किया तो मार डाला : कारोबारी के लापता बेटे की हत्या में चार लोगों की तलाश

अखंड भारत संदेश

20 दिन से गायब था आदर्श, परिवार में मातम, दो आरोपित गिरफ्तार, चार की चल रही तलाश

प्रयागराज। लोकनाथ बाजार के कारोबारी के लापता बेटे आदर्श केसरवानी की हत्या कर दी गई है। कत्ल के बाद उसकी लाश को मीरजापुर के ड्रमंडगंज स्थित एक पहाड़ी पर फेंक दिया गया था। गुरुवार को पुलिस ने शव को बरामद किया तो परिवार वालों ने पहचान की और रानीमंडी अतरसुइया निवासी जितेंद्र केसरवानी मिठाई का कारोबार करते हैं। उनके दो बेटों में बड़ा आदर्श था, जो खस्ता, दमालू की दुकान लगाता था। परिवार के लोगों के मुताबिक, एक अप्रैल की रात करीब साढ़े नौ बजे आदर्श अपने छोटे भाई विनायक के साथ लोकनाथ मंदिर की तरफ सामान लेने के लिए था। इसी बीच वहां एक युवक आया और आदर्श से बातचीत करते हुए अपने साथ लेकर चला गया। इसके बाद वह वापस नहीं लौटा तो खोजबीन शुरू हुई। मोबाइल भी बंद मिला। घरवालों ने कोतवाली थाने में गुमशुदगी की तहरीर दी, जिस पर पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज की। परिवार के लोगों ने दो दिन बाद अपहरण की आशंका जताते हुए मोनू को नामजद करने की बात कही, मगर पुलिस ने कुछ नहीं किया। अभियुक्तों ने पूछताछ में बताया कि एक अप्रैल की रात ही आदर्श को मोनू के घर ले जाया गया और शराब पिलाने के बाद गला दबाकर मार डाला। फिर कार में शव को ले जाकर मीरजापुर की पहाड़ी पर फेंक दिया। पुलिस का दावा है कि गिरफ्त में आए अमित व बिट्टू ने हत्या की बात कबूल करते हुए अपने साथियों की भूमिका को बताया है।

पुलिस ने दर्ज नहीं किया था अपहरण का केस

इस पूरे मामले में कोतवाली पुलिस की बड़ी लापरवाही सामने आई है। घरवालों का आरोप है कि उन्होंने आदर्श के गायब होने के बाद ही लगातार अपहरण होने की आशंका जताते हुए मोनू सारस्वत का नाम ले रहे थे, लेकिन पुलिस ने अपहरण का केस नहीं लिखा। आदर्श के मोबाइल की लोकेशन ट्रेस करने और फरार मोनू को पकड़ने में दिलचस्पी नहीं दिखाई। अगर पुलिस समय पर ऐसा करती तो शायद घटना का जल्द पता चल जाता है। उधर, पुलिस का दावा है कि सीसीटीवी फुटेज से मिले सुराग के आधार पर पहले अमित फिर बिट्टू को पकड़ा गया। कड़ाई से पूछताछ में उन्होंने शव फेंकने का स्थान बताया, जहां घरवालों को लेकर लाश बरामद की गई। स्वजनों ने हाथ में बने टैटू, माला व कपड़े से पहचान की।

दोनों के खिलाफ दर्ज हैं मुकदमे : एसपी सिटी दिनेश कुमार सिंह का कहना है कि मोनू और आदर्श कभी दोस्त हुआ करते थे, लेकिन एक साल से उनके बीच बातचीत नहीं हो रही है। दोनों के खिलाफ मारपीट के मुकदमे दर्ज हैं। फिलहाल फरार मोनू व उसके साथियों को जल्द ही दबोच लिया जाएगा।

बिलख पड़े। मामले में कोतवाली पुलिस ने मालवीय नगर मोहल्ले में रहने वाले अमित व बिट्टू को गिरफ्तार किया है। मोनू सारस्वत, शुभम खौरिहा, सुमित चौरसिया और नयन चोपड़ा अभी फरार हैं। उनकी तलाश चल रही है। कत्ल का कारण मोनू की पत्नी पर टिप्पणी करना बताया जा रहा है।

संगठन ही संपर्क परिचय का बोध कराता है : शंकर गिरी जी

प्रदेश मंत्री शंकर गिरी जी का स्वागत करते जिला अध्यक्ष गंगापार व मुख्य अतिथि का संबोधन सुनते कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी।

सहसों। भारतीय जनता पार्टी द्वारा गंगापार जिले मे जिला प्रशिक्षण वर्ग का प्रशिक्षण शुक्रवार को छत्रपति शिवाजी डिग्री कालेज सहसों में आयोजित की गई। जिसमें मुख्य अतिथि प्रदेश मंत्री शंकर गिरि जी के द्वारा भाजपा के पुरोधा डा.श्यामा प्रसाद मुखर्जी एवं पं.दीनदयाल उपाध्याय के प्रतिमा पर पुष्पांजलि व दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि का स्वागत प्रशिक्षण वर्ग की अध्यक्षता कर रहे जिलाध्यक्ष गंगापार अश्विनी कुमार द्विवेदी ने माला पहनाकर तथा अंगवस्त्र भेंट कर किया। अपने संबोधन में जिला अध्यक्ष ने कहा कि पूरे प्रदेश में यह प्रशिक्षण वर्ग चलाया जा रहा है। यहां का प्रशिक्षण वर्ग तीन दिन का सम्पूर्ण आवासीय है। संगठन का कार्यकर्ता सर्वोपरि है कार्यकताओं के बल पर आज लगातार दुसरी बार प्रचंड बहुमत से केन्द्र व प्रदेश में सरकार बनी है। भाजपा अपने कार्यकताओं के लिए समय समय पर पार्टी /संगठन के विषय में जानकारी देने व संस्कार की याद दिलाने के लिए यह प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया है। प्रशिक्षण वर्ग में उपस्थित कार्यकताओं एवं पदाधिकारियों को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि शंकर गिरि ने कहा कि दीनदयाल उपाध्याय का जो सपना था आज प्रदेश व केन्द्र की सरकारों में पूरा होता दिख रहा है। अयोध्या में भव्य राममंदिर 2022 के अन्त तक बन कर तैयार हो जायेगी । भष्टाचार मुक्त प्रदेश सरकार बनी है। राष्ट्रीय सीमाओं पर पूर्व में चल रहे विवादों को समाप्त कर सीमा सुरक्षा आत्याधुनिक रुप से सुसज्जित किया गया है। आन लाईन डिजिटल पेमेंट के माध्यम से आज संगठन में माइक्रो डोनेशन का काम चल रहा है।18 करोड़ से ज्यादा भाजपा की सदस्यता हो चुकी है। समय समय पर नया सीखने के लिए प्रशिक्षण होता रहा है। पहले की भाजपा और आज की भाजपा में बहुत बदलाव हुआ है। पहले कभी काम था आज निरन्तर कार्य करना पडता है। संगठन ही तो है जो परिचय संवाद सम्पर्क का बोध कराता है। प्रशिक्षण वर्ग का संचालन जिला महामंत्री जीतलाल त्रिपाठी ने किया। बैठक मे मुख्य रूप से एमएलसी सुरेन्द्र चौधरी, विधायक गुरु प्रसाद मौर्य, प्रेम कुमार उर्फ लल्ले सिंह, अमरनाथ यादव, विमलेश पटेल, सत्यम मिश्रा, हरिभूषण सिंह, मनोज निषाद, जिला उपाध्यक्ष अनिरुद्ध सिंह पटेल, श्याम विहारी पाण्डेय, रामपलट पटेल, सन्तोष शुक्ल , दीलीप यादव, कमलेश मिश्रा, मिडिया प्रभारी बृजेश कुमार त्रिपाठी, लक्ष्मीकान्त उपाध्याय, ईश्वर चन्द विन्द, आरती अग्रवाल सहित सैकड़ों पदाधिकारी व कार्यकर्ता सामिल रहे।

पीड़ित परिवार न्याय के लिए एसडीएम कार्यालय पर किया प्रदर्शन

महीनों से न्याय के लिए भटक रहा परिवार थाना मुख्यालय पर भी कर चुका है प्रदर्शन

अखंड भारत संदेश

न्याय के लिए प्रदर्शन करते पीड़ित

रत्योंरा। कोरांव तहसील क्षेत्र के बरौहां गांव के तिवारी पुर मजरा निवासी एक पीड़ित परिवार अपनी समस्या के समाधान को लेकर इस उमस भरी भीषण गर्मी व चिलचिलाती धूप में परिवार की महिलाओं बच्चों समेत सभी सदस्यों के साथ सुबह से ही उप जिलाधिकारी कार्यालय कोरांव पर प्रदर्शन कर समस्या के समाधान किए जाने की मांग की, किंतु उपरोक्त पीड़ित परिवार से न एसडीएम और न ही तहसीलदार व कोई भी सक्षम अधिकारी व कर्मचारी मुलाकात कर बात किए जिससे कि उनका समाधान हो सके। जिससे पीड़ित परिवार में रोष देखा गया। ज्ञातव्य हो कि राजीव लोचन तिवारी पुत्र स्वर्गीय राम गणेश तिवारी निवासी बरौहां मजरा तिवारीपुर अपने आबादी के भूमि पर बने पुश्तैनी कच्चे मकान के जगह पर पक्का मकान निर्माण कार्य करवा रहे हैं। जिस मकान की नींव आज के लगभग 6 माह पूर्व ही डाली गई थी, किंतु उस समय किसी ने विरोध नहीं किया था। अब जब दीवार उठने लगी तो बगल के ही काश्तकार विरोध कर अपनी जमीन बताकर मकान निर्माण में व्यवधान डाल रहे हैं। जिसमें न तो तहसील प्रशासन और न ही पुलिस प्रशासन कोई ठोस कार्रवाई कर रहा है। जिससे आए दिन न्याय के लिए पीड़ित परिवार दर-दर भटक रहा है। शुक्रवार को न्याय की आस लेकर परिवार के साथ राजीव लोचन तिवारी तहसील मुख्यालय पंहुचकर एसडीएम कार्यालय के सामने धरने पर बैठ गए। धरने में परिवार की पुष्पा देवी, शन्नो देवी, उमा देवी, अनीता देवी, संगीता देवी, अनीता देवी, समेत बच्चों में सत्यम तिवारी, प्रांशु तिवारी, लवी, आंसी, प्रांसी, ओम, राज, आयुष न्याय की आस में पूरे दिन बैठे रहे, किंतु तहसील का कोई भी अधिकारी कर्मचारी इनकी समस्या को सुनने तक नहीं पहुंच सका। जिससे पीड़ित परिवार में असंतोष व्याप्त है। बृहस्पतिवार को यह पीड़ित परिवार थाना मुख्यालय कोरांव पर भी पूरे दिन न्याय की दरकार को लेकर बैठा रहा। देर रात को प्रभारी निरीक्षक ने खुद स्थल पर जाकर निरीक्षण किया, तथा सुबह लेखपाल और पुलिसकर्मियों ने निर्माण कार्य को रोकवा दिया। जिससे एसडीएम कार्यालय पर प्रदर्शन के लिए परिवार बाध्य हो गया।

पत्रकारों के पहुंचने पर हरकत में आए तहसीलदार ने कानूनगो को लगाई फटकार

शुक्रवार को तहसील मुख्यालय कोरांव पर जैसे ही पीड़ित परिवार के धरने पर बैठने की खबर पत्रकारों के बीच आम हुई। वैसे ही कुछ पत्रकार कोरांव तहसील मुख्यालय पहुंच गए और पीड़ित परिवार की समस्या पूछने व जानने लगे। वैसे ही तहसीलदार डॉ विशाल कुमार शर्मा भी हरकत में आ गए। उन्होंने फौरन कानूनगो पंकज उपाध्याय का फोन लगाकर फटकार लगाते हुए कहा कि आबादी की भूमि पर लेखपाल किसके निर्देश पर निर्माण कार्य रुकवाने पहुंचा और निर्माण कार्य क्यों रुकवाया, आदि का स्पष्टीकरण मांगा। उन्होंने लेखपाल अतुल तिवारी का एक दिन का वेतन भी काटने की बात कही है। देर शाम तहसीलदार ने पीड़ित परिवार को आश्वस्त किया कि निश्चित तौर पर न्याय दिलाया जाएगा। जिसके बाद परिवार देर शाम तक अपने घर के लिए रवाना हो गया। देखना है पीड़ित परिवार को न्याय दिलाने में तहसील प्रशासन व पुलिस प्रशासन अपनी क्या भूमिका निभाता है। पीड़ित परिवार को न्याय के लिए कब तक भटकना पड़ेगा। आदि सब कुछ अभी तो समय के गर्भ में ही है।

अल्लापुर में दिनदहाड़े युवती का अपहरण, पुलिस के हाथ पांव फूले

प्रयागराज। अल्लापुर में बृहस्पतिवार को दिनदहाड़े एक युवती का अपहरण कर लिया गया। घर वालों ने इसे जबरन धर्मांतरण का मामला बताते हुए रिपोर्ट दर्ज कराई। पुलिस ने कुछ ही घंटों में युवती को बरामद कर लिया। आरोपी मो. रियाज गिरफ्तार कर लिया गया। उसे आज जेल भेज दिया गया। हाशिमपुर की रहने वाली एक युवती बृहस्पतिवार को दिन में अपनी बुआ के साथ पैदल ही कहीं जा रही थी। अल्लापुर पुलिस चौकी के पास दिन दहाड़े उसका अपहरण कर लिया गया। बुआ ने तुरंत फोन पर घर वालों को बताया। घर वालों ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि म्योराबाद के रहने वाले मो. रियाज ने अपहरण किया है।उन्हें डर है कि वह युवती का जबरन धर्मांतरण कर उससे निकाह कर लेगा। घर वालों की रिपोर्ट पर पुलिस एक्टिव हुई। रात में युवती को बरामद कर रियाज को गिरफ्तार कर लिया गया। युवती पक्ष के अधिवक्ता स्वयंजीत शर्मा ने बताया कि रियाज ने कुछ महीन पहले ही युवती का अपहरण कर लिया था। उस समय भी पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर जेल भेजा था। छह महीने जेल काटने के बाद वह बाहर आया और उसने फिर यह हरकत की। इस पूरे मामले को उच्चाधिकारियों को अवगत कराया जा रहा है।

कल से भाजपा का केन्द्रीय प्रशिक्षण विभाग यमुनापार के जिला पदाधिकारीयों एवं जनप्रतिनिधियों को पढ़ाएंगे पाठ

तीन दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यशाला गौहनियां में 24 से 26 अप्रैल तक होगे आयोजित

जसरा। भारतीय जनता पार्टी केंद्रीय प्रशिक्षण विभाग द्वारा प्रयागराज यमुनापार जिले का तीन दिवसीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन 24 अप्रैल 2022 से 26 अप्रैल 2022 तक जे.पी.एस. कालेज गौहनियां प्रयागराज में शुरू होगी। यह जानकारी भाजपा जिला मीडिया प्रभारी दिलीप कुमार चतुर्वेदी ने देते हुए बताया कि तीन दिनों तक चलने वाले इस आवासीय प्रशिक्षण कार्यशाला की तैयारियां जिलाध्यक्ष यमुनापार विभव नाथ भारती द्वारा किया जा रहा है। जिलाध्यक्ष ने जिला प्रशिक्षण प्रमुख की जिम्मेदारी जिला उपाध्यक्ष त्रिवेणी प्रसाद पांडेय को सौंपी है। वही वर्ग प्रमुख डॉ.विजय शंकर शुक्ला, कार्यक्रम प्रमुख राजेश शुक्ला,सह-कार्यक्रम प्रमुख अजीत प्रताप सिंह,नियंत्रक विक्रमादित्य मौर्य,सह-नियत्रकं पुष्पराज सिंह, व्यवस्था प्रमुख शोभनारायण द्विवेदी,सह-व्यवस्था प्रमुख की जिम्मेदारी राजेश्वरी तिवारी को सौंपी गई है। प्रशिक्षण को लेकर कार्यकताओं में उत्साह है। दिलीप कुमार चतुर्वेदी ने आगे बताया कि जिला प्रशिक्षण वर्ग की अपेक्षित श्रेणी में प्रदेश व क्षेत्रीय पदाधिकारी भाजपा (जिले में निवास करने वाले), जिला पदाधिकारी भाजपा,मोर्चा के जिला अध्यक्ष/महामंत्री व जिले में निवास करने वाले मोर्चे के क्षेत्र व प्रदेश पदाधिकारी,प्रदेश, क्षेत्र एवं जिले के प्रकोष्ठ/विभाग के संयोजक, सह संयोजक,महापौर,जिला पंचायत अध्यक्ष, सांसद /विधायक,ब्लाक प्रमुख, नगर पालिका एवं नगर पंचायत अध्यक्ष ही अपेक्षित रहेगे। जिसमें प्रदेश व राष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षित नेता कार्यकताओं को भाजपा का इतिहास विकास, हमारा विचार परिवार, 2014 के बाद आया युगांतरकारी परिवर्तन,बदली हुई परिस्थितियों में भाजपा का दायित्व,हमारी विचारधारा,अपनी कार्यपद्धति और संगठन संरचना मे हमारी भूमिका, पिछले छः वर्षों में अंत्योदई पहल, आत्मनिर्भर भारत,भारत का बढ़ता सुरक्षा सामर्थ्य, मीडिया के व्यवहार एवं उपयोग,शोशल मीडिया की समझ, व्यक्तित्व विकास, केंद्र सरकार की विकास योजनाएं एवं हमारा प्रदेश, प्रदेश मे भाजपा सरकार की उपलब्धियां व समापन सत्र में भारत वैश्विक परिदृश्य जैसे विषयों का पाठ पढ़ाएंगे। कार्यशाला 24 अप्रैल को सुबह 10 बजे पंजियन के साथ 26 अप्रैल को मध्यान्ह 01:30 पर सम्बोधन के साथ कार्यशाला सम्पन्न होगी।

विश्व धरती दिवस : स्वच्छता अभियान और नुक्कड़ नाटक के माध्यम से चलाया जागरूकता अभियान

अखंड भारत संदेश

स्वच्छता का संदेश देते नेहरू युवा केंद्र के डीपीओ व स्पेयरहेड

प्रयागराज। शुक्रवार को गंगा टास्क फोर्स के तत्वावधान में गंगा विचार मंच प्रयागराज, पुलिस प्रशासन, राष्ट्रीय कैडेट कोर, नेहरू युवा केंद्र प्रयागराज, भारतीय वन्यजीव संस्थान तथा स्कूल के छात्र छात्राओं ने संगम तट से लेकर वीआईपी घाट तथा कि ला घाट तक कचरा, पालीथीन, पुराने कपड़े आदि को निकाल कर नगर निगम प्रयागराज की मदद से चार बड़ी गाड़ी से भरकर उसको निस्तारित कराया गया। इसी क्रम में नेहरू युवा केंद्र प्रयागराज के युवा स्पेयरहेड लीडर्स द्वारा पृथ्वी दिवस के उपलक्ष में संगम घाट पर बेहतरीन एवं प्रभावशाली नुक्कड़ नाटक प्रस्तुति कर पर्यावरण बचाने का संदेश देते हुए सभी को जागरूक किया।एडीजी प्रेम प्रकाश ने घाटो को स्वच्छ बनाए रखने के लिए प्रेरित किया । जीटीएफ कमांडर कर्नल वेदव्रत वैध ने बताया कि पृथ्वी दिवस पर ये अभियान चलाने का उद्देश्य यही है कि पर्यावरण की सुरक्षा को लेकर लोगों में जागरूकता आए ।अनामिका चौधरी प्रांत संयोजक गंगा विचार मंच, लेफ्टीनेंट कर्नल विनीत सेठ,नेहरू युवा केंद्र प्रयागराज की नमामि गंगे जिला परियोजना अधिकारी एषा सिंह, भारतीय वन्यजीव संस्थान के फील्ड इंचार्ज के पी उपाध्याय, कैप्टन सुनील निषाद, अवधेश निषाद महानगर संयोजक उपस्थित रहे। कार्यक्रम में स्पेयरहेड लीडर्स मनु, खुशी, शिफा, यशी रूपशंकर , अभिनव,अखिल, सुप्रीत, निर्मल कांत , कोमल ,नीलम , अंकित ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया ।गंगा पहरी चंद्र निषाद,ज्ञानचंद्र निषाद,,खुशी शर्मा ,खूबी शर्मा प्रियांशु निषाद,सूरजनिषाद,पूनम ,कन्या ,सुनैना,अर्चना,अभिषेक,राहुल उपस्थित रहे।

501 पौधों का रोपड़ कर जीवन ज्योति पब्लिक स्कूल ने मनाया विश्व पृथ्वी दिवस

करछना। जीवन ज्योति पब्लिक स्कूल घोडेडीह भीरपुर में शुक्रवार को विश्व पृथ्वी दिवस पर 501 पौधों का वृक्षारोपड़ निदेशक डॉ आर पी पाण्डेय, श्रीमती कुसुम पांडेय, डॉ के के शुक्ला, प्रधानाचार्या श्रीमती अंकिता मिश्रा,शिक्षक एवं शिक्षिकाओं व विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं ने बड़े उत्साह के साथ किया।कार्यक्रम का सुभारम्भ प्रातः वन्दना के साथ किया गया।ततपश्चात प्रधानाचार्या ने शिक्षकगण व बच्चों को पृथ्वी को सुरछित रखने की शपथ दिलाई। तदोपरांत प्राचार्या श्रीमती अंकिता मिश्रा, श्रीमती विनीता सिंह व श्री रवि भूषण राय का वर्ल्ड अर्थ डे पर सम्बोधन हुआ। ततपश्चात कक्षा नर्सरी से 5 वीं तक के बच्चों ने अपने आपको पृथ्वी,वृक्ष का मॉडल बनकर पृथ्वी बचाने का संदेश दिया। वहीं कक्षा 6 से 12वीं तक के बच्चों ने चलित मॉडल बनाकर अर्थ सेव का संदेश दिया।इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण का केंद्र चलित मॉडल व नर्सरी के बच्चों का स्वयं का मॉडल बनना रहा। कार्यक्रम का समापन श्रीमती कुसुम पांडेय (अध्यक्ष वुमेन वेल्फ़ेयर प्रयागराज)द्वारा किया गया इस मौके पर स्कूल के सभी छात्र एवं छात्राएँ व शिक्षक उपस्थित रहे।

कैसे सुधरेगी पृथ्वी की सेहत, वृक्ष लगाकर भूले जिम्मेदार

हनुमानगंज। शासन के आदेश पर पिछले वर्ष बहादुरपुर विकासखंड में फल व छाया देने वाले लाखों पेड़ लगवाएं व बांटे गए थे। ग्रामीणों को जागरूक करने के लिए दुवार्सा आश्रम पर वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया था जिसमें मुख्य अतिथि के रुप में मुख्य विकास अधिकारी प्रयागराज सीपू गिरी ने वृक्ष लगाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया साथ ही उपस्थित ग्रामीणों में पौधे वितरित कर पृथ्वी को हरा भरा बनाने के लिए जागरूक किया था। लेकिन देख रेख न होने के कारण लगाए गए पोधो में कुछ सूख गए कुछ टूट गए। यह हाल बहादुरपुर विकासखंड का ही नहीं बल्कि शहर से लेकर ग्रामीण अंचल तक का है। लोग पेड़ लगाने के बाद देखरेख में संजीदगी नहीं दिखाते हैं। मामले में मुख्य विकास अधिकारी प्रयागराज का कहना है कि जो पौधे सूख गए हैं उनके जगह पर दूसरे पौधे लगाए जाएंगे। **पौधों को बचाने के लिए करेगे पहल :** खंड विकास अधिकारी बहादुरपुर मनोज कुमार सिंह ने बताया कि इस बार भी शासन की पहल पर बहादुरपुर विकासखंड में एक लाख के ऊपर पौधे लगाये जायेगे। उनके संरक्षण के लिए ग्रामीणों को जागरूक किया जाएगा।

तीन अलग अलग गांवों में मार पीट कई घायल मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। तीन अलग अलग गांवों में जमीनी विवाद को लेकर मार पीट के दौरान कई को चोटें आयी है। पुलिस ने एक दर्जन के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। मिली जानकारी के अनुसार मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम उसरापुर नौगिरा निवासनीय कलनही देवी पत्नी सुरेश कुमार का आरोप है कि खेत के विवाद को लेकर उसके पुत्र सूरज और अनिल को मारा पीटा गया और जाति सूचक गालियां दी गई। कलनही देवी ने मऊआइमा थाने में समर बहादुर पटेल ,उदय सिंह, विजय कुमार के खिलाफ मार पीट एससी एसटी एक्ट में मुकदमा दर्ज करा दी है। उधर ग्राम पूरनपुर खरगापुर होलागढ़ निषभ कुमार मिश्रा पुत्र अखिलेश कुमार का आरोप है कि वह मऊआइमा जरूरी काम से आया था। घर जाते समय मऊआइमा के ग्राम पुरखीपुर निवासी सुशांत पटेल ,राजन पटेल, प्रियांशु विश्वकर्मा मारे पीटे तथा जान से मारने की धमकी भी दिए। उधर ग्राम बालाडीह अहिरान निवासी सन्तोष कुमार पुत्र राम कुमार का आरोप है कि परीवारिक विवाद को लेकर उसे मारा पीटा गया। पुलिस ने रामदुलारे ,हरिनाथ, सुषमा के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है। उधर राम दुलारे ने घर में घुस कर मार पीट करने और तोड फोड करने का आरोप लगाते हुए। संतोष कुमार, रमाशंकर के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

स्वस्थ जीवन शैली एक अच्छे जीवन की नींव : गंगाप्रसाद मिश्र

अखंड भारत संदेश

ब्लाक स्तरीय स्वास्थ्य मेले में स्वास्थ्य के बारे में दी गई जानकारियां, सुगर बीपी अन्य जांच के साथ मरीजों को दी गई दवाएंए गर्मी में सावधानी बरतने की दी गई सलाह

सीएचसी मेजा में आयोजित स्वास्थ्य मेले का शुभारम्भ करते ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि गंगा प्रसाद मिश्र

मेजा। स्वस्थ जीवन शैली एक अच्छे जीवन की नींव होती है। ऐसे जीवनशैली को हासिल करने में ज्यादा मेहनत नहीं लगती लेकिन कई लोग व्यावसायिक प्रतिबद्धताओंए दृढ़ संकल्प की कमी और व्यक्तिगत मुद्दों जैसे कई कारणों से इसका पालन नहीं कर पाते हैं। आजकल एक स्वस्थ जीवन शैली का पालन करने के लिए बहुत दृढ़ संकल्प लेना पड़ता है। पूरे दिन के दौरान इतने सारे कार्यों को एक साथ पूरा करते हुए हमारा स्वास्थ्य का संतुलन अक्सर बिगाड़ जाता है।उक्त बातें ब्लॉक प्रतिनिधि मेजा गंगा प्रसाद मिश्र ने शुक्रवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मेजा में आयोजित बृहद स्वास्थ्य मेले के दौरान बतौर मुख्य अतिथि कहीं।उन्होंने कहा कि स्वस्थ जीवन शैली का पालन करने और उसे किस तरीके से हासिल किया जा सकता है।इसे जानने और समझने के उद्देश्य से प्रदेश की योगी सरकार ने ब्लाक स्तरीय स्वास्थ्य मेले के आयोजन कर लोगों को स्वास्थ्य संबंधित जानकारियां दी जा रही है और उसका इलाज भी किया जा रहा है।मेले का शुभारंभ ब्लाक प्रतिनिधि मेजा गंगाप्रसाद मिश्रएपूर्व ब्लाक प्रमुख मेजा मुन्नन शुक्ल के साथ सीएचसी अधीक्षक डाण ओमप्रकाश ने किया। आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम के उपलक्ष्य में आयोजित किए गए स्वास्थ्य मेले में विभिन्न विभागों द्वारा स्टाल लगाए गए और मेले में आने वाले लोगों को योजनाओं की जानकारी देने के साथ.साथ उनका लाभ उठाने की अपील की गई।प्रमुख प्रतिनिधि ने भीषण गर्मी में सफल आयोजन के लिए सीएचसी प्रबंधन की सराहना की। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार जन.जन को स्वस्थ रखने की दृष्टि से इस तरह के मेलों का आयोजन पूरे प्रदेश में करवा रही है।श्री मिश्र ने कहा कि बीते पांच साल के दौरान उत्तर प्रदेश की स्वास्थ्य सुविधाओं में इजाफा हुआ है। कोरोना काल में प्रदेश सरकार ने स्वास्थ्य विभाग को हर तरह से मजबूत किया। कोरोना काल में बीमार होनेवाले लोगों को चिकित्सा सुविधा मुहैया करवाई। लोगों को राशन उपलब्ध करवाया। इसके बाद लोगों को निशुल्क वैक्सीन लगवाई गई।उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और योगी आदित्यनाथ के द्वारा स्वास्थ्य के साथ.साथ अन्य क्षेत्रों में किए जा रहे कार्यों का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा 102 और 108 एंबुलेंस की सुविधा दी जा रही है। गर्भवतीए धात्री महिलाओं के टीकाकरणए खान.पान पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।लोगों को टेली मेडिसिन की सुविधा दी जा रही है।मुख्य अतिथि ने मुन्नन शुक्ल और अधीक्षक तथा स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी अंजू राय के साथ विभिन्न स्टालों का भ्रमण कर जानकारी ली।पूर्व प्रमुख ने मेले में आए हुए सभी लोगों से कोविड प्रोटोकाल का पालन करने की अपील की।ब्लाक स्तरीय स्वास्थ्य मेले में उमड़ी भारी भीड़ ने बुखारए पेट दर्दए सुगरए ब्लड प्रेशरए हड्डी रोग व अन्य बीमारियों से संबंधित डेढ़ हजार से अधिक मरीजों ने इस आयोजन का लाभ उठाया। सीएचसी अधीक्षक डाण ओमप्रकाश के मुताबिक स्वास्थ्य मेले में आने वाले सभी लोगों की जांच की गई और आवश्यकता के अनुरूप उन्हे दवाएं और सलाह भी दी गईं। सीएचसी अधीक्षक ने कहा कि किसी भी तरह की समस्या होने पर सीधे सरकारी अस्पताल में आकर इलाज करवाएं।मेले में इलाज के निमित्त आने वाले लोगों को सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं की भी जानकारी मंच के माध्यम से दी गई।कार्यक्रम का सफल संचालन प्रधान संघ जिला प्रभारी अनिल शुक्ल ने किया। अधीक्षक ने बताया कि स्वास्थ्य मेले में आने वाली भीड़ को संभालने के लिए आधा दर्जन से अधिक डाक्टरों की टीम लगाई गई थीए जिसमें डॉक्टर समीम अख्तरए डाक्टर बबलू सोनकरए डॉक्टर शाश्वत सिंहएडाक्टर अजीत सिंहए डॉक्टर सरला सिंहए डॉक्टर रेशमा सरनए खून जांच के लिए नीरज कुमार द्विवेदीए दीपू त्रिपाठी और रामकुमार पाल तथा दवा वितरण के लिए पंकज सिंहए सुनील सिंह और कृष्णा प्रसाद ने मोर्चा संभाला। स्वास्थ्य मेले में सीडीपीओ मेजा श्रीमती मीरा पटेल एव सहयोगी कार्यकत्रियो द्वारा लगाई गयी स्टाल की अगुन्तको ने खूब प्रशंसा किया इस मौके पर प्रमुख रूप से ब्लॉक से एडीओ ;कोद्ध विष्णु प्रभाकर मिश्रए एडीओ ;समाज कल्याणद्ध कमलेश मिश्राए ग्राम सचिव राजेश त्रिपाठीए शांति व्यवस्था के लिए थानाध्यक्ष मेजा के अलावा शिक्षा विभागए बाल विकास परियोजनाए पंचायत विभाग के अलावा विभिन्न विभागों के अधिकारीए कर्मचारी मौजूद रहे।

सूचना

भवंस मेहता स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भरवारी कौशांबी में स्ववित्तपोषित योजनाअंतर्गत निम्नलिखित पाठ्यक्रम हेतु प्रवक्ताओं की आवश्यकता है । प्रो. राजेंद्र सिंह (रज्जू भैया) विश्वविद्यालय , प्रयागराज की परीनियमावली, यूजीसी एवं शासनादेश के अनुरूप निर्धारित योग्यता रखने वाले इच्छुक अभ्यर्थी महाविद्यालय कार्यालय में स्वप्रमाणित आवश्यक शैक्षिक अभिलेखों एवं बायोडाटा सहित आवेदन महाविद्यालय कार्यालय को उपलब्ध करा सकते हैं अथवा महाविद्यालय की ईमेल vsmehtacollegeb@gmail.com पर ईमेल कर सकते हैं। अनुभवी अभ्यर्थियों को वरीयता प्रदान की जाएगी ।

एम.एस.सी
1.(वनस्पति विज्ञान)
2.(भौतिक विज्ञान)

एम.ए
1.(अंग्रेजी)
2.(हिंदी)
3. (समाजशास्त्र)

प्राचार्य
भवंस मेहता महाविद्यालय
भरवारी - कौशांबी।

गणित, रसायन विज्ञान व अंग्रेजी में अच्छे अंक पाने के शिक्षाविदों ने दिये टिप्स

शिक्षाविद सीबीएसई के छात्रों का बढ़ा रहे हैं मनोबल

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सीबीएसई परीक्षा शुरू होने में केवल तीन दिन बचे हैं, इस बीच सीबीएसई के परीक्षार्थियों का मनोबल बढ़ाने एवं धैर्य व संयम से परीक्षा देने के लिये इंटर, अंग्रेजी, गणित व रसायन पीजीटी शिक्षकों ने पहल की है।

शहर के प्रतिष्ठित सीबीएसई स्कूल न्यू एंजिल्स के शिक्षक पीजीटी गणित रवि सिंह ने कहा कि गणित में अधिक अंक पाने के लिये एनसीआरटी, आरएस अग्रवाल व आरडी शर्मा को आधार बनाएं। किसी भी प्रश्न को हल करने से पहले उससे सम्बन्धित सूत्रों को पहले लिखकर अभ्यास करें, फिर प्रश्नों को हल करें। स्टाप वाच में टाइम सेट करके प्रश्नों को दो घंटे में ही सीबीएसई के सैम्पल पेपर को हल करने का प्रयास करें, तभी आपका पेपर का कोई अंश छूटेगा नहीं। बार-बार लिखकर किये गये प्रयास से ही गणित में अच्छे अंक मिल सकते हैं।

वि सिंह पीजीटी गणित, अभिषेक सिंह पीजीटी रसायन, सुनील कुमार विश्वकर्मा पीजीटी गणित।

इसी स्कूल के रसायन विज्ञान के पीजीटी शिक्षक अभिषेक सिंह कहते हैं कि रसायन विज्ञान में अच्छे अंक हासिल करने के लिये सबसे पहले सभी यूनिट को सरल से कठिन के क्रम में लगाएं और उसी क्रम में हल करें। सभी डायग्राम को समझने एवं बनाने का प्रयास करें। कठिन कानसेप्ट जैसे मैटलर्जी, पालीमर्स, पी ब्लाक आदि को याद करने के लिये फ्लो चाट्र्स और सैम्पल पेपर साल्व करें। फिजिकल कमेस्ट्री में साल्युशंस, इलेक्ट्रो कमेस्ट्री और केमिकल कायनेटिक जैसे चैप्टर्स के लिये न्यूमेरिकल के साथ थ्योरिटिकल कान्सेप्ट की भी तैयारी करें।

इसी स्कूल के अंग्रजी के पीजीटी शिक्षक सुनील कुमार विश्वकर्मा ने कहा कि अंग्रेजी विषय में अधिक नम्बर पाने के लिये छात्र-छात्राओं को राइटिंग स्किल पर विशेष ध्यान देना चाहिये। महत्वपूर्ण लाइन अथवा कोटेशन को अंडरलाइन अवश्य करना चाहिये। प्रश्न पत्र में सरल प्रश्नों को पहले करें। साफ शब्दों में सीधा और सटीक उत्तर देना चाहिये। घुमा फिराकर उत्तर देने से नम्बर कम मिलते हैं।

श्रद्धा के साथ मना श्री गुरुतेग बहादुर का 400वां प्रकाश पर्व

सबद कीर्तन कर प्रसाद का हुआ वितरण

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। श्री गुरुतेग बहादुर जी की 400वें प्रकाश पर्व पर गुरुद्वारा नानकशाही बाबागंज में सिक्खों के नौवे गुरु हिन्द की चादर, तिलक जनेऊ व मानवता के रखवाले के प्रकाश पर्व पर सुबह श्री अखंड पाठ साहिब का समापन हुआ, जिसमें गुरुघर के हजूरी रागी भाई विपिनप्रीत सिंह ने अपने जत्थे के साथ सबद कीर्तन गायन किया। दस बजे अरदास उपरांत प्रशाद वितरण हुआ।

बीती रात एक विशाल कीर्तन समागम का आयोजन किया गया जिसमें 10 बजे से लखनऊ से पधारे भाई प्रीतम सिंह ने अपने जत्थे के साथ सबद कीर्तन किया व गुरु इतिहास बताया। इस अवसर पर सदर के विधायक राजेन्द्र कुमार मौर्य व पूर्व विधायक हरिप्रताप सिंह ने अपने साथियों के साथ गुरुद्वारा साहिब पहुँच कर माथा टेका व गुरु महाराज का आशीर्वाद लिया। बाहर बजे अरदास उपरांत प्रसाद वितरण हुआ व सभी संगतों ने एक पांत में बैठ कर लंगर छका। अंत मे सरदार मंजीत सिंह गोंबिन्द ने सभी संगतों का धन्यवाद किया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से सरदार मंजीत सिंह छाबड़ा, करमजीत सिंह, कुलदीप सिंह, पृथ्वी पाल सिंह, जसबीर सिंह, कुलजीत सिंह, आत्मजीत सिंह, जगमीत सिंह आदि रहे।

नानकशाही गुरुद्वारा में सबद कीर्तन करते हजूरी रागी भाई।

आश्रय गृह सह प्रशिक्षण केन्द्र के स्थापना के लिये 30 जून तक करें आवेदन

०प्रतापगढ़। जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी राम प्रकाश सिंह ने बताया है कि जनपद में मानसिक मंदित तथा मानसिक रूप से रूग्ण निराश्रित दिव्यांगजन हेतु आश्रय गृह सह प्रशिक्षण केन्द्रों के संचालन हेतु स्वैच्छिक संगठनों को सहायता प्रदान किये जाने की व्यवस्था प्रदेश सरकार द्वारा की गयी है। उन्होने बताया है कि निःशक्त व्यक्ति (सामान्य अवसर अधिकारों का संरक्षण और पूर्ण भागीदारी) अधिनियम 1995 एवं दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम-2016 के अन्तर्गत पंजीकृत प्रदेश के स्वैच्छिक संगठन जो मानसिक मंदिता के क्षेत्र में अनुभव तथा योजना हेतु पात्रता रखते हो दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग उ0प्र0 की वेबसाइट से प्रश्नगत योजना से सम्बन्धित दिशा निर्देश व आवेदन पत्र का प्रारूप प्राप्त कर सकते है। इच्छुक स्वैच्छिक संस्थायें मानसिक मंदित तथा मानसिक रूप से रूग्ण निराश्रित दिव्यांगजन हेतु आश्रय गृह सह प्रशिक्षण केन्द्रों के स्थापना/संचालन हेतु सहायता योजनान्तर्गत वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिये 03 प्रतियों में अनुदान प्रस्ताव विलम्बतम 30 जून 2022 तक जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण कार्यालय में जमा कर सकते है।

कलश यात्रा मे शिव आराधना के गूंजे स्वर, कथा ज्ञान यज्ञ का हुआ शुभारंभ

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। क्षेत्र के पूरे बनवारी गांव मे हो रही श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ के तहत शुक्रवार को भव्य कलश यात्रा निकाली गयी। गांव मे स्थित भगवान शिव के मंदिर से निकली भव्य कलश यात्रा बाबा घुइसरनाथ धाम तक पहुंची। कलश यात्रा मे शामिल श्रद्धालु शिव भजन के बीच अबीर व गुलाल से भक्तिमय माहौल मे देखे गये। कलश यात्रा की अगुवाई यज्ञाचार्य आचार्य सुरेन्द्र कुमार शुक्ल जी महराज ने किया। कलश यात्रा का संयोजन शांती देवी एवं समाजसेवी हरिश्चंद्र ओझा ने किया। वहीं कथाव्यास आचार्य संजय कृष्ण महराज जी ने कहा कि श्रीमदभागवत कथा के अनुष्ठान से जीवन मे सुख और शांति का अनुभव होता है। कलश यात्रा मे अरूण कुमार ओझा, कालिका प्रसाद ओझा, दयाशंकर ओझा, कृपाशंकर ओझा, अजय कुमार, सुशील, रामकृष्ण ओझा, लक्ष्मीकांत मिश्र, वशिष्ठ नारायण शुक्ल, रमाकांत मिश्र आदि रहे।

दर्जन भर से अधिक लोगों के खिलाफ मारपीट व दलित उत्पीड़न का केस

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। एसपी की फटकार पर उदयपुर पुलिस ने दर्जन भर लोगों के खिलाफ मारपीट व दलित उत्पीड़न का मुकदमा दर्ज किया है। उदयपुर थाना क्षेत्र के मंगापुर निवासी शिव प्रसाद सरोज पुत्र दूधनाथ सरोज ने एसपी सतपाल अंतिल को भेजे गये शिकायती प्रार्थना पत्र मे आरोप लगाया है कि वर्ष 2005 मे उसने खानीपुर निवासी सुरेंद्र सिंह पुत्र तालुकदार सिंह की भूमिधरी जमीन का बैनामा लिया था। लेकिन आरोपी ने उसी जमीन को बाद मे पूरे बक्शी निवासी अमित सिंह पुत्र नंदलाल सिंह को विक्रय कर दिया। पीड़ित का आरोप है कि बीते पन्द्रह मार्च की रात करीब नौ बजे बक्शी निवासी अमित सिंह व सुरेन्द्र सिंह तथा सुर्जीत सिंह आठ-दस अज्ञात लोगों के साथ उसकी जमीन पर कब्जा जमाने लगे। सूचना पर पीड़ित वहां पहुंचा और विरोध करने लगा। इस पर आरोपियों ने जातिसूचक शब्दों का प्रयोग करते हुए पीड़ित को मारापीटा व जान से मारने की धमकी दी। पीड़ित ने मामले की तहरीर पुलिस को दी लेकिन जांच के नाम पर पुलिस हीलाहवाली करती रही। इससे परेशान पीड़ित ने एसपी से न्याय की गुहार लगायी है। एसपी की फटकार पर पुलिस ने गुरूवार की रात सुरेंद्र सिंह समेत तीन नामजद व दस अज्ञात के खिलाफ मारपीट, धोखाधडी व दलित उत्पीड़न का मुकदमा दर्ज किया है।

लम्बित आवेदनों का सत्यापन 27 तक करें अग्रसारित

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिला समाज कल्याण अधिकारी राजीव कुमार ने बताया है कि शैक्षिक सत्र वर्ष 2021-22 में अनुसूचित जाति दशमोत्तर छात्रवृत्ति योजनान्तर्गत (कक्षा 11-12) एवं अन्य दशमोत्तर कक्षाओं से सम्बन्धित छात्र/छात्राओं के लम्बित आवेदनों के अग्रसारण हेतु समय सारिणी जारी की गई है। उन्होने बताया है कि शिक्षण संस्था स्तर पर गत वर्ष में छात्र/छात्रा के अग्रसारण हेतु लम्बित आनलाईन आवेदन को प्राप्त करने के उपरान्त सत्यापित या निरस्त या अग्रसारित 27 अप्रैल 2022 तक करें। जिला विद्यालय निरीक्षक (कक्षा 11-12 हेतु) एवं सम्बन्धित विश्वविद्यालय एवं एफिलियेटिंग एजेन्सी द्वारा संस्था की मान्यता पाठ्यक्रम का वर्ष एवं अध्ययनरत वर्गवार वास्तविक छात्र संख्या की प्रमाणिकता को डिजिटल हस्ताक्षर से 10 मई 2022 तक आनलाइन सत्यापित करें, अपात्रा छात्रों पाठ्यक्रमों संस्थाओं को ब्लाक करें।

निःशुल्क खाद्यान्न वितरण की तिथि 24 अप्रैल तक बढ़ाई गई

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिला पूर्ति अधिकारी ने बताया है कि माह अप्रैल, 2022 के द्वितीय वितरण चक्र में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 के अन्तर्गत अन्त्योदय व पात्र गृहस्थी कार्डधारकों को 12 अप्रैल से 20 अप्रैल तक निःशुल्क खाद्यान्न का वितरण ई-पॉस मशींन के माध्यम से उचित दर विक्रेताओं द्वारा किया गया। इस अवधि में अन्त्योदय कार्डधारकों को प्रतिकार्ड 20 किग्रा0 गेहूँ व 15 किग्रा0 चावल एवं पात्र गृहस्थी कार्डधारक को प्रति यूनिट 03 किग्रा0 गेहूँ व 02 किग्रा0 चावल निःशुल्क वितरित किया गया। उन्होने बताया है कि खाद्यायुक्त द्वारा वितरण अवधि विस्तारित करते हुए अन्तिम तिथि 24 अप्रैल निर्धारित की गयी है। आधार प्रमाणीकरण के माध्यम से खाद्यान्न प्राप्त न होने की स्थिति में कार्डधारक मोबाइल ओ0टी0पी0 के माध्यम से 24 अप्रैल 2022 को भी खाद्यान्न प्राप्त कर सकते हैं।

पति को विधायक बनाने का सपना देखने वाली पत्नी अब भेजना चाह रही है जेल

पति, सास व ससुर पर हत्या का प्रयास व दहेज उत्पीड़न का दर्ज हुआ मुकदमा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। आखिर क्या हुआ मामला कि अचानक सुनैना व सौरभ के प्यार के बीच लकीर खड़ी हो गई।दो माह पूर्व पति को विधायक बनाने का सपना देखने वाली पत्नी अब उसी पर मुकदमा करा कर जेल भेजने की जिद की दीवार पर खड़ी हो गई है।

लालगंज कोतवाली क्षेत्र के बहुँचरा निवासी संजय सिहं के बेटे सौरभ की शादी इटावा जिले के चकर नगर थाना क्षेत्र के पालीघार निवासी नरेन्द्र सिंह चैहान की बेटी सुनैना से 2017 में विवाह हुआ था।लोगों कि माने तो सुनैना व सौरभ का प्रेम विवाह हुआ था। फरवरी में हुए विधान सभा चुनाव में विश्वनाथगंज विधान सभा से सपा ने संजय पाण्डेय का टिकट काट कर सौरभ सिंह को दिया था, जिसकी वजह सुनैना ही थी, क्योंकि मुलायम परिवार से सुनैना के पिता के बीच अच्छे रिश्ते है। चुनाव में सुनैना ने भी क्षेत्र में प्रचार के दौरान बड़ी मेहनत की थी।फिलहाल विधान सभा चुनाव में सफलता नहीं मिल सकी। आखिर इस बीच क्या वजह बनी की दोनो प्यार के बीच अचानक बगावत की लकीर खड़ी हो गई।

सुनैना।

जो पत्नी पति को टिकट दिलाने से लेकर चुनाव मैदान में इतनी मेहनत की हो अब उसके बीच ऐसा क्या हो गया कि एक दूसरे के दुश्मन बन बैठे। बगावती सुर के बाद सुनैना ने पुलिस को दिए तहरीर में आरोप लगाया है दहेज के लिए पति,सास व ससुर उसे आए दिन प्रताड़ित करते है। जब वह 20 अप्रैल को मायके से ससुराल आई तो उसे घर से भगा दिया गया।वह लगभग चार वर्षीय बेटे के साथ प्रतापगढ में सिटी पैलेस होटल में रूकी थी।वहां भी सौरभ सिहं पहुँच कर उसके साथ मारपीट की। सुनैना ने फोन करके भाई रोहित सिहं को बुला कर 21 अप्रैल को बहुंचरा गई। भाई, बेटा व ड्राइवर बाहर बैठा था मै जब घर में दाखिल हुई तो वहां सास सुमन सिंह ने केरोसीन से भरा डिब्बा सौरभ को दिया उसने मेरे ऊपर उड़ेल दिया। जब तक वह माचिस जलाता कि किसी तरह मै भाग कर बाहर निकली। घटना की सूचना पर पहुँची पुलिस के साथ सुनैना कोतवाली आई।सुनैना की तहरीर के आधार पर पुलिस ने हत्या का प्रयास, दहेज उत्पीड़न व अन्य धाराओं में मुकदमा कर जाँच में जुट गई।

सपा नेता फरार, पुलिस दे रही दबिश

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सपा नेता सौरभ सिंह की पत्नी सुनैना ने अपने पति के खिलाफ 21 अप्रैल को हत्या का प्रयास करने तथा दहेज उत्पीड़न की गंभीर धाराओं में रिपोर्ट दर्ज कराई है। पुलिस ने भादवि की धारा 307 के साथ दहेज अधिनियम की रिपोर्ट दर्ज करने के बाद सौरभ सिंह की गिरफ्तारी के लिये दबिश दे रही है। पति-पत्नी का यह नया विवाद आज सोशल मीडिया पर छाया रहा और पुलिस का भी पक्ष लेने का प्रयास होता रहा। बहरहाल पुलिस गंभीर धाराओं में रिपोर्ट दर्ज करने के बाद अपने ढंग से कार्य करने में जुट गई है।

टेढ़े पंजों के इलाज के लिए ओर्थो के डॉक्टरों को दिया गया प्रशिक्षण

जिला पुरुष अस्पताल मे आयोजित हुआ प्रशिक्षण

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत कार्यरत मिरेकल फीट इंडिया द्वारा जिला पुरुष अस्पताल प्रतापगढ़ के सभागार मे ऑर्थोपेडिक डॉक्टरों को प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान जन्मजात क्लबफुट (टेढ़े पंजे) से प्रभावित आठ बच्चों को देखा गया। इनमे से दो नये बच्चे थे, जबकि छह बच्चों का इलाज पहले से चल रहा था।

इस प्रशिक्षण मे डॉक्टरों को बताया गया कि टेढ़े पंजों का इलाज तीन चरणों में किया जाता है। पहले चरण में पोंसेटी विधि द्वारा प्लास्टर लगाया जाता है जो कि हर हफ्ते बदलना पड़ता है। दूसरे चरण के दौरान एडी के पास एक छोटा सा चीरा लगाया जाता है जिसे टेनोटॉमी कहा जाता है।

आखिरी चरण में बच्चों को ब्रेसिंग यानी कि जूते दिये जाते हैं, जो शुरू के तीन महीनों तक तेईस घंटे पहनने होते हैं।अगले तीन महीने के बाद जूते सिर्फ रात में पहनाने पड़ते हैं। जिला अस्पताल में मिरेकल फीट इंडिया द्वारा दिया गया। इलाज निःशुल्क है। इस प्रशिक्षण में मास्टर ट्रेनर डॉक्टर आशीष श्रीवास्तव (जिला अस्पताल फैजाबाद) ने बच्चों को बेहतर तरीके से प्लास्टर लगाने, टेनोटोमी करने, तथा जूते पहनाते समय ध्यान रखी जाने वाली सावधानियों के बारे में जानकारी दी। इस प्रशिक्षण में ऑर्थोपेडिक सर्जन डॉक्टर सचिन कुमार,डॉक्टर जेपी वर्मा, डॉक्टर हनुमंत प्रसाद(अमेठी), डॉक्टर अतिल लाल (महाराजगंज) को प्रशिक्षित किया गया। इस प्रशिक्षण मे मिरेकल फीट इंडिया के ब्रांच मैनेजर भूपेश सिंह, प्रोग्राम एक्सक्यूटिव अंकिता श्रीवास्तव, कोमल केशरी, दिलीप धर दुबे, अभय प्रताप सिंह, अमितेश वर्मा और हिमांशु शर्मा मौजूद रहे।

जिला अस्पताल में आयोजित प्रशिक्षण में मौजूद चिकित्सकगण।

एटीएम कार्ड बदलकर धोखाधड़ी करने वाले एक आरोपी को पुलिस ने दबोचा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने बैंक के एटीएम बूथ से पीड़ित का एटीएम कार्ड बदलकर धोखाधड़ी को लेकर अज्ञात के खिलाफ दर्ज हुए मुकदमें मे शुक्रवार को एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। लालगंज कोतवाली अर्न्तगत रानीगंज कैथौला चैकी इंचार्ज विनीत उपाध्याय शुक्रवार को हमराहियों के साथ गश्त मे निकले थे। इसी बीच कैथौला चैराहे पर संदिग्ध दशा मे एक युवक को देख उसे धर दबोचा। गिरफ्तार आरोपी अशोक कुमार उर्फ राजू पुत्र हरीराम निवासी आलापुर बुखारी, मानिकपुर को कोतवाली लाकर तलाशी के दौरान उसके पास से छत्तीस एटीएम कार्ड की बरामदगी पुलिस द्वारा की गयी है। पुलिस की पूछताछ मे आरोपी ने बीते बीस अप्रैल को कैथौला स्थित यूको बैंक की एटीएम शाखा पर कोतवाली के नीमी मधुकरपुर निवासी चंद्रकांत गुप्ता पुत्र स्व. माताफेर के साथ की गयी एटीएम कार्ड की धोखाधड़ी के मामले को स्वीकार किया। इसके साथ ही आरोपी ने अन्य तमाम जगहों पर की गयी एटीएम कार्ड की धोखाधड़ी की बात भी पुलिस के सामने कबूल किया। कोतवाल कमलेश पाल ने बताया कि आरोपी के एक अन्य साथी की तलाश की जा रही है।

पृथ्वी दिवस पर प्राकृतिक संसाधनो व जल श्रोतो के संरक्षण का लिया संकल्प

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्रसिद्ध पांडव कालीन भयहरणनाथ धाम मे पृथ्वी दिवस के अवसर पर भूमि सहित सभी प्राकृतिक सम्पदाओ तथा जल श्रोतो के संरक्षण का संकल्प लिया गया। धाम के महासचिव सामाजिक कार्यकर्ता समाज शेखर ने जिला प्रशासन से धाम व धाम से जुडी सभी सार्वजनिक भूमि को कब्जा मुक्त कराने की मांग की है। साथ ही धाम के पर्यटन विकास हेतु शासन द्वारा प्रस्तावित योजनाओ को मूर्त रुप देने की अपील की है।.

सामाजिक कार्यकर्या समाज शेखर ने कहा कि धरती सहित पांचों प्राकृतिक तत्वो के संरक्षण व संचयन हेतु जन जन को अपनी महती जिम्मेदारी निभानी ही होगी। उन्होंने कहा कि बकुलाही नदी पुनरोधार के अवशेष सरकारी कार्यो को पूर्ण कराने हेतु इस वर्ष भी बरसात से पहले प्रयास होगा। वहीं आवश्यकतानुसार साझा श्रम व संसाधनो से सामूहिक प्रयास होगा। समाज शेखर ने जनपद की महत्वपूर्ण जल संसाधन रामपुर की वावली, चनौरा ताल, मोक्षदा जल धारा, रंगौली झील, नौडेरा ताल, रैनी झील आदि को पुनर्रजीवित व संरक्षित किये जाने की आवश्यकता है। समाज शेखर ने कहा की जल संरक्षण आज की अनिवार्य ही नही अपरिहार्य आवश्यकता है। ऐसे मे इसके लिए सिर्फ सरकार के भरोसे बैठना नही बल्कि सरकार की जल संरक्षण की योजनाओं मे भागीदारी करके इसे जनांदोलन का स्वरूप देकर व्यापक जल संरक्षण करके धरती को जीवंत बनाना ही सभी का कर्तव्य हो।

भयहरणनाथ धाम से जुडी सार्वजनिक भूमि हो कब्जा मुक्तः समाज शेखर

पृथ्वी दिवस पर धाम में पदाधिकारियों के साथ मौजूद समाज शेखर।

समाज के प्रत्येक व्यक्ति को चिकित्सकीय लाभ पहुंचाना सरकार का लक्ष्य

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। अमृत महोत्सव के क्रम में सीएचसी बाबा बेलखरनाथ धाम में शुक्रवार को स्वास्थ्य मेला का आयोजन किया गया, जिसमें 340 मरीजों ने स्वास्थ्य परीक्षण कराते हुए चिकित्सकीय लाभ लिया। इस दौरान 12 गर्भवती महिलाओं की गोद भराई तथा चार बच्चों का अन्नप्राशन करवाया गया। प्रतापगढ़ के सांसद संगम लाल गुप्ता ने स्वास्थ्य मेले का उद्घाटन करते हुए कहा कि समाज के प्रत्येक व्यक्तियों तक चिकित्सा की सुविधा पहुंचाने का लक्ष्य केंद्र एवं प्रदेश सरकार ने निर्धारित किया है, जिसे लेकर केंद्र एवं प्रदेश सरकार की सरकारी योजनाएं लागू है। सीएमओ अरविंद श्रीवास्तव ने कहा कि जिले के सभी स्वास्थ्य केंद्रों पर अच्छे तथा अनुभवी चिकित्सक तैनात किये जाएंगे।

जिला अस्पताल में दबंग ने डाक्टर के सहकर्मी को पीटा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सरकारी अस्पताल में पहुंचते ही लोग डाक्टर और स्टाफ को सम्मान देना तो दूर की बात। बात ऐसे करते हैं। जैसे वे ही वहां के सब कुछ है। शुक्रवार को प्रताप बहादुर पुरुष जिला अस्पताल में एक दबंग ने डाक्टर के सहकर्मी पर हाथ उठा दिया। ओपीडी के बाहर खड़ी भीड़ ने उस दबंग को ऐसा पीटा कि उसको छठी का दूध याद दिला दिया। जानकारी के अनुसार फिजियोथीरेपी ओपीडी के सामने भीड़ से निकला एक दबंग डाक्टर के कक्ष में जाकर कुर्सी पर बैठ गया। डाक्टर के सहकर्मी ने उसे बाहर तीमारदारों के लिए रखी कुर्सी पर बैठने के लिए कहा। यह बात दबंग युवक को खराब लगी। जब वह कक्ष से बाहर निकलने लगा तो सहकर्मी को पीट दिया। इससे वहां पर हंगामा खड़ा हो गया। देखते ही देखते वहां मौजूद लोगों ने दबंग को पीटना शुरू कर दिया। सरेआम पिटता देख दबंग किसी तरह उन सभी के चंगुल से छूटकर भाग निकला। हंगामे की सूचना पर पहुंचे अस्पताल के सुरक्षा कर्मियों ने लोगों को तितर बितर किया। डाक्टर राजीव त्रिपाठी का कहना है कि किसी युवक से उनके सहयोगी का विवाद हो गया था।

संदिग्ध दशा मे फांसी के फन्दे से लटककर युवती ने दी जान

लालगंज, प्रतापगढ़। उदयपुर थाना क्षेत्र के एक गांव मे गुरूवार की रात युवती ने संदिग्ध दशा मे फांसी के फंदे से लटककर जान दे दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे मे लेकर पीएम के लिए भेज दिया। उदयपुर थाना क्षेत्र के शिवचरन तिवारी का पुरवा रेहुआ लालगंज गांव की शिवानी (22) पुत्री संतोष तिवारी का शव बीती गुरूवार की रात करीब नौ बजे घर के कमरे मे फांसी के फंदे से लटकता मिला। रात मे ही किसी काम से शिवानी की मां उसे बुलाने के लिए उसके कमरे मे पहुंची तो उसे फंदे से लटकता देख आवाक रह गयी। पीड़ित मां की चीख सुनकर परिवार के लोग वहां पहुंचे। जानकारी होते ही ग्रामीण भी मौके पर पहुंच गये। ग्रामीणों की सहायता से शिवानी को नीचे उतारा गया लेकिन तब तक उसकी सांसे थम चुकी थी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे मे लेकर पीएम के लिए भेज दिया।

खबर संक्षेप

निरोधात्मक कार्यवाही में 19 अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन में चलाये जा रहे अभियान में साधारण मारपीट व शांति भंग करने के आरोप में थाना मंझनपुर से 02 थाना महेबाघाट से 01 थाना कौशाम्बी से 02, थाना सराय अकील से 02 थाना कोखराज से 04, थाना सैनी से 03, थाना मोहब्बतपुर पइन्सा से 05 कुल 19 अभियुक्तों को गिरफ्तार कर चालान न्यायालय कर दिया है।

चेकिंग के दौरान की गई कार्यवाही

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक के निर्देश के क्रम में जनपद स्तर पर विभिन्न थानो व यातायात पुलिस द्वारा यातायात नियमों का पालन न करने वालों के विरुद्ध सघन चेकिंग की गई चेकिंग के दौरान दो पहिया वाहनों को चेक किया गया जिसमे यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले 92 वाहनों का ई चालान किया गया।

1 लाख 95 हजार की रकम के साथ पेशेवर पांच जुआरी गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

सैनी पुलिस ने जुआ फड़ पर की कार्यवाही

जुआ खुलासे की जानकारी देते अपर पुलिस अधीक्षक पीछे खड़े जुआरी

कौशाम्बी। जुए के धंधे में लंबे समय से लिप्त पेशेवर अपराधियों पर सैनी पुलिस ने शिकंजा कसा है जुआरियों के विरुद्ध चलाए गए अभियान में सिराथू क्षेत्राधिकारी के नेतृत्व में सैनी कोतवाल ने बड़ाहरी गांव के ससुर नदी के बाहर 5 पेशेवर जुआरियों को गिरफ्तार किया है जिनके कब्जे से 1 लाख 85 हजार रुपए मौके पर और 10 हजार रुपए जामा तलाशी में पुलिस ने बरामद किया है मौके पर ताश की गड्डी पुलिस ने बरामद किया है पकड़े गए आरोपियों में विनोद कुमार केशरवानी पुत्र किशोरी लाल निवासी शाहगंज भरवारी किशन केसरवानी पुत्र वाला नाथ गौरा रोड भरवारी अब्दुल रहमान पुत्र अब्दुल्ला निवासी चंदापुर फाफामऊ लकी मोर्य पुत्र शिवबालक मौर्या निवासी सिराथू राहुल यादव पुत्र रामाधार निवासी जानकीपुर कस्बा सिराथू पर जुआ अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज कर पुलिस ने अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया है अपर पुलिस अधीक्षक ने प्रेस वार्ता के माध्यम से मामले की जानकारी दी है।

गायब 54 मोबाइल को पुलिस ने किया बरामद : कौशांबी सर्विलांस सेल द्वारा 54 एंड्राइड मोबाइल फोन को बरामद करने का दावा किया है पुलिस के मुताबिक बरामद मोबाइल की कीमत 7 लाख रुपए से अधिक है एंड्राइड मोबाइल बरामद करने के बाद भी मोबाइल चोर पुलिस के हाथ नहीं लगे हैं इसके पहले भी पुलिस ने गायब मोबाइल को बरामद किया था लेकिन मोबाइल चोर उस बार भी पुलिस के हत्थे नहीं चढ़ सके हैं रहस्यमय परिस्थितियों में मोबाइल की बरामदगी सर्विलांस सेल को कटघरे में खड़ा कर रही है जिले में आए दिन मोबाइल चोरी होती है मोबाइल चोरी की घटनाएं नहीं रुक रही हैं लेकिन सर्विलांस सेल नाटकीय ढंग से मोबाइल बरामद कर रही है जिनके पास से मोबाइल फोन बरामद होते हैं उन्हें चेतावनी देकर छोड़ दिया जाता है।

शिव मंदिर की दीवार में भू माफियाओं ने किया तोड़फोड़ एसपी से शिकायत

कौशाम्बी। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के नेहरू नगर के प्राचीन शिव मंदिर में भू माफियाओं ने चारदीवारी में तोड़फोड़ कर दी जिसकी शिकायत पुलिस अधीक्षक से कर शिव मंदिर की चाहरदीवारी तोड़ने वाले पर कार्यवाही की मांग की है। पुलिस अधीक्षक को शिकायती पत्र के मुताबिक केशनिया पत्नी स्वर्गीय बाबूलाल निवासी गांधीनगर पाता कोतवाली मंझनपुर ने बताया कि उसके पूर्वजो द्वारा सैकड़ो वर्ष पूर्व मंझनपुर कस्बे के नेहरू नगर में शिव मंदिर का निर्माण करा कर मूर्तियों को स्थापित किया गया था महिला ने एसपी को बताया कि प्रत्येक वर्ष मंदिर में भंडारे का भी आयोजन होता है इस शिव मंदिर में कस्बे के समाजवादी भू माफिया अपने गिरोह के अन्य साथियों के साथ मिल कर 31 मार्च को शिव मंदिर की दीवार को तोड़ कर नष्ट कर दिया है शिकायतकर्ता महिला का कहना है कि भू माफियाओं द्वारा बदनियती से शिव मंदिर की दीवार तोड़ दिए जाने से लाखों रुपया का नुकसान हुआ है मंदिर की दीवार तोड़कर कीमती जमीन पर उक्त गिरोह के लोगों द्वारा कब्जा करने की साजिश रची जा रही है जिससे मंदिर में भक्तों के पूजा पाठ में दिक्कत होगी। महिला ने कहा कि मंदिर की भूमि पर अवैध कब्जा करने और मंदिर की संपत्ति को नष्ट करने वाले लोगो और दीवार तोड़ने में लगाए गए मजदूरों पर मुकदमा दर्ज कर कानूनी कार्रवाई कर मंदिर की संपत्ति सुरक्षित की जाए।

न्यूज झरोखा

संदिग्ध परिस्थितियों में वृद्ध की मौत पुलिस ने भेजा पोस्टमार्टम

अझुवा कौशाम्बी। पैंसा कोतवाली क्षेत्र के पति का पुरवा गांव सभा में एक वृद्ध की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई है सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने वृद्ध के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है घटनाक्रम के मुताबिक प्रेमचंद उम्र लगभग 60 वर्ष पुत्र चंद्रपाल निवासी पति का पुरवा की शुक्रवार को संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई जानकारी पर परिजनों में कोहराम मच गया है सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेज दिया है इस दौरान गांव में तरह-तरह की चचाएं हैं

रेलवे ट्रैक पर मिला अधेड़ का शव

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र के सैयद सरावा रेलवे स्टेशन के पश्चिम एक व्यक्ति उम्र लगभग 50 वर्ष का शव मिला है सिलेटी कलर की हल्की नीली और कत्थई चॉकलेटी रंग का पेंट पहने हुए हैं जीआरपी पुलिस मौके पर पहुँची शव से कुछ दूर सीडी डॉन मोटरसाइकिल खड़ी पाई गई जिसमें नंबर समझ नहीं आ रहा है शव पाए जाने की सूचना पर आसपास ग्रामीणों की भीड़ लग गई शव की शिनाख्त धारा सिंह यादव पुत्र हीरालाल यादव निवासी ग्राम सभा घूरी गांव पोस्ट खंदेवरा थाना चरवा के रूप में ग्रामीणों ने की है पुलिस ने मृतक अधेड़ के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है आशंका जताई जा रही है कि मृतक ने आत्महत्या किया है।

करोड़ों की संम्पति को खंडहर में किया तब्दील

अखंड भारत संदेश

भरवारी कौशाम्बी। नगर पालिका परिषद भरवारी में बहुचर्चित व गरीबो दलितों व सभी लोगो के लिए सस्ता सुलभ व सुविधा जनक बल्लभ राम सालिग राम के नाम से अस्पताल चल रहा था जिसके रहते हुए जनपद कौशाम्बी सहित फतेहपुर राजा पुर कमसिन तक के मरीजों का उपचार मात्र पचीस व पचास पैसे के पर्चे पर किया जाता था। आज किन्ही कारणों से अस्पताल लगभग पचीस वर्षो से बंद पड़ा था जिसकी कीमत लगभग अरबो व करोडो रुपये की संम्पति है जिसके चलते स्थानीय लोगो के साथ साथ प्रयागराज सहित कुंडा प्रताप गढ़ के पूंजी पतियों की गिद्ध की निगाह इस बेश कीमती संम्पति पड़ गई जिसके चलते किसी की दाल नही गल सकी वही वर्तमान सांसद विनोद सोनकर इसमें अपना अंगद रूपी पैर जमाने मे सफल भी हुए परंतु जब बहुत खूबसूरत लगभग सौ बिस्तर वाला अस्पताल को ध्वस्तीकरण किया जा रहा था उस वक्त कुछ मीडिया कर्मियों द्वारा पूछने पर बताया कि इसको सभी लोगो से खाली कराकर इसको तोड़कर नैय सिरे से इसमें पैरा मेडिकल कॉलेज व नर्सिंग कॉलेज खोला जायगा जिसे सुन कस्बावासियों के सामने खुशी की नई रोशनी पैदा हो गई हो बहुत लोगो के दिल दिमाग मे रोजगार की बात कौंधने लगी। लेकिन भरवारी वासियो के सामने बेचैनी तब बढ़ने लगी जब उसे लगा कि हम लोगो की उम्मीदों पर पानी फिरता नजर आने लगा और अरबो रुपये की संम्पति अस्पताल खंडहर में तब्दील हो गया ' लोगो को यह विश्वाश हो गया था कि सांसद विनोद सोनकर द्वारा दिखाया गया सपना साकार होगा और भरवारी वासियो को एक सस्ता सुलभ सुविधा युक्त पैरा मेडिकल कॉलेज खुल जाने से कस्बा का विकास होगा वही रोजगार का दरवाजा खुल जायेगा यह अस्पताल मेहता ट्रस्ट का था इससे गरीब दलित व सभी लोगो के लिए इलाज उपलब्ध था जनपद में इससे बड़ा व सस्ता कोई अस्पताल नही था लोगो की उम्मीदों पर पानी फिर गया और अस्पताल खंडहर में तब्दील हो गया।

प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान दिवस का आयोजन अब महीने में दो बार

हर माह की 24 तारीख को सभी एफ.आर.यू. पर होगा आयोजन अप्रैल माह में 24 तारीख को रविवार होने के कारण यह आयोजन 25 अप्रैल को होगा गर्भवती का महिला विशेषज्ञ अथवा एम.बी.बी.एस. चिकित्सक प्रसव पूर्व करेंगे जांच मातृ एवं शिशु मृत्यु दर में कमी लाने के लिए उठाया गया बड़ा कदम

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान दिवस का विस्तार करते हुए मातृत्व स्वास्थ्य सेवाएं बढ़ाई जा रही हैं। अभी तक हर माह की नौ तारीख को आयोजित होने वाला यह कार्यक्रम अब हर माह की 24 तारीख को जिले की सभी प्रथम संदर्भन इकाई (एफ.आर.यू.) पर मातृत्व क्लीनिक के रूप आयोजित होगा। हालांकि इस बार छुट्टी होने के कारण यह क्लीनिक 25 अप्रैल को चलाई जाएगी। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. के सी राय ने बताया कि इस तरह के कार्यक्रम से गर्भवती महिलाओं को स्वास्थ्य केंद्र प्राथमिक परामर्श एवं सुविधा दोनों मिलेंगी ` ताकि उनका प्रसव सुरक्षित हो जिससे मातृ एवं शिशु मृत्यु दरमें कमी आये। जिला परामर्शदाता (मातृ स्वास्थ्य) आकाश दीप ने बताया कि प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान दिवस कार्यक्रम के माध्यम से मातृ एवं शिशु मृत्यु दर को कम करने के लिए अब हर माह की 24 तारीख को जनपद के सभी एफ.आर.यू. पर ह्लप्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियानह्व का क्लीनिक के तौर पर आयोजन किया जाएगा। अभियान के तहत हर माह की नौ तारीख को पहले की तरह ही स्वास्थ्य कार्यक्रम में सेवाएँ दी जाएंगी, पर प्रत्येक 24 तारीख को महिला रोग विशेषज्ञ या एम.बी.बी.एस. चिकित्सक प्रसव पूर्व गर्भवती की गुणवत्तापरक जांच करेंगे। इस बार अप्रैल माह में 24 तारीख को रविवार पड़ने के कारण यह आयोजन 25 अप्रैल को सभी एफ.आर.यू. सेंटर पर आयोजित होगा। इसके लिए एफ.आर.यू. इकाई को निर्देश जारी किए गए हैं। जनपद के चार केंद्र जिला अस्पताल मंझनपुर, सीएचसी सरायअकील नेवादा, सीएचसी कनेली, सीएचसी सिराथू केंद्र एफ.आर.यू. के रूप में कार्य कर रहे हैं। इन सभी पर इस बार 25 अप्रैल को मातृत्व क्लिनिक का आयोजन किया जाएगा।

जूनियर हाई स्कूल शिक्षक संघ सरसवा का चुनाव निर्विरोध संपन्न

कौशाम्बी। जूनियर हाई स्कूल शिक्षक संघ विकासखंड सरसवा का चुनाव निर्विरोध संपन्न हो गया है विनीत सिंह को अध्यक्ष बैजनाथ दुबे महामंत्री धीरेंद्र सिंह कोषाध्यक्ष लक्ष्मी कांत मिश्रा वरिष्ठ उपाध्यक्ष मिथिलेश कुमारी उपाध्यक्ष गीता देवी उपाध्यक्ष अनुज कुमार उपाध्यक्ष और संयुक्त मंत्री के पद पर वीरेंद्र सिंह रमेश सिंह निर्विरोध निर्वाचित हुए हैं निर्वाचित पदाधिकारियों को माल्यार्पण कर उनका स्वागत किया गया है निर्वाचन शिक्षक संघ विकासखंड चायल के अध्यक्ष गुणेश त्रिपाठी और नेवादा के अध्यक्ष दिनेश जायसवाल और मंडलीय महामंत्री की अध्यक्षता में संपन्न हुआ है इस दौरान विनोद श्रीवास्तव राजीव सिंह मृत्युंजय प्रताप सिंह अरुण सिंह आदि लोग मौजूद रहे।

समस्या का हो समाधान वरना होगा कार्य बहिष्कार

कौशाम्बी। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन कौशांबी के पदाधिकारियों ने जिला विकास अधिकारी को ज्ञापन सौंपते हुए समस्याओं के समाधान की मांग की है ज्ञापन सौंपते कर्मचारियों ने कहा कि उनकी समस्याओं का तत्काल समाधान किया जाए उनकी समस्याओं का समाधान 2 दिन के भीतर नहीं किया गया तो 25 अप्रैल से कार्य बहिष्कार कर दिया जाएगा एचआर पॉलिसी लागू करने वेतन इन्क्रीमेंट प्रतिवर्ष करने जीबी में अनुमोदित को पूर्णतया लागू करने कर्मचारियों का बीमा लागू करने सहित अन्य मांग शामिल है ज्ञापन सोते हुए कर्मचारियों ने कहा कि यदि 2 दिन के भीतर उनकी मांगे नहीं पूर्ण हुई तो 25 अप्रैल से कार्य बहिष्कार करेंगे।

साहब मस्त जनता पस्त गर्मी से बेहाल होकर जनता ने लगाई साहब से गुहार

बिजली विभाग से जनता त्रस्त हो चुकी हैं कौशाम्बी जिले में बिजली विभाग के रवैया से आमजनमानस होते हैं परेशान

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। साहब से तो बिल से मतलब है अगर बिल नही जमा हुआ तो तार कट दिया जाएगा लेकिन बिजली की आपूर्ति समय से नही आती हैं बिजली की समस्या से जनता परेशान हो चुकी हैं 24 घंटे में चार व पांच घंटे बिजली दिया जा रहा है

विद्युत कटौती के मामले में लोकीपुर पावर हाउस चर्चा का विषय बना है पावर हाउस की सप्लाई में कटौती को लेकर जब आम जनमानस कर्मचारियों से वार्ता करते हैं तो उससे बिजली विभाग के कर्मचारी कहासुनी लड़ाई झगड़ा पर भी आमादा हो जाते हैं लोकीपुर पावर हाउस की बिजली व्यवस्था पूरी तरह से चौपट हो चुकी है प्रतिदिन जनता को रात के अंधेरे में गर्मी के बीच झेलना पड़ा रहा है कई घंटे की अघोषित कटौती से जनता परेशान है बिजली की अंधाधुंध कटौती जारी है दिन हो या रात कटौती चलता रहता हैं अगर उपभोगता के पास कोई ग्रामीण फोन से सूचना देने को फोन किया जा रहा है तो कोई फोन नही उठा रहे हैं अगर पावर हाउस जाकर शिकायत दर्ज करवाई तो आश्वासन मिल जाता हैं विभाग द्वारा की जल्द ही बिजली व्यवस्था दुरुस्त करवा दी जाएगी वही किसी उपभोक्ता की बिनाली का बिल बकाया हो तो बिजली विभाग लाइन काटकर लोगो को समाज में अपमानित करने से नही से चुकता उमस भरी गर्मी में बिजली की अघोषित कटौती से आम जनमानस में खासा आक्रोश देखने को मिल रहा है हर तरफ उपभोक्ता एक ही बात कहते नजर आते हैं गर्मी आयी और बिजली भी अपनी रासलीला दिखाने लगी हैं लोकीपुर पावर हाउस इन दिनों चर्चा का विषय बना हुआ है अगर उच्चाधिकारियों द्वारा इस पावर हाउस की एन्टी रजिस्टर की जांच कराई जाए तो जिसमे अधिकारियों को निलंबित होना तय है जहाँ योगी सरकार लगातार बिजली घर घर देने का वादा कर रही हैं वहीं बिजली बिल लेने के बाद भी बिजली की सप्लाई नहीं मिल पाती है।

चार वारण्टी अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जिले में अलग अलग थानों द्वारा चार वारंटी अभियुक्तो को गिरफ्तार कर न्यायालय भेज दिया है जानकरी के मुताबिक थाना करारी पुलिस बल द्वारा वारंटी अभियुक्त अशोक कुमार पुत्र छेदी नट निवासी हिसामपुर थाना करारी मंगल दास पुत्र व गुलाब निवासी बरई बंधवा थाना करारी को गिरफ्तार के विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

इसी प्रकार थाना पिपरी पुलिस बल द्वारा वारंटी अभियुक्त सेबू पुत्र निक्कन निवासी अजरावल खुर्द थाना पिपरी को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

इसी प्रकार थाना मंझनपुर पुलिस बल द्वारा वारंटी अभियुक्त राम बाबू पुत्र मोहनलाल निवासी सेलहरा पश्चिम थाना मंझनपुर को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

भरवारी पुलिस चौकी को पुराना सीयूजी नंबर वापस दिलाए जाने की मांग

अखंड भारत संदेश

भरवारी कौशाम्बी। कोखराज थाना की पुलिस चौकी भरवारी को आवंटित हुआ सीयूजी मोबाइल नंबर को भरवारी से हटा कर कड़ा धाम थाना दे दिए जाने से भरवारी क्षेत्र के लोगो को आपातकाल में पुलिस चौकी में बात करने में दिक्कतें होती हैं जब क्षेत्र की जनता द्वारा सीयूजी में फोन लगाया जाता है तो वह कड़ा धाम थाना पहुंच जाता है जनता ने सीयूजी मोबाइल नंबर भरवारी चौकी में वापस कराए जाने की मांग की है। वैश्विक महामारी के चलते भरवारी पुलिस चौकी का वर्षो से आबंटित सीयूजी नंबर को कड़ा थाना को दे दिया गया था जिसके चलते भरवारी चौकी को नया नंबर दे दिया गया है जिसकी वजह से आम लोगो को नया नंबर की जानकारी नही है और न ही मोबाइल लगाने पर लगता भी नही है कल नवागंतुक चौकी इंचार्ज भरवारी को शांति व्यवस्था को अपराध पर अंकुश लगाने के लिए भरवारी चौकी की कमान सौपी है और उन्होंने चार्ज भी ले लिया है लोगो ने पुलिस अधीक्षक कौशाम्बी से मांग की है कि चौकी भरवारी को आवंटित सीयूजी मोबाइल नंबर 9454403770 को पुनः भरवारी को आबंटित कर दिया जाए लोगो मे यह नंबर वितरित किया जा चुका है। वर्तमान में जो नंबर भरवारी पुलिस चौकी को आबंटित किया गया है वह नंबर न तो किसी को याद रहता है न ही यह नंबर उपयोग में रहता है पुराना सीयूजी नंबर क्षेत्र के आम जनता के दिल व दिमांग में फीड हो चुका है जिसे भरवारी पुलिस चौकी को वापस किया जाना नितांत आवश्यक है।

दो माह बाद भी अगवा बेटी का सुराग नहीं

कौशाम्बी। सरायअकिल कोतवाली इलाके के एक अधेड़ ने पुलिस अधीक्षक को प्रार्थना पत्र देते हुए कहा कि साहब दो महीने हो गए है मेरी अगवा बेटी का अभी तक कोई अता.पता नहीं चल सका है। नामजद शिकायत के बाद भी कोतवाली पुलिस कोई कार्रवाई नहीं कर रही है। एसपी ने पीड़ित को जांच और कार्रवाई का भरोसा दिलाया है। सरायअकिल कोतवाली के एक गांव की किशोरी दो महीने पहले संदिग्ध दशा में लापता हो गई थी। पीड़िता के पिता का आरोप है गांव का ही गैर बिरादरी का युवक उसकी बेटी को अगवा किया है। अगवा करने के साथ दरिंदगी करते हुए गायब कर दिया है। जब भी वह शिकायत लेकर थाने गया तो उसे पुलिस ने डांटकर भगा दिया। इलाकाई पुलिस से न्याय नहीं मिलता देख सोमवार को पीड़ित पिता मंझनपुर पहुंचा और पुलिस अधीक्षक को प्रार्थना पत्र देते हुए कहा कि साहब आशंका है कि उसकी बेटी की हत्या करने के बाद शव गायब कर दिया गया है। एसपी ने सरायअकिल इंस्पेक्टर को प्रकरण की जांच कर कार्रवाई का निर्देश दिया है।

अवैध बसों के संचालन में मेहरबान थानेदार

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जिले में बिना परमिट के अवैध बसे सड़कों पर फरार्टा भर रही हैं एआरटीओ यातायात पुलिस से लेकर थाना पुलिस चौकी पुलिस अवैध बसों के संचालन को नहीं रोक पा रही है जिससे आए दिन अवैध बसों के संचालन में हादसे होते हैं बीते दिनों कड़ा धाम कोतवाली क्षेत्र से बारात लेकर जा रही बस प्रेम नगर के पास हादसे का शिकार हो गई जिसमें 4 बारातियों की मौत हो गई और दर्जनों बराती गंभीर घायल हो गए लेकिन इस मामले को लेकर भी अवैध वाहनों के संचालन में लिप्त थाना पुलिस यातायात पुलिस और एआरटीओ पर शासन ने कार्रवाई नहीं की है जनपद मुख्यालय मंझनपुर से प्रयागराज स्टेशन तीन दर्जन अवैध प्राइवेट बसें बिना परमिट के सड़कों पर पूरे दिन दौड़ती हैं मंझनपुर से प्रयागराज स्टेशन तक पड़ने वाले सात पुलिस थाने और पुलिस चौकी में अवैध बसों के संचालन को देखने के बाद कार्यवाही नहीं की जाती है

लिस्ट लेकर सिपाही करते हैं पूरे दिन वसूली

पर्यवेक्षण करने वाले अधिकारी बने अनजान

वाहनों की चेकिंग के नाम पर बीते कई वर्षों से अवैध बसों की जांच कार्यवाही नहीं हो सकी है एक तरफ सरकार डग्गामार वाहन और संगठित अपराध पर कार्यवाही की बात कर रही है दूसरे तरफ सात थाना क्षेत्र से गुजरने वाली अवैध बसों पर कार्यवाही नहीं हो सकी है यह जगजाहिर है कि अवैध बसों के संचालन में क्यों कार्यवाही नहीं हो रही है और प्रत्येक थाना और पुलिस चौकी से एक सिपाही लिस्ट बनाकर वसूली कर रहा है जिससे अवैध बसे बेखौफ तरीके से सड़कों पर दौड़ रही है अवैध बसों के संचालन से जहां दुर्घटनाएं बढ़ती है वही सरकार को राजस्व का नुकसान होता है अवैध बसों के संचालन के चलते रोडवेज बस का व्यवसाय भी नहीं बढ़ पाता है अवैध बसों के संचालन में लिप्त थाना पुलिस यातायात पुलिस और एआरटीओ की गतिविधियों को अभी तक पर्यवेक्षण करने वाले अधिकारियों ने संज्ञान नहीं लिया है पर्यवेक्षण करने वाले अधिकारी अवैध बसों के संचालन से अनजान बने हैं।

एसपी ने किया पुलिस लाइन का निरीक्षण

कौशाम्बी। पुलिस लाइन की व्यवस्था देखने के लिए एसपी पुलिस लाइन पहुंच गए हैं पुलिस लाइन निरीक्षण के दौरान वहां उन्होंने कई अधीनस्थों को कठोर चेतावनी दी है उन्होंने पुलिस लाइन व उसके आस पास के जगह को साफ सुथरा रखने का निर्देश दिया है पुलिस अधीक्षक द्वारा पुलिस लाइन में परेड में सलामी ली गई साथ ही परेड पुलिस लाइन परिसर व डायल 112 गाड़ियों आदि का निरीक्षण किया पुलिस अधीक्षक ने निरीक्षण के दौरान उपस्थित अधीनस्थों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए है।

डीएम को दिए गए शिकायती पत्र लेखपाल तक पहुंचते-पहुंचते हो जाता है गायब

कौशाम्बी। कानून व्यवस्था में अधीनस्थ कर्मचारी अपने को आला अधिकारियों से बड़े समझने लगे हैं अधीनस्थ कर्मचारी जिस तरह से चाहते हैं उस तरह से कानून व्यवस्था को संचालित करते हैं जिससे पीड़ितों को न्याय नहीं मिल पाता है जिला अधिकारी को शिकायती पत्र देने के बाद आए दिन प्रार्थना पत्र गायब हो जाते हैं जिससे शिकायतकर्ता शिकायती पत्रों के निस्तारण के लिए कार्यालयों का चक्कर लगाता रह जाता है इसी तरह का एक मामला मंझनपुर के तहसील के ऊनो गांव के मजरा कुलौली का प्रकाश में आया है जहां लेखपाल और कानूनगो जिलाधिकारी कार्यालय से प्राप्त शिकायती प्रार्थना पत्रों को गायब कर देते है मामले को लेकर लल्लू पुत्र बाबूलाल और संतोष पुत्र श्यामलाल निवासी कुनौली ऊनो ने जिलाधिकारी को शिकायती पत्र देकर बताया कि खलिहान तालाब नवीन परती चारागाह में अवैध कब्जा के संबंध में तमाम दरखास्त दी गई है जिस पर आदेश के बावजूद कोई कार्रवाई नहीं हुई शिकायतकर्ता का कहना है कि लेखपाल और कानूनगो पैसा लेकर शिकायती पत्र को दबा देते हैं जिससे अवैध कब्जा धारकों पर कार्रवाई नहीं होती शिकायतकर्ता ने बताया कि 29 मार्च 7 अप्रैल 22 फरवरी को जिलाधिकारी कार्यालय में शिकायती पत्र अवैध कब्जे के संबंध में दी गई है लेकिन शिकायती पत्र गायब हो गए हैं और कार्यवाही नहीं हो सकी है।

भ्रष्टाचार की जांच के बाद ठंडे दिखाई पड़ रहे हैं अधिकारी

अखंड भारत संदेश

ब्लॉक में अधिकारियों के इर्द गिर्द घूमता हुआ नजर आता है तियरा जमालपुर का घोटालेबाज प्रधान

कौशाम्बी। भ्रष्टाचार की शिकायत के बाद आला अधिकारियों ने ग्राम प्रधान के भ्रष्टाचार की जांच की थी जांच के बाद अधिकारियों का कहना था कि भ्रष्टाचार में लिप्त प्रधान पंचायत सचिव पर मुकदमा दर्ज करा कर सरकारी रकम की रिकवरी की कार्यवाही की जाएगी लेकिन 10 दिन बीत जाने के बाद भी आरोपी प्रधान और पंचायत सचिव पर कार्यवाही नहीं हुई है जिससे जांच अधिकारियों की भी मंशा पर सवाल उठने लगे हैं और सूत्रों की मानें तो भ्रष्टाचार में लिप्त पंचायत सचिव और ग्राम प्रधान जांच अधिकारियों के संपर्क में पहुंच चुके हैं और भ्रष्टाचार की रकम जांच अधिकारियों के घरों तक पहुंच गई है जिससे भ्रष्टाचार में लिप्त प्रधान और पंचायत सेक्रेटरी का बाल बांका होता नहीं दिख रहा है। विकास खण्ड मंझनपुर के ग्राम पंचायत तियरा जमालपुर में घोटालेबाज एवं भ्रष्टाचार में लिप्त वर्तमान ग्राम प्रधान के काले कारनामों की चर्चा जगह जगह पर बनी हुई है भ्रष्टाचारी एवं घोटालेबाज ग्राम प्रधान ने अधिकारियों की आंखों में धूल झोककर लाखों रुपए का घोटाला कर दिया था जिसकी जानकारी जब नव निर्वाचित सदस्यों को हुई तो उन्होंने जिलाधिकारी के समक्ष शपथ पत्र के साथ उपस्थित होकर इसके काले कारनामों को उजागर किया। जिलाधिकारी ने संज्ञान में लेकर जिला पंचायत राज अधिकारी को आदेशित किया तो उन्होंने अपनी टीम के साथ ग्राम पंचायत का निरीक्षण किया और उन्होंने भी माना और अपने साफ शब्दों में कहा कि ग्राम प्रधान और सचिव ने मिलकर लाखों रुपए का घोटाला किया है लेकिन इस मामला को विभागीय अधिकारियों ने ठंडे बस्ते में डालकर स्वयं उस भ्रष्टाचारी एवं घोटालेबाज प्रधान को बचाने की योजना बनाना शुरू कर दी है। जिससे यह साफ जाहिर होता है कि प्रधान और सचिव के द्वारा लाखों रुपए का घोटाला करने में विभागीय अधिकारियों की सांठगांठ है। ग्रामीणों के द्वारा शासन और प्रशासन दोनों से भरोसा उठता नजर आ रहा है भ्रष्टाचार में लिप्त लोगों को संरक्षण देने के चलते ग्रामीणों में जबरदस्त आक्रोश व्याप्त हो गया है। सूत्रों के अनुसार बताया जा रहा है कि प्रधान को विभागीय अधिकारियों के द्वारा ब्लॉक में बुलाकर इस भ्रष्टाचार के कलंक से बचने के उपाय बताए जाते हैं। योगी सरकार का भरपूर फायदा अधिकारियों के द्वारा उठाया जा रहा है। यह वहीं विभाग है जो जाड़े के समय योगी सरकार के प्रचार वाले कागजों को जलाकर आग से अपने हाथ गरम करते थे जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर तहलका मचाए था।

संपादकीय

ज्ञान का प्रकाश पुंज है पुस्तकें

महात्मा गांधी ने कहा है कि पुराने वस्त्र पहनों पर नई पुस्तकें खरीदो' उन्होंने यह भी कहा कि पुस्तकों का महत्व रत्नों से कहीं अधिक है, क्योंकि पुस्तकें अंतःकरण को उज्जवल करती हैं। सच्चाई भी यही है कि पुस्तकें ज्ञान के अंतःकरण और सच्चाईयों का भंडार होती है। आत्मभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी होती हैं। जिन्होंने पुस्तके नहीं पढी हैं या जिन्हें पुस्तक पढ़ने में रूचि नहीं है वे जीवन की कई सच्चाईयों से अनभिज्ञ रह जाते हैं। पुस्तकें पढ़ने का सबसे बड़ा फायदा यह होता है कि हम जीवन की कठिन परिस्थितियों से जूझने की शक्ति से परिचित हो जाते हैं,और समस्या कितनी भी बड़ी हो हम उससे जीतकर निजात पा जाते हैं। कठिन से कठिन समय पर पुस्तकें हमारा मार्गदर्शन एवं दिग्दर्शन करती है। जिन मनीषियों ने पुस्तक लिखी है और जिन्हें पुस्तकें पढ़ने का शौक है उन्हें ज्ञानार्जन के लिए इधर-उधर भटकने की आवश्यकता नहीं होतीहैं। पूर्व राष्ट्रपति डॉ एपीजे कलाम साहब ने कहा है कि एक पुस्तक कई मित्रों के बराबर होती है और पुस्तकें सर्वश्रेष्ठ मित्र होती हैं। शिक्षाविद चार्ल्स विलियम इलियट ने कहा कि पुस्तके मित्रों में सबसे शांत व स्थिर हैं, वे सलाहकारों में सबसे सुलभ और बुद्धिमान होती हैं और शिक्षकों में सबसे धैर्यवान तथा श्रेष्ठ होती हैं। निसंदेह पुस्तकें ज्ञानार्जन करने मार्गदर्शन एवं परामर्श देने में में विशेष भूमिका निभाती है। पुस्तकें मनुष्य के मानसिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक,नैतिक, चारित्रिक, व्यवसायिक एवं राजनीतिक विकास में अत्यंत सहायक एवं सफल दोस्त का फर्ज अदा करती हैं। प्राचीन काल से ही बच्चों तथा नौनिहालों के विकास के लिए पुस्तकें लिखे जाने का चलन तथा रिवाज रहा है। 'पंचतंत्र'तथा 'हितोपदेश' इसके बहुत बड़े उदाहरण हैं। पंचतंत्र,हितोपदेश में ज्ञानार्जन के लिए एवं संस्कृति सभ्यता और शिक्षा के उपयोग की बातें जो दैनिक जीवन में अत्यंत प्रभावशाली तथा उपयोगी होती है, लिखी गई हैं। और यही पुस्तकें इस देश की सभ्यता संस्कृति के संरक्षण तथा प्रचार प्रसार में अहम भूमिका निभाती आई है। इसी तरह की पुस्तकों ने ज्ञान का विस्तार भी किया है। विश्व की हर सभ्यता मे लेखन सामग्री का बड़ा ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पुस्तकों के माध्यम से ही धर्म जाति संस्कृति एवं शिक्षा की मार्गदर्शिका से ही समाज आगे बढ़ा है। अच्छी किताबें अच्छे मार्गदर्शक तथा शिक्षित तथा अशिक्षित समाज को चेतना तथा सद्गुणों से संचारित करती है, व्यक्ति के अंदर मानसिक क्षमता का विकास भी होता है। ऐतिहासिक किताबें हमें इतिहास, धर्म, राजनीति, संस्कृति के अनेक पहलुओं से अवगत भी कराती है,जिससे व्यक्तित्व विकास में अत्यंत सहायता मिलती है। पुस्तकों के महत्व को देखते हुए डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा कि पुस्तके वह साधन है जिसके माध्यम से हम विभिन्न संस्कृति एवं समाज के बीच सेतु का निर्माण कर सकते हैं। पुस्तके वह मित्र होती हैं जो हर परिस्थिति तत्काल में सहायक होती है, और यही कारण है कि अनेक लोग गुरुवाणी, हनुमान चालीसा अभी अपने पास रखते हैं। वर्तमान युग डिजिटल युग कहलाता है अब इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में प्रिंट मीडिया के स्थान पर अपने पैर जमा लिए हैं। इस डिजिटल युग में इंटरनेट का महत्व काफी बढ़ गया है।

हरित समृद्धि से समृद्ध जीवन बनाने के लिए प्रोत्साहित

ललित गर्ग

> गोचरभूमि का एक टुकड़ा भी किसी को हथियाने नहीं देता था। जिसके लिये जल की एक बूंद भी जीवन जितनी कीमती थी। कत्लखानों में कटती गायों की निरीह आहें जिसे बेचैन कर देती थी। जो वन्य पशु-पक्षियों को खदेड़कर अपनी बस्तियों बनाने का बौना स्वार्थ नहीं पालता था। अब वही मनुष्य अपने स्वार्थ एवं सुविधावाद के लिये सही तरीके से प्रकृति का संरक्षण न कर पा रहा है और उसके कारण बार-बार प्राकृतिक आपदाएं कहर बरपा रही है। रेगिस्तान में बाढ़ की बात अजीब है

इस वर्ष पृथ्वी दिवस की थीम इन्वेस्ट इन अवर प्लैनेट है, जो हमें हरित समृद्धि से समृद्ध जीवन बनाने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह थीम संदेश देती है कि हमारे स्वास्थ्य, हमारे परिवारों, हमारी आजीविका और हमारी धरती को एक साथ संरक्षित करने का समय आ गया है। पृथ्वी दिवस आधुनिक पर्यावरण आंदोलन की वर्षगांठ का प्रतीक है, जो पहली बार सन- 1970 में मनाया गया था। इसका उद्देश्य लोगों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील एवं पृथ्वी के संरक्षण के लिये जागरूक करना है। पिछले कुछ समय से कोरोना महामारी एवं महासंकट ने न केवल इंसानों के जीवन को खतरे में डाला है बल्कि पृथ्वी, प्रकृति एवं पर्यावरण पर भी उसके घातक असर डाला है। दुनिया में पृथ्वी के विनाश, प्रकृति प्रदूषण एवं कोरोना के जैविक संकट को लेकर काफी चर्चा हो रही है। आज विश्व भर में हर जगह प्रकृति का दोहन एवं शोषण जारी है। जिसके कारण पृथ्वी पर अक्सर उत्तरी ध्रूव की ठोस बर्फ का कई किलोमीटर तक पिघलना, सूर्य की पराबैंगनी किरणों को पृथ्वी तक आने से रोकने वाली ओजोन परत में छेद होना, भयंकर तूफान, सुनामी और भी कई प्राकृतिक आपदाओं का होना आदि ज्वलंत समस्याएं विकराल होती जा रही है, जिसके लिए मनुष्य ही जिम्मेदार हैं। ग्लोबल वार्मिंग के रूप में जो आज हमारे सामने हैं। ये आपदाएँ पृथ्वी पर ऐसे ही होती रहीं तो वह दिन दूर नहीं जब पृथ्वी से जीव-जन्तु व वनस्पति का अस्तिव ही समाप्त हो जाएगा। जीव-जन्तु अंधे हो जाएंगे। लोगों की त्वचा झुलसने लगेगी और कैंसर रोगियों की संख्या बढ़ जाएगी। समुद्र का जलस्तर बढ़ने से तटवर्ती इलाके चपेट में आ जाएंगे। कोरोना महामारी जैसी व्याधियां रह-रहकर जीवन संकट का कारण बनती रहेगी। पर्यावरण एवं प्रकृति के प्रति उपेक्षा का ही परिणाम है कि हमारे द्वारा कहीं फैक्ट्रियों का गन्दा जल हमारे पीने के पानी में मिलाया जा रहा है तो कहीं गाड़ियों से निकलता धुआं हमारे जीवन में जहर घोल रहा है और घूम फिर कर यह हमारी पृथ्वी को दूषित बनाता है। जिस पृथ्वी को हम माँ का दर्जा देते हैं उसे हम खुद अपने ही हाथों दूषित करने में कैसे लगे रहते हैं? आज जलवायु परिवर्तन पृथ्वी के लिए सबसे बड़ा संकट बन गया है। अगर पृथ्वी के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह लग जाए तो मानव जीवन कैसे सुरक्षित एवं संरक्षित रहेगा? पृथ्वी है तो सारे तत्व हैं, इसलिये पृथ्वी अनमोल तत्व है। इसी पर आकाश है, जल, अग्नि, और हवा है। इन

सबके मेल से प्रकृति की संरचना सुन्दर एवं जीवनमय होती है। अपने-अपने स्वार्थ के लिए पृथ्वी पर अत्याचार रोकना होगा और कार्बन उत्सर्जन में कटौती पर ध्यान केंद्रित करना होगा। अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से औद्योगिक क्रांति पर नियंत्रण करना होगा, क्योंकि उन्हीं के कारण कार्बन उत्सर्जन और दूसरी तरह के प्रदूषण में बढ़ोतरी हुई है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कई प्रजाति के जीव-जंतु, प्राकृतिक स्रोत एवं वनस्पति विलुप्त हो रहे हैं, जिससे पृथ्वी असंतुलित हो रही है। विलुप्त होते जीव-जंतु और वनस्पति की रक्षा के लिये विश्व-समुदाय को जागरूक करने के लिये ही इस दिवस को मनाया जाता है। आज चिन्तन का विषय न तो रूस-यूक्रेन युद्ध है और न मानव अधिकार, न कोई विश्व की राजनैतिक घटना और न ही किसी देश की रक्षा का मामला है। चिन्तन एवं चिन्ता का एक ही मामला है लगातार विकराल एवं भीषण आकार ले रही गर्मी, सिकुड़ रहे जलस्रोत, विनाश की ओर धकेली जा रही पृथ्वी एवं प्रकृति के विनाश के प्रयास। बढ़ती जनसंख्या, बढ़ता प्रदूषण, नष्ट होता पर्यावरण, दूषित गैसों से छिद्रित होती ओजोन की ढाल, प्रकृति एवं पर्यावरण का अत्यधिक दोहन- ये सब पृथ्वी एवं पृथ्वीवासियों के लिए सबसे बडे. खतरे हैं और इन खतरों का अहसास करना ही विश्व पृथ्वी दिवस का ध्येय है। प्रतिवर्ष धरती का तापमान बढ़ रहा है। आबादी बढ़ रही है, जमीन छोटी पड़ रही है। हर चीज की उपलब्धता कम हो रही है। आक्सीजन की कमी हो रही है। साथ ही साथ हमारा सुविधावादी नजरिया एवं जीवनशैली पृथ्वी और उसके पर्यावरण एवं प्रकृति के लिये एक गंभीर खतरा बन कर प्रस्तुत हो रहा हैं। जल, जंगल और जमीन इन तीन तत्वों से पृथ्वी और प्रकृति का निर्माण होता है। यदि यह तत्व न हों तो पृथ्वी और प्रकृति इन तीन तत्वों के बिना अधूरी है। विश्व में ज्यादातर समृद्ध देश वही माने जाते हैं जहां इन तीनों तत्वों का बाहुल्य है। बात अगर इन मूलभूत तत्व या संसाधनों की उपलब्धता तक सीमित नहीं है। आधुनिकीकरण के इस दौर में जब इन संसाधनों का अंधाधुन्ध दोहन हो रहा है तो ये तत्व भी खतरे में पड़ गए हैं। अनेक शहर पानी की कमी से परेशान हैं। आप ही बताइये कि कहां खो गया वह आदमी जो स्वयं को कटवाकर भी वृक्षों को कटने से रोकता था? गोचरभूमि का एक टुकड़ा भी किसी को हथियाने नहीं देता था। जिसके लिये जल की एक बूंद भी जीवन जितनी कीमती थी। कत्लखानों में कटती गायों की निरीह आहें जिसे बेचैन कर देती थी। जो वन्य पशु-पक्षियों को खदेड़कर अपनी बस्तियों बनाने का बौना स्वार्थ नहीं पालता था। अब वही मनुष्य अपने स्वार्थ एवं सुविधावाद के लिये सही तरीके से प्रकृति का संरक्षण न कर पा रहा है और उसके कारण बार-बार प्राकृतिक आपदाएं कहर बरपा रही है। रेगिस्तान में बाढ़ की बात अजीब है, लेकिन हमने राजस्थान में अनेक शहरों में बाढ़ की विकराल स्थिति को देखा हैं। जब मनुष्य पृथ्वी का संरक्षण नहीं कर पा रहा तो पृथ्वी भी अपना गुस्सा कई प्राकृतिक आपदाओं के रूप में दिखा रही है। वह दिन दूर नहीं होगा, जब हमें शुद्ध पानी, शुद्ध हवा, उपजाऊ भूमि, शुद्ध वातावरण एवं शुद्ध वनस्पतियाँ नहीं मिल सकेंगी। इन सबके बिना हमारा जीवन जीना मुश्किल हो जायेगा। मनुष्यों की सुविधा के लिए बनाई गयी पॉलीथीन पृथ्वी के लिये सबसे बड़ा सिरदर्द बन गई है। इसके नष्ट न होने के कारण भूमि की उर्वरक क्षमता खत्म हो रही है। इनको जलाने से निकलने वाला धुआँ ओजोन परत को भी नुकसान पहुँचाता है जो ग्लोबल वार्मिंग का बड़ा कारण है। देश में प्रतिवर्ष लाखों पशु-पक्षी पॉलीथीन के कचरे से मर रहे हैं। इससे लोगों में कई प्रकार की बीमारियाँ फैल रही हैं। चूंकि प्रकृति मनुष्य की हर जरूरत को पूरा करती है, इसलिए यह जिम्मेदारी हरेक व्यक्ति की है कि वह प्रकृति की रक्षा के लिए अपनी ओर से भी कुछ प्रयास करे। हमें पानी का इस्तेमाल कम से कम करना चाहिए और पानी की अधिक से अधिक बचत करनी चाहिए। हमें वर्षा के जल को पुनः उपयोग में लाने वाली प्रणाली को विकसित करना होगा। हमें बिजली की बबार्दी को भी रोकना होगा अन्यथा वह दिन दूर नहीं है जब हम अंधेरे में ही अपना जीवन-यापन करने को मजबूर हो जायेंगे। हमें कागज के उपयोग को सीमित करना होगा, क्योंकि कागज पेड़ों की लकड़ी से बनता है जिसके लिए हमें बड़ी संख्या में पेड़ काटने पड़ते हैं। आजकल भूमि भी जहरीली होती जा रही है जिससे उसमें उगने वाली वनस्पतियों में विषाक्तता बढ़ती जा रही है। हमारी सुविधावादी जीवनशैली से निकलने वाली विषैली गैसों के एक अणु में ओजोन के लाख अणुओं को नष्ट करने की क्षमता है। कैसे रोकेंगे कार्बन डाईआक्साइड और जहरीली मिथेन गैस के उर्त्सजन को। गरमी के मौसम में पहाड़ी क्षेत्रों में जंगल धधक उठते हैं। उत्तराखंड के जंगल जलते रहे हैं। सवाल है कि जब ऐसी घटनाओं से हम हर साल दो-चार होते हैं तो भविष्य के लिए कोई सबक क्यों नहीं लेते? पिछले कुछ वर्षों से बार-बार सूखे का सामना कर रहे महाराष्ट्र के विदर्भ और उत्तर प्रदेश-मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड में पीने के पानी की समस्या बढ़ गई है। इन इलाकों के कई जलाशयों में पानी का स्तर क्षमता का 10 फीसदी ही रह गया है, जिससे कुछ फसलें संकटग्रस्त हो गई हैं। आवश्यक है-मानव स्वभाव का प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित हो। सहज रिश्ता कायम हो।

सुविधावाद का शैतान बैठा हुआ है, उस पर अंकुश लगे। सुख एवं सुविधावाद के प्रदूषण के अणु कितने विनाशकारी होते हैं, सहज ही विनाश का रूप ले रही पृथ्वी की विनाशलीला को देखकर कहा जा सकता है। प्रदूषण के कारण सारी पृथ्वी दूषित हो रही है और निकट भविष्य में मानव सभ्यता का अंत दिखाई दे रहा है।

सुरक्षित कल की गारंटी देता है आपराधिक प्रक्रिया पहचान विधेयक

सत्यवान 'सौरभ'

आपराधिक प्रक्रिया (पहचान) विधेयक संसद द्वारा पारित किया गया है और यह कैदियों की पहचान अधिनियम, 1920 को निरस्त करने का प्रयास करता है। यह विधेयक उन सूचनाओं के दायरे का विस्तार करता है जो सरकार दोषियों, गिरफ्तार व्यक्तियों और आदतन अपराधियों जैसे अन्य व्यक्तियों से एकत्र कर सकती है। इस कानून का मुख्य उद्देश्य देश में दोषसिद्धि दर में सुधार करना, नागरिकों के मानवाधिकारों की रक्षा करना और समाज में अपराध के खिलाफ कार्रवाई का एक मजबूत संदेश देना है। इस विधेयक ने संसद और देश भर में व्यापक बहस को आकर्षित किया है, जो मौलिक अधिकारों और कानून के दुरुपयोग को रोकने के लिए सरकार द्वारा सुनिश्चित किए गए नियंत्रण और संतुलन से संबंधित महत्वपूर्ण चिंताओं को उठाती है। कैदियों की पहचान अधिनियम 1920, पुलिस अधिकारियों को दोषियों और गिरफ्तार व्यक्तियों सहित व्यक्तियों की कुछ पहचान योग्य जानकारी (उंगलियों के निशान और पैरों के निशान) एकत्र करने की अनुमति देता है। किसी अपराध की जांच में सहायता के लिए, मजिस्ट्रेट किसी व्यक्ति की माप और तस्वीर लेने का आदेश दे सकता है। उसके अनुसार एक बार जब व्यक्ति को छुट्टी दे दी जाती है, तो सभी सामग्री को नष्ट कर दिया जाना चाहिए। डीएनए प्रौद्योगिकी में महत्वपूर्ण प्रगति के साथ, अपराध के आरोपी व्यक्तियों की माप के लिए वैकल्पिक तरीकों को लागू किया जा सकता है जो जांच प्रक्रिया को तेज कर सकते हैं। इस संदर्भ में, डीएनए प्रौद्योगिकी (उपयोग और अनुप्रयोग) विनियमन विधेयक, 2019 जो लोकसभा में लंबित है, एक रूपरेखा प्रदान करता है। 1980 में, भारत के विधि आयोग ने कैदियों की पहचान अधिनियम 1920 की जांच की और पाया कि जांच के आधुनिक रुझानों को देखते हुए अधिनियम को संशोधित करने की आवश्यकता है। आपराधिक न्याय प्रणाली के सुधारों पर विशेषज्ञ समिति ने डीएनए, बाल, लार और वीर्य के लिए रक्त के नमूने जैसे डेटा के संग्रह के प्राधिकरण के लिए मजिस्ट्रेट को सशक्त बनाने के लिए कैदियों की पहचान अधिनियम 1920 में संशोधन की सिफारिश की। यह बिल निजता के अधिकार के साथ-साथ समानता के अधिकार का उल्लंघन करने की प्रवृत्ति को आकर्षित करता है। बिल के कुछ प्रावधान व्यक्तियों के व्यक्तिगत डेटा के संग्रह की अनुमति देते हैं जो किसी व्यक्ति के निजता के अधिकार का उल्लंघन करते हैं जिसे सर्वोच्च न्यायालय द्वारा मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी गई थी।यह कानून के अनुच्छेद 14 की आवश्यकताओं को निष्पक्ष और उचित और कानून के तहत समानता पर भी चोट है। डेटा न केवल दोषी से बल्कि जांच में सहायता के लिए किसी अन्य व्यक्ति से भी एकत्र किया जा सकता है। बिल 75 वर्षों तक डेटा को बनाए रखने की अनुमति देता है और इसे किसी अपराध के लिए गिरफ्तार किए गए व्यक्ति के अंतिम निर्वहन पर ही हटाया जाएगा। जांच के लिए संभावित उपयोग के आधार पर केंद्रीय डेटाबेस में डेटा का प्रतिधारण, भविष्य में, आवश्यकता और आनुपातिकता मानकों को पूरा नहीं कर सकता है। एनसीआरबी डेटा के प्रतिधारण के लिए केंद्रीय भंडार होगा और इसे अन्य कानून प्रवर्तन एजेंसियों के साथ साझा किया जा सकता है। यह पेश किए गए कानून के दुरुपयोग के लिए ढेर सारे विकल्प बनाता है। जैविक नमूनों का संग्रह इस अपवाद को जोड़ता है कि ऐसे नमूने जबरन एकत्र किए जा सकते हैं यदि अपराध महिलाओं और बच्चों के खिलाफ निर्देशित किया जाता है। उदाहरण के लिए, यह किसी महिला के खिलाफ जांच के नाम पर चोरी हो सकती है जिसके आधार पर दोषी के जैविक नमूने एकत्र किए जा सकते हैं। ऐसा प्रावधान उन व्यक्तियों के बीच कानून की समानता का उल्लंघन करता है जिन्होंने एक पुरुष और एक महिला से कोई वस्तु चुराई है। डेटा एकत्र करने के लिए अधिकृत अधिकारी के स्तर को कम करके व्यक्ति को मनमाने ढंग से हिरासत में लेने से बचाने के लिए कई सुरक्षा उपायों को कमजोर कर दिया गया है। आपराधिक प्रक्रिया (पहचान) विधेयक, 2022 के संबंध में तर्क डेटा सुरक्षा के संबंध में लोगों की सबसे बड़ी चिंता को उजागर करते हैं। यही कारण है कि विशेषज्ञ नागरिकों को राज्य द्वारा निगरानी के व्यापक और मुक्त दायरे से बचाने के लिए संसद में एक मजबूत डेटा संरक्षण विधेयक पेश करने की वकालत करते हैं।

अभिव्यक्ति

देश में अवैध अतिक्रमण की बढ़ती बीमारी

डॉ. ओ.पी. त्रिपाठी

देश की राजधानी दिल्ली सहित देशभर के हर छोटे-बड़े शहर में अवैद्य अतिक्रमण का रोग तेजी से फैल रहा है। दिल्ली में तो हालात दिन-ब-दिन बिगड़ते ही जा रहे हैं। विडंबना यह है कि जब अवैद्य अतिक्रमण को हटाने के लिये स्थानीय प्रशासन द्वारा कार्यवाही की जाती है, तो इस पर राजनीति शुरू हो जाती है। ताजा घटनाक्रम दिल्ली का है। जहां अवैद्य अतिक्रमण को हटाने के लिये प्रशासन ने बुलडोजर चलाया तो बात शीर्ष अदालत तक पहुंच गई। अदालत ने यथास्थिति बरकरार रखने का हुक्म सुनाया है। लेकिन अहम सवाल यह है कि देशभर में अवैद्य अतिक्रमण क्यों बढ़ता जा रहा है? वो कौन लोग हैं जो अवैद्य अतिक्रमण करने वालों को संरक्षण देते हैं? क्या कारण है कि अवैद्य अतिक्रमण पर कार्यवाही करते ही अदालत एकदम सक्रिय हो जाती है? सवाल यह भी है कि क्या अवैद्य अतिक्रमण का कोई स्थायी उपाय हमारे पास क्यों नहीं है? सवाल बहुत सारे हैं, लेकिन उनका जवाब किसी के पास नहीं हैं। और जिन सवालों का जवाब है भी उस पर जिम्मेदार लोग मुंह बंद रखना ही बेहतर मानते हैं। मजबूरी के साथ ही साथ अवैद्य अतिक्रमण का मुद्दा राजनीति से भी प्रेरित है। बात अगर देश की राजधानी दिल्ली की कि जाए तो शायद ही कोई ऐसा इलाका या बस्ती हो, जहां अतिक्रमण नहीं हुआ हो। एक दर्जन से ज्यादा इलाकों में तो जबरदस्त अवैध कब्जा है। इसकी वजह से यहां आना जाना मुश्किल है। ये वही अतिक्रमण हैं, जिसकी वजह से दिल्ली के कई इलाकों में भीषण जाम लगती है। अगर ऐसे इलाकों में कोई हादसा हो जाए, तो जान बचाना मुश्किल हो जाएगा। यहां एंबुलेंस नहीं जा सकतीं। फायर ब्रिगेड की गाड़ियां नहीं जा सकतीं। किसी रेस्क्यू ऑपरेशन को अंजाम देना मुश्किल है। ऐसा कई मामलों में देखा भी गया है। देश के लिए अतिक्रमण कितनी बड़ी परेशानी का कारण है,ये कितना बड़ा रोग बन चुका है, इसका अंदाजा आप देश की सबसे बड़ी अदालत सुप्रीम कोर्ट की दो सख्त टिप्पणियों से लगा सकते हैं। जुलाई 2021 में सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि अतिक्रमण हटाने की जिम्मेदारी राज्य सरकारों की है। ये न्यायपालिका का काम नहीं है। राज्य सरकारें तत्काल प्रभाव से अतिक्रमण हटाएं। इस आदेश का कितना पालन हुआ, ये बताने और जताने की जरूरत नहीं है। इसी तरह दिसंबर 2021 में उच्चतम न्यायालय को यहां तक कहना पड़ा कि अवैध कब्जों की वजह से देश के बड़े शहर स्लम यानि झुग्गी-झोपड़ियों में तब्दील हो गए हैं। देश का शायद ही कोई राज्य होगा, जहां अवैध निर्माण नहीं होंगे। यह तो खुद भारत सरकार की एजेंसियों का पुराना खुलासा है कि 60 फीसदी से अधिक राजधानी में अवैध अतिक्रमण हैं। यह आंकड़ा अब बढ़ गया होगा, क्योंकि अवैध निर्माण औसत दिल्लीवाले की फितरत है। यहां तो जंगलों, रक्षा मंत्रालय, कृषि-भूमि और आम फुटपाथ पर कब्जे करके बहुमंजिला इमारतें बना ली गई हैं। ओखला में यमुना रिवर बेड पर ही चार मंजिला इमारतें बना ली गई हैं। कल कुछ त्रासदी होगी, तो सरकार जिम्मेदार होगी और मुआवजा देगी। दिल्ली में घर हो या दुकान अथवा फैक्टरी हो, बिना अवैध निर्माण गुजारा संभव ही नहीं है। राजधानी दिल्ली का विश्वविख्यात सौंदर्य है-लुटियंस जोन। इस क्षेत्र में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और संसद भवन के अलावा कैबिनेट मंत्री, न्यायाधीश, सांसद, वरिष्ठ नौकरशाह और कुछ सैन्य अधिकारी विशालकाय बंगलों में रहते हैं। फिलहाल राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के अधिकृत आवासों की बात नहीं करते, लेकिन दूसरे आवासीय बंगलों में एक भी ऐसा नहीं होगा, जहां अवैध ढांचा न बनाया गया हो। भारत सरकार ने लोकसभा में जो आंकड़े पेश किये थे, उनके मुताबिक देश में 32 लाख 77 हजार 591 एकड़ फॉरेस्ट लैंड पर अतिक्रमण हो चुका है। डिफंस की 9 हजार 375 एकड़ जमीनों पर अवैध कब्जा है। रेलवे की 2012 एकड़ जमीनों पर अतिक्रमण स्थापित हो चुका है। दिल्ली के 964 सरकारी पार्क की करीब 70 एकड़ जमीन पर अवैध कब्जा हो गया है। लेकिन नगर निगम अब तक इससे अतिक्रमण हटाने में नाकाम रहा है।

चीन-पाक से निपटने के लिए हमें सीमाओं को मजबूत रखना होगा

सुनील कुमार महला

आज सुबह सुबह तोताराम जी ने दरवाजा खटखटाया। सुबह सुबह तोताराम जी को देखकर हम हैरान रह गए। हम पूछ बैठे :- "भैया जी, आज सुबह सुबह ही घर पर कैसे आना हुआ ? सब कुशल मंगल तो है। तोताराम जी ने उत्तर दिया "भाईसाहब ऐसा वैसा कुछ नहीं है, सब ठीक ठाक है, बस यूं ही चला आया।" इतना सुनकर हमारी सांस में सांस आई। इसी बीच, मेरी धर्मपत्नी ने हम दोनों को गरमागरम चाय ऑफर की और हम दोनों चाय के घूंट पर घूंट गुड़कने लगे। चाय पीते पीते तोताराम जी कहने लगे। उनसे रहा न गया। भले ही कुछ भी कहो, आखिर खासमखास मित्र के समक्ष दिल की बात जुबां पर आ ही जाती है। तोताराम जी जैसे बोलने को आतुर ही थे। हमें ऐसा लगा चाय उनकी अंदरुनी बातों को उगलवा रही थी। तोताराम जी कहने लगे - भैया जी ! आजकल बेचारे लेखकों का बुरा हाल है। ऐरा गैरा नत्थू खैरा संपादक भी बेचारे लेखकों सेखकों को बिना किसी बात के ठीक-ठाक हड़का देता है। भली बुरी कुछ भी सुना देता है। तोताराम जी हमें विस्तार से बताने लगे-वो कल ही हमारे पड़ौसी रामलुभाया जी के लड़के, जो पेशे से एक लेखक हैं, को फोन पर "दैनिक धन-सम्पदा" के एक संपादक जी ने बुरी तरह से हड़का(डॉटना फटकारना) दिया। ऐसे लग रहा था जैसे संपादक जी बेचारे लेखक को बटका पर बटका भर रहे थे। भैया जी, ऐसा बटका तो बटका भी बटके को नहीं भरता होगा। उसे भी अपने बटके पर थोड़ी बहुत शर्म ,हया आती होगी। लेखक भैया ! जब उसने(रामलुभाया जी के लड़के ने) फोन पर "दैनिक धन-सम्पदा" के संपादक महोदय से पिछले पांच छह दिनों से अपने लेख-सेख न छपने की बात की तो, संपादक जी ने उससे कहा - " तुम्हें रोजाना छापने का हमने ठेका थोड़े ही ले रखा है। वैसे भी हमारे पास लेखकों की कमी नहीं है। लेखक तो हमारे पास ऐसे भरे पड़े हैं, जैसे किसी गाड़ी में भेड़-बकरियां भरी पड़ी रहती हैं। तुम्हारे जैसे सैंकड़ों लेखक हमारे अखबार "दैनिक धन-सम्पदा" के लिए बिना किसी मानदेय के फ्री में लिखने-लिखाने को तैयार बैठे हैं। आपको हमें लेख सेख भेजने हैं तो भेजें, नहीं भेजने हैं तो मत भेजें, हमें उचित लगेगा तो छापेंगे, वरना हमारी मर्जी की हम छापें या न छापें। आखिर "दैनिक धन-सम्पदा" अखबार हमारा है। मालिक हम हैं। निर्णय हमारा है। कागज हमारा है। स्याही हमारी है। कम्प्यूटर हमारा है। आपरेटर हमारा है। प्रेस हमारी है। और तो और मर्जी हमारी है। आप हमारी हां में हां मिलाओगे तो छप सकते हो, बाकी तो आप दूसरों को केवल बक सकते हो कि फलां फलां संपादक ने हमें भाव नहीं दिया और छापा नहीं। आप लेखक हैं, तो लेखक ही बने रहिए। आप संपादक थोड़े ही है। आप संपादक बनने का प्रयत्न, प्रयास नहीं कीजिए। संपादक होना कोई हंसी-खेल नहीं है। बहुत चीजों का ध्यान रखना पड़ता है। बहुत पापड़ बेलने पड़ते हैं संपादक होने के लिए। हम अत्यंत स्थापित, ज्ञानी-मानी और धानी संपादक हैं। संपादक होना तो हमें विरासत में मिला है। हमारे दादा, पड़दादा, लकड़दादा, बध्घड़दादा, सध्घड़दादा सभी संपादक थे। आप यूं भी कह सकते हैं कि वे संपादक स्क्वेयर थे। एक बात आप दिमाग में बिठा लो कि छापने, न छापने के मामले में हमारा निर्णय ही अंतिम निर्णय होता है। और जिसके बारे में हमने एकबार यह ठान लिया कि इसे नहीं छापना तो समझो वो व्यक्ति विशेष तो कभी हमारे अखबार में छप ही नहीं सकता है। आप इसे यूं समझो कि एकबार हमने किसी को न छापने का "कमिटमेंट" कर लिया तो हम अपने आप की भी नहीं सुनते। आप स्वयं को लेखक कहते हैं, लेकिन आपमें लेखन और लेखक का धेला तक भी नहीं है। अब आप हमारे "दैनिक धन-सम्पदा" के लिए बीस-पचास ग्राहक तक नहीं ला सकते हैं, हमारे अखबार की सौ दौ कॉपियाँ तक नहीं बिका सकते हैं तो आप काहे के लेखक हैं ? आपका लेखक होना व्यर्थ है, बेकार है।आप सड़े-गले, निठल्ले, बकवास, कभी भी न पढ़े जाने वाले एकदम सिरे से नाकारा, आवारा लेखक हैं। लिखना तो आपको आता ही नहीं है और हम ठहरे जाने-माने पुराने अखबार" दैनिक धन-संपदा" के स्थापित संपादक।

पीपल श्मशान शॉपिंग सेंटर

रामविलास जांगिड़

निजीकरण का शोर चल रहा है। हर तरफ प्राइवेट चीजें खोलने का दौर पल रहा है। इधर पिछवाड़े के एक प्रोफेसर पीपलेश्वर ने अपना विश्वविद्यालय बंद कर दिया है। उन्होंने अपने भैंस तबेले की कमाई से यह विश्वविद्यालय खोला था। उसकी जगह निजी श्मशान घाट खोल लिया है। शहर में जगह-जगह बोर्ड लगा दिए गए हैं। बड़े-बड़े बैनर टांग दिए हैं- मरने का सबसे बेहतरीन स्थान। पीपल छाप श्मशान सेंटर। शहर के बीचों-बीच। प्राइम लोकेशन पर। ऑनलाइन बुकिंग की सुविधा। गर्मियों के मौसम में एक बुकिंग पर दूसरा मुर्दा एकदम फ्री! कोई छुपा हुआ चार्ज नहीं! आधे खर्चे में पूरा फैमिली पैक! स्विमिंग पूल, फव्वारे, शॉपिंग मॉल, सिनेमा, होटल, तमाम तरह की सुविधाओं वाला एक मात्र श्मशान सेंटर! पीपलेश्वर जी पहले शिक्षा की हवा निकाला करते थे। तब वे प्रोफेसर थे। अब वे मुर्दों की हवा निकालने की क्रिया में लग गए हैं। इधर शिक्षा का मामला पानी में बैठ गया है। अगर स्कूलों को श्मशान घाट भी कह दें, तो कोई एतराज नहीं होना चाहिए। अब श्मशान घाटों का मामला अपनी रफ्तार पकड़ गया है। अब हर मुर्दा खटाक से जलना चाहता है। अब मुर्दा फूंकना एक लवली इवेंट है। बच्चों की अपनी जिदें है साहब! मुर्दा भी फूंक दिया और टूरिज्म भी कर लिया। दो घंटे के मुर्दा फूंकन कार्यक्रम में हर कोई रोमांच और मनोरंजन चाहते हैं। इन्हीं बातों को देखकर प्रोफेसर पीपलेश्वर ने अपना निजी श्मशान घाट खोल लिया था। यहां पर ऊंचे लोग ऊंचे दामों में जलना पसंद करते हैं। मार्केट में बड़ा कंपटीशन है। समाज में अपने ढंग की बातें हैं। अरे! उनसे क्या बात करें? उन्होंने तो अपने मुर्दे बाप को खेजड़ी वाले गंवई मुर्दा श्मशान में जलाया था। हम ऐसे नहीं है। हमने विक्की के पापा तक को प्राइवेट श्मशान में भर्ती कराया था। इधर प्राइवेट श्मशान घाटों का अपना एक करंट है, जो हर एक अमीर के भीतर पल रहा है।

जूनियर स्पीड चैस 2022 - निहाल सरीन क्वार्टर फाइनल में पहुंचे

नई दिल्ली। हर वर्ष की तरह इस बार भी जूनियर स्पीड चैस शतरंज अब रोमांचक मोड पर पहुँचने लगी है । चेस डॉट कॉम पर ऑनलाइन खेले जाने वाली इस लीग में दुनिया के लगभग सभी बेहतरीन जूनियर खिलाड़ी भाग लेते है और पिछले बार के विजेता भारत के निहाल सरीन इस बार भी बेहतरीन खेल दिखाते हुए अंतिम 8 में जगह बनाने में कामयाब रहे है । उन्होने प्री क्वार्टर फ़ाइनल में हमवतन अरोण्यक घोष को पराजित 19.5-11.5 के स्कोर से पराजित किया । स्पीड चैस के नियमानुसार सबसे पहले दोनों के बीच पहले सेट मे 5 मिनट + 1 सेकंड के कुल 10 मुक़ाबले हुए जिसमें निहाल नें 6.5-3.5 से बढ़त बना ली तो इसके बाद हुए 3 मिनट + 1 सेकंड के 7 मुकाबलों में निहाल नें 5.5-1.5 से दूसरा सेट जीतकर कुल बढ़त को 12-5 कर लिया हालांकि इसके बाद तीसरे सेट में अरोण्यक नें 3 मिनट + 1 सेकंड के कुल 13 मुकाबलों में अच्छा खेल दिखाते हुए 6.5-6.5 से बराबरी हासिल की पर निहाल ओवर ऑल 19.5-11.5 से मुक़ाबला जीत चुके थे। अब निहाल क्वाटर फाइनल में चीन के क्रिस्टोफर यो से टकराएँगे जिन्होने इससे पहले भारत के आर प्रग्गानंधा को 16.5-13.5 से पराजित किया है ।

राष्ट्रीय घुड़सवारी चैंपियनशिप रविवार से मेरठ में

नयी दिल्ली। राष्ट्रीय घुड़सवारी चैंपियनशिप (इवेंटिंग) 24 अप्रैल से मेरठ के आरवीसी सेंटर एवं कॉलेज में आयोजित की जाएगी। भारतीय घुड़सवारी महासंघ (ईएफआई) ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।यह चैंपियनशिप एक मई तक चलेगी और यह एशियाई खेलों के लिये अभ्यास प्रतियोगिता भी होगी।

इवेंटिंग घुड़सवारी की ऐसी स्पर्धा है जहां एक घोड़ा और उसका सवार ड्रेसेज, क्रॉस कंट्री और शो जंपिंग में अन्य प्रतियोगियों के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करते हैं। प्रतियोगियों को प्रत्येक चरण में पेनल्टी अंक मिलते हैं और आखिर में घोड़े और सवार की जिस जोड़ी को सबसे कम अंक मिलते हैं उसे विजेता घोषित कर दिया जाता है। ईएफआई की यहां जारी विज्ञप्ति में महासंघ के संयुक्त सचिव लेफ्टिनेंट कर्नल एमएम रहमान ने कहा, ''राष्ट्रीय घुड़सवारी चैंपियनशिप एक ऐसा आयोजन है जहां नवोदित खिलाड़ियों को अपना कौशल दिखाने का मौका मिलता है। यह चीन के हांगजो में होने वाले एशियाई खेलों में देश का प्रतिनिधित्व करने वाले घुड़सवारों के लिये भी महत्वपूर्ण है।''

गौरव गिल सहित शीर्ष ड्राइवर भाग लेंगे 'साउथ इंडिया रैली' में

चेन्नई। सात बार के राष्ट्रीय चैम्पियन गौरव गिल यहां 22 से 24 अप्रैल तक होने वाली एमआरएफ 45वीं 'साउथ इंडिया रैली' में भाग लेने वाले ड्राइवरों में आकर्षण का केंद्र होंगे। इस प्रतियोगिता से नये सत्र की शुरूआत होगी। प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार यह प्रतियोगिता साथ

ही 'ब्लू बैंड स्पोर्ट्स एफएमएससीआई नेशनल रैली चैम्पियनशिप 2022' के पहले दौर के तौर पर भी काम करेगी जिसमें एक नया प्रोमोटर होगा।

तीन दिन की इस रैली में 48 प्रविष्टियां आयी हैं जिसमें 2021 के ओवरआल राष्ट्रीय चैम्पियन हिमाचल के आदित्य ठाकुर (सह ड्राइवर वीरेंद्र सिंह) भी शामिल हैं। साथ ही शीर्ष ड्राइवरों में दिल्ली के गिल के अलावा बेंगलुरू के कर्णा कादुर और केरल के फाबिद अहमर भी इसमें शिरकत करेंगे।

मुंबई इंडियंस की लगातार 7वीं हार

धोनी ने चेन्नई को दिलाई जीत

मुंबई। मुंबई इंडियंस और चेन्नई सुपर किंग्स के बीच आईपीएल 2022 का 33वां मैच मुंबई के डॉ. डीवाई पाटिल स्टेडियम में खेला गया। चेन्नई सुपर किंग्स ने टॉस जीतकर गेंदबाजी का फैसला किया है। मुंबई इंडियंस की टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए तिलक वर्मा की अर्धशतकीय पारी के बदौलत चेन्नई सुपर किंग्स के सामने 156 रन का लक्ष्य दिया। जवाब में चेन्नई की टीम ने के लिए धोनी ने एक बार फिर फिनिशर की भूमिका निभाई और आखिरी गेंद पर चौका लगाकर टीम को 3 विकेट से जी दिलाई।

मुंबई इंडियंस (पहली पारी)

मुंबई की शुरूआत बेहद खराब रही। चेन्नई के तेज गेंदबाज मुकेश चौधरी ने पहली ही ओवर में रोहित शर्मा और ईशान किशन को शून्य पर ही पवेलियन का रास्ता दिखा दिया। मुंबई को तीसरा झटका भी मुकेश चौधरी ने दिया। मुकेश चौधरी ने डिवाल्ड ब्रेविस को 4 रन पर आउट करके चेन्नई सुपर किंग्स को सफलता दिलाई। टीम को मुश्किल परिस्थिति से निकालने की कोशिश कर रहे सूर्यकुमार यादव को आउट कर मिचेल सैंटनर ने चेन्नई को चौथी सफलता दिलाई। सुर्यकुमार 21 गेंदों पर 3 चौके और एक छक्के की मदद से 32 रन बनाकर आउट हुए। मुंबई को 5वां झटका ऋतिक शौकीन के रुप में लगा। शौकीन को 25 रन बनाकर ब्रावो की गेंद का शिकार बने।

इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद पहली बार बल्लेबाजी कर रह पोलार्ड 9 गेंदों पर एक चौके और एक छक्के की

मदद से 14 रन बनाकर थीक्षाना की गेंद पर आउट हो गए।

इस मैच में एक बार फिर मुंबई इंडियंस ने डेनियल सैम्स को मौका दिया। बल्लेबाजी में वह 5 रन बनाकर ड्वेन ब्रावो की गेंद पर आउट हो गए।

मुंबई इंडियंस के लिए तिलक वर्मा ने 43 गेंदों पर 51 रन की पारी खेलकर टीम को सम्मानजनक स्कोर तक पहुंचाया। उन्होंने अपनी पारी में 3 चौके और 2 छक्के लगाए।

चेन्नई सुपर किंग्स (दूसरी पारी)

मुंबई की तरह चेन्नई ने भी पहली ही ओवर में विकेट गंवा लिया। ओपनर ऋतुराज गायकवाड़ तेज गेंदबाज डेनियल सेम्स की गेंद को सीधे तिलक वर्मा के हाथ में दे मारी। इसके बाद मिशेन सेंटनर को भी 11 के स्कोर पर सेम्स ने पवेलियन का रास्ता दिखा दिया। चेन्नई को तीसरा झटका रॉबिन उथप्पा के रूप में लगा। उथप्पा को ऋतिक शौकीन ने अपनी ही गेंद पर कैच आऊट किया। चेन्नई के लिए शिवम दुबे ने आते ही आकर्षक शॉट लगाया लेकिन वह 13 रन बनाकर चलते बने। ईशान किशन ने उनकी बेहतरीन कैच पकड़ी।

चेन्नई को थोड़ा सहारा अंबाति रायुडू से मिला था। अंबाति ने डेनियल सेम्स की गेंद पर पोलार्ड को कैच थमाने से पहले 35 गेंदों में दो चौके और तीन छक्कों की मदद से 40 रन बनाए। चेन्नई के कप्तान रविंद्र जडेजा आज कुछ खास कमाल नहीं कर पाए। फील्डिंग करते दो कैच गिराने वाले जडेजा तीन रन बनाकर पवेलियन लौट गए। इसके बाद धोनी और ड्वेन प्रियटोरिस ने दर्शकों के दिल की धड़कन बढ़ा दी। प्रिटोरियस 14 गेंदों पर 28 रन बनाकर आउट हुए। उन्होंने 2 चौके और एक छक्का लगाया। धोनी ने आखिरी गेंद पर चौका मारकर टीम को जीत दिला दी। धोनी ने 13 गेंदों पर 3 चौके और एक छक्के की मदद से 28 रन की मैच जिताऊ पारी खेली।

धोनी के सामने नतमस्तक हुए जडेजा, फोटो सोशल मीडिया पर वायरल

लिवरपूल। चेन्नई सुपर किंग्स को धोनी ने आखिरी गेंद पर चौका लगाकर रोमांचक मैच में जीत दिला दी। इस मैच में धोनी एक बार फिर अपने पुराने अंदाज में फिनिशर की भूमिका निभाते हुए दिखाई दिए। चेन्नई को आखिरी ओवर में जीत के लिए 17 रन चाहिए थे। मुंबई इंडियंस के कप्तान रोहित शर्मा ने गेंद उनादकट को थमाई। पर जब सामने धोनी का बल्ला चलता हो तो किसी भी गेंदबाज की नहीं चलती। इस जीत के बाद चेन्नई के कप्तान रविंद्र जडेजा धोनी के आगे नतमस्तक हो गए।

चेन्नई को जीत के लिए आखिरी गेंद पर 4 रन की जरूरत थी। स्ट्राईक पर धोनी ने चौका लगाकर चेन्नई की टीम को इस सीजन दूसरी जीत दिलाई। जीत दिलाने के बाद जब धोनी वापिस जाने लगे तब टीम के कप्तान रविंद्र जडेजा धोनी के सामने सम्मान में झुक गए। जडेजा ने सबसे पहले अपनी टोपी उतारी और उसके बाद झुककर सम्मान में हाथ सीने पर रखा। उनकी यह फोटो सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रही है। गौर हो कि चेन्नई सुपर किंग्स यह इस सीजन में दूसरी जीत है। चेन्नई को पहले चार मैचों में लगातार हार का सामना करना पड़ा था। जिसके बाद टीम ने वापसी करते हुए 3 मैचों में 2 मैच अपने नाम किए। इस जीत के साथ चेन्नई सुपर किंग्स के 4 अंक हो गए हैं।

सर्बिया ओपन : पहला सेट गंवाने के बाद जोकोविच की शानदार वापसी, सेमीफाइनल में पहुंचे

बेलग्रेड। विश्व में शीर्ष रैंकिंग के खिलाड़ी नोवाक जोकोविच ने पहला सेट गंवाने के बाद अच्छी वापसी करके सर्बिया ओपन टेनिस टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में जगह बनायी। जोकोविच ने मियोमीर केकमानोविच को 4-6, 6-3, 6-3 से हराया। यह उनकी हमवतन सर्बियाई खिलाड़ी के खिलाफ लगातार 10वीं जीत है। सेमीफाइनल में

जोकोविच तीसरी वरीयता प्राप्त कारेन खाचनोव से भिड़ेंगे, जिन्होंने ब्राजील के क्वालीफायर थियागो मोंटेइरो को 7-5, 6-4 से पराजित किया। जोकोविच को इससे पहले बुधवार को भी हमवतन लासलो जेरे पर 2-6, 7-6 (6), 7-6 (4) से जीत के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ा था। इससे पहले गुरुवार को दूसरी वरीयता प्राप्त आंद्रे रुबलेव ने जिरी लाचेका को 4-6, 7-6 (1), 6-2 से और फैबियो फोगनिनी ने अलयाज बेडेने को 6-2, 6-3 से हराकर क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया।

धोनी की धमाकेदार पारी पर जडेजा का बयान, वह अब भी रनों का भूखा है

मुंबई। महेंद्र सिंह धोनी अब भी रन बनाने के लिए भूखे हैं और चेन्नई सुपर किंग्स की इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में उम्मीदें बरकरार हैं। कप्तान रविंद्र जडेजा के लिए ये दोनों चीजें ही मायने रखती हैं। चेन्नई ने अब तक सात मैचों में से केवल दो में जीत दर्ज की। इनमें मुंबई इंडियन्स के खिलाफ गुरुवार की रात तीन विकेट से जीत भी शामिल है। इस जीत के नायक धोनी रहे जिन्होंने आखिरी गेंद पर विजयी चौका लगाया। धोनी की 13 गेंदों पर नाबाद 28 रन की पारी से चेन्नई ने अपने चिर प्रतिद्वंद्वी पर यादगार जीत दर्ज की।

जडेजा ने मैच के बाद कहा, 'यह बहुत अच्छा है कि वह अब भी (न और जीत के लिए) भूखे हैं। उनकी लय अब भी बनी हुई है। इसे देखकर हम शांतचित रहते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि यदि वह आखिरी ओवर तक क्रीज पर हैं तो वह हमारे लिए मैच जीतेंगे।' उन्होंने कहा, 'हम तनाव में थे लेकिन हमें विश्वास था कि वह (धोनी) क्रीज पर मौजूद हैं और वह मैच का सफल अंत करेंगे। उन्होंने भारत के लिए और आईपीएल में कई मैच जिताए हैं और हम जानते थे कि वह मैच का सफल अंत करेंगे।'

उमरान मलिक बोले- आरसीबी के खिलाफ इस खिलाड़ी को आउट करना है लक्ष्य

मुंबई। उमरान मलिक ने कम समय में बड़ा नाम कमा लिया है और एक लंबा सफर तय करने के लिए समर्थित है। जम्मू-कश्मीर का रहने वाला दाएं हाथ का यह तेज गेंदबाज की हर मैच के साथ नियंत्रण और सटीकता बेहतर होती जा रही है। सनराइजर्स हैदराबाद के तेज गेंदबाज ने पंजाब किंग्स के खिलाफ अपनी आखिरी पारी में चार विकेट लिए और अपने आगामी मैच में इसी तरह का या इससे भी बेहतर प्रदर्शन करने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं। उमरान मलिक ने कहा कि उनका लक्ष्य आगामी मैच में विराट कोहली को आउट करना है। युवा खिलाड़ी ने एक टाक शो के दौरान बातचीत में कहा कि वह लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ मैच के दौरान राहुल को आउट नहीं कर सके, उन्होंने कोहली को आउट करने के लिए

दृढ़ संकल्प किया। केएल राहुल को आउट करना चाहता था। मैंने अपने पिछले मैच में इसे आजमाया था। हमारा अगला मैच आरसीबी के खिलाफ है और मेरा लक्ष्य कोहली भाई को आउट करना है। मैं इन दोनों खिलाड़ियों (केएल राहुल और विराट कोहली) का बहुत बड़ा प्रशंसक हूं। मैं केवल अपना 100 प्रतिशत दे सकता हूं, बाकी भगवान के हाथ में है।

मलिक की यात्रा वास्तव में प्रेरणादायक रही है क्योंकि सनराइज़र्स ने उन्हें पिछले साल केवल टी नटराजन के लिए एक अल्पकालिक प्रतिस्थापन के रूप में चुना था जिन्होंने कोविड-19 हुआ था। तेज गेंदबाज ने अपनी क्षमता के साथ पर्दे पर धमाका किया और यहां तक ????कि आईपीएल 2022 मेगा नीलामी से पहले सनराइजर्स द्वारा बनाए रखा गया था।

पिछले साल आरसीबी का नेतृत्व करने वाले कोहली ने भी एक मैच में मलिक का सामना करने के बाद उनकी सराहना की थी। उन्होंने कहा था कि जब भी आप इस तरह की प्रतिभा देखते हैं, तो आप उन पर नजर रखेंगे और सुनिश्चित करेंगे कि आप उनकी क्षमता को अधिकतम करें।

विश्व मुक्केबाजी चैंपियनशिप के लिये भारतीय महिला टीम तुर्की रवाना

नई दिल्ली। टोक्यो ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता लवलीना बोरगोहेन की अगुवाई में भारतीय महिला मुक्केबाजी टीम विश्व चैंपियनशिप की तैयारियों के लिए विशेष अभ्यास शिविर में भाग लेने के लिये तुर्की रवाना हुई। विश्व महिला मुक्केबाजी चैंपियनिशप छह से 21 मई के बीच इस्ताम्बुल में आयोजित की जाएगी।

भारतीय टीम इससे पहले इस्ताम्बुल में ही पांच मई तक अभ्यास शिविर में भाग लेगी। भारतीय मुक्केबाजी महासंघ की यहां जारी विज्ञप्ति के अनुसार भारतीय टीम शिविर में कजाकस्तान, तुर्की, अल्जीरिया, पनामा, लिथुआनिया, मोरक्को, बुल्गारिया, सर्बिया, डोमिनिका गणराज्य और आयरलैंड जैसे देशों के मुक्केबाजों के साथ अभ्यास करेगी। विश्व चैंपियनशिप के

लिये भारतीय महिला टीम इस प्रकार है : नीतू (48 किग्रा), अनामिका (50 किग्रा), निकहत जरीन (52 किग्रा), शिक्षा (54 किग्रा), मनीषा (57 किग्रा), जैस्मीन (60 किग्रा), परवीन (63 किग्रा), अंकुशिता (66 किग्रा), लवलीना (70 किग्रा), स्वीटी (75 किग्रा), पूजा रानी (81 किग्रा), नंदिनी (81 किग्रा से अधिक)।

इंटरनेशनल रिटायरमैंट पर पोलार्ड ने चूमा 'गुरु ब्रावो' का माथा, मुंबई टीम में दिलाई थी जगह

मुंबई। डीवाई पाटिल स्टेडियम में जब मुंबई इंडियंस और चेन्नई सुपर किंग्स एक-दूसरे के आमने-सामने थी तो यह मौका किरोन पोलार्ड के लिए काफी खास था। पोलार्ड ने बीती बुधवार को ही अचानक इंटरनेशनल क्रिकेट को अलविदा बोल दिया था। ऐसे में मैच के दौरान जब उनके पुराने साथी डीजे ब्रावो उनके सामने आए तो वह अपनी भावनाओं को छुपाकर नहीं रख पाए। उन्होंने पिच पर ही ब्रावो का माथ चूमा, जैसे वह उनका शुक्रिया अदा कर रहे हों। बता दें कि पोलार्ड का करियर संवारने में ब्रावो का अहम योदगान रहा है।

दरअसल, ब्रावो 2008 और 2010 में मुंबई इंडियंस के लिए खेले थे। वह जब चेन्नई सुपर किंग्स के साथ जुड़े तो उनकी रिप्लेसमेंट के लिए मुंबई प्रबंधन कोशिशों में लगा हुआ था। ब्रावो ने एक शो में बताया था कि उस समय मुंबई को मैंने पोलार्ड का

नाम सुझाया था। पोलार्ड तब किसी क्लब के लिए खेल रहे थे। तब मैंने ड्वेन स्मिथ का नाम लिया। अगले साल जब चैम्पियंस लीग आई तो मैं राहुल संघवी के पास गया। बोला- पोलार्ड यहां है। उससे करार कर सकते हो। उस वक्त राहुल संघवी और रोबिन सिंह मुंबई छोड़कर हैदराबाद गए। उन्होंने पोलार्ड को दो लाख यूएस डॉलर का कॉन्ट्रैक्ट ऑफर किया। 19 साल के पोलार्ड यह देखकर हैरान थे। उन्होंने बाद में मुझसे पूछा कि क्या तुम सीरियस थे।

दोनों की बॉन्डिंग इतनी मजबूत है इस बात का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि एक ओवर में गेंदबाजी कर रहे ब्रावो ने अपने फॉलोथ्रू में गेंद पकड़कर पोलार्ड की ओर दे मारी। पोलार्ड सतर्क खड़े थे उन्होंने गेंद को बल्ले से साइड कर दिया। यह सीन देखकर फैंस को लगा कि पोलार्ड गुस्सा करेंगे लेकिन उन्होंने कुछ नहीं कहा बल्कि ब्रावो का माथा चूमकर निकल गए।

एक ही मैच में पहनी थी 400 नंबर की टीशर्ट-आईपीएल 2018 के दौरान पोलार्ड और ब्रावो एक ही मैच में 400 नंबर की टीशर्ट में दिखे तो हर तरफ इसका कारण जानने के लिए चर्चा शुरू हो गई थी। पता चला कि पोलार्ड की ट्वंटी-20 में 400 मुकाबले पूरे हुए थे तो ब्रावो के 400 विकेट। ऐसे में दोनों ने इसको सेलिब्रेट करने के लिए यह काम किया था।

आईपीएल 2022 : मोहम्मद कैफ बोले- पंत के कारण निखरी कुलदीप यादव की गेंदबाजी

मुंबई। पूर्व क्रिकेटर मोहम्मद कैफ आईपीएल 2022 में कुलदीप यादव की गेंदबाजी देखकर काफी खुश हैं। पिछले साल कोलकाता की ओर से खेलने वाले कुलदीप को ज्यादा मौके मिल नहीं पाए थे। लेकिन इस बार आईपीएल ऑक्शन में वह दिल्ली कैपिटल्स के साथ जुड़े और इस सीजन में अपनी गेंदबाजी से सबको हैरान कर गए। कुलदीप अभी टूर्नामेंट के 6 मैचों में 13 विकेट ले चुके हैं। उनसे आगे युजी चहल हैं जिनके नाम पर 17 विकेट हैं।कुलदीप यादव की गेंदबाजी पर कैफ ने कहा कि वह पहले से ज्यादा विश्वास में दिख रहे हैं। कुलदीप की इस सफलता का श्रेय दिल्ली कैपिटल्स के कप्तान ऋषभ पंत को जाता है। पंत के कॉन्फिडेंस देने के कारण ही कुलदीप बढ़िया प्रदर्शन कर पा रहे हैं। कैफ ने कहा- बहुत कम लोगों को पता है लेकिन ऋषभ पंत काफी भावुक इंसान हैं। वो दिल से सोचते हैं। उन्हें पता है कि अपने प्लेयर्स को कैसे यूज करना

है। मैं पिछले साल टीम में था। वो ऋषभ पंत ही थे जिन्होंने आवेश खान को बेहतर गेंदबाज बनाया था और अब कुलदीप यादव को तैयार कर रहे हैं।कैफ ने कुलदीप के लिए कहा कि उन्हें हर बार विकेट के लिए जाना चाहिए। भले ही उनकी गेंदों पर कितने भी रन क्यों न बनें, उन्हें अपनी लय को पकड़े रखना होगा। इस सीजन में वह काफी विश्वास में दिख रहे हैं। इसी कारण उनसे यह प्रदर्शन बाहर आ रहा है। बता दें कि कुलदीप यादव ने भी बीते दिनों खुद में आए बदलाव का श्रेयस रिषभ पंत को दिया था। उन्होंने कहा कि पंत ने काफी सपोर्ट किया। इसी वजह से वो इतनी अच्छी गेंदबाजी कर रहे हैं।

फिर जागा इमरान का भारत प्रेमः पाकिस्तान के पूर्व पीएम ने की विदेश नीति की तारीफ

लाहौर। पाकिस्तान के पूर्व पीएम इमरान खान ने एक बार फिर भारत की तारीफ की है। लाहौर में आयोजित एक रैली में उन्होंने भारत की विदेश नीति की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह उसके लोगों की भलाई के लिए है।

हाल ही में पाक नेशनल असेंबली में अविश्वास प्रस्ताव पारित होने के कारण पीएम पद छोड़ने को मजबूर हुए इमरान खान ने कहा कि पाकिस्तान सरकार की विदेश नीति अपने लोगों की भलाई की बजाए दूसरों की भलाई का काम करती है। इमरान खान ने कहा कि भारत अमेरिका का रणनीतिक भागीदार है और वह रूस से तेल आयात करता है। भारत का कहना है कि उसके फैसले अपनी जनता की भलाई पर आधारित होते हैं, लेकिन पाकिस्तान की विदेश नीति दूसरों के कल्याण के लिए है। इससे पहले पिछले माह खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में एक रैली को संबोधित करते हुए भी पूर्व पाक पीएम ने भारत की जमकर तारीफ की थी। उन्होंने भारतीयों को खुद्दार कौम बताया था। लाहौर की रैली में पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ पार्टी के प्रमुख इमरान ने कहा कि वह हमेशा पड़ोसी देश की प्रशंसा करते हैं, क्योंकि उनकी हमेशा एक स्वतंत्र विदेश नीति रही है। आज भारत अमेरिकी गठबंधन में है। वह क्वाड में और वह कहता है कि वह तटस्थ है। वह पाबंदी के बावजूद रूस से तेल आयात कर रहा है, क्योंकि वह कहता है कि इसमें उसके लोगों की भलाई है।

ललितपुर जिले में ऑक्सीजन प्लांट में धमाका, दो भारतीयों की मौत, छह घायल

काठमांडू । काठमांडू के निकट ललितपुर जिले के एक औद्योगिक क्षेत्र में एक ऑक्सीजन संयंत्र में हुए विस्फोट में दो भारतीय नागरिकों की मौत हो गई और छह अन्य घायल हो गए। पुलिस ने बताया कि विस्फोट पाटन औद्योगिक क्षेत्र के सागरमाथा

ऑक्सीजन प्लांट में सुबह उस समय हुआ जब मजदूर सिलेंडर में गैस भर रहे थे। विस्फोट ने ऑक्सीजन संयंत्र की जस्ता छत को भी बर्बाद कर दिया और बगल की इमारतों की खिड़कियां तोड़ दीं। विस्फोट में बिहार के पश्चिमी चंपारण जिले के रतनपुरवा गांव निवासी 45 वर्षीय बृज महतो की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि एक अन्य भारतीय नागरिक 25 वर्षीय राज कुमार महतो की ललितपुर के अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई। नेपाल के गृह मंत्री बालकृष्ण खंड ने पुलिस को बचाव कार्य करने और दुर्घटना की जांच करने का निर्देश दिया है।

बोइंग संचालनात्मक प्रदर्शन के लिए गोवा में दो सुपर होर्नेट लड़ाकू विमान उड़ाएगा

वाशिंगटन । दुनिया की सबसे बड़ी एअरोस्पेस कंपनी बोइंग अपने दो सुपर होर्नेट लड़ाकू विमानों को भारतीय नौसेना द्वारा खरीदे जाने से पहले इन गर्मियों में गोवा में उसके संचालनात्मक प्रदर्शन की योजना बना रही है। कंपनी के एक वरिष्ठ कार्यकारी ने यह जानकारी दी है। एफ/ए-18 सुपर होर्नेट के लिए कड़ी पैरवी करने वाले बोइंग इंडिया बिजनेस डेवलेपमेंट के उपाध्यक्ष एलेन गार्शिया ने कहा कि विमान को विशेष रूप से वाहक अभियानों के लिए डिजाइन किया गया है और यह भारतीय नौसेना के विमान वाहक पोतों से उड़ान भर सकता है और भारतीय नौसेना की आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है। गार्शिया ने एक साक्षात्कार में 'पीटीआई-भाषा' से कहा, ''यह 2020 में हमारे सफल स्की-जम्प जांच और व्यापक सिमुलेशन अध्ययनों से साबित हो गया है। साथ ही हम मई और जून में भारत में संचालनात्मक प्रदर्शनों से भी यह साबित करेंगे।''भारत की अपनी रक्षा क्षमताओं को मजबूत करने की योजनाओं के मद्देनजर बोइंग एफ/ए-18 सुपर होर्नेट, पी-8आई, एफ-15ईएक्स, केसी-46 टैंकर को लेकर भारत में रक्षा ग्राहकों के साथ बातचीत कर रहा है।

रूस ने 'कब्रिस्तान' में बदला यूक्रेन का मारियुपोल शहर

सैटलाइट तस्वीरों में दिखीं बस लाशें ही लाशें

मारियुपोल। सैटेलाइट तस्वीरों में युद्धग्रस्त यूक्रेन के मारियुपोल शहर के पास सामूहिक कब्रें दिखाई दे रही हैं। यह तस्वीरें जारी की गयी थीं। मारियुपोल के स्थानीय अधिकारियों ने रूस पर शहर की घेराबंदी के दौरान आम लोगों की हो रही हत्याओं को छिपाने के प्रयास के तहत करीब नौ हजार यूक्रेनी नागरिकों को सामूहिक तौर पर दफनाने का आरोप लगाया। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन द्वारा मारियुपोल की लड़ाई में जीत का दावा करने के कुछ घंटे बाद ही सैटेलाइट की

यह तस्वीरें जारी की गयी हैं। हालांकि, मारियुपोल के एक विशाल स्टील संयंत्र में यूक्रेन के करीब दो हजार सैनिक अभी भी छिपे हुए हैं। सैटेलाइट तस्वीरें उपलब्ध कराने वाली कंपनी मैक्सार टेक्नोलॉजीज ने यह तस्वीरें जारी की हैं। कंपनी के मुताबिक इन तस्वीरों में 200 से अधिक सामूहिक कब्रें दिखाई दे रही हैं। यूक्रेन के अधिकारियों का दावा है कि रूस मारियुपोल शहर में हमले में मारे जा रहे आम नागरिकों को इन्हीं सामूहिक कब्रों में दफन कर रहा है।

जी-20 अध्यक्ष के रूप में भारत की वैश्विक चुनौतियों से निपटने में एक अनूठी भूमिका है : आईएमएफ प्रमुख

वाशिंगटन। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के प्रमुख ने कहा कि 'अगले साल जी-20 देशों के शक्तिशाली समूह के अध्यक्ष के रूप में भारत को समावेशी होने और सभी देशों के साथ सहयोग करने की अपनी लंबी परंपरा का उपयोग करके दुनिया के विभिन्न हिस्सों तक पहुंचकर वैश्विक चुनौतियों को दूर करने के लिए एक अनूठी भूमिका निभानी है।' आईएमएफ की प्रबंध निदेशक क्रिस्टालिना जॉर्जीवा ने आईएमएफ की अंतरराष्ट्रीय मुद्रा और वित्त समिति की अध्यक्ष नादिया काल्वियो के साथ एक संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में यह टिप्पणी की। जॉर्जीवा ने कहा कि भारत के लिए एक विशेष कार्य है कि आईएमएफ में हम कार्रवाई देखने के इच्छुक हैं, और यह कोटा की 16वीं सामान्य समीक्षा है। एक सवाल के जवाब में उन्होंने भरोसा जताया कि भारत के जी-20 का अध्यक्ष रहने से नादिया को उद्देश्य हासिल करने में मदद मिलेगी। भारत जी-20 देशों का अध्यक्ष बनने वाला है, जो 19 देशों और यूरोपीय संघ (ईयू) की सदस्यता वाला एक शक्तिशाली अंतर-सरकारी मंच है। जी-20 का वर्तमान अध्यक्ष इंडोनेशिया है। जॉर्जीवा ने एक के प्रश्न के जवाब में कहा, 'संयोग से यह एक अच्छा क्रम है कि दो बड़ी उभरती अर्थव्यवस्थाएं एक के बाद एक जी -20 की अध्यक्षता कर रही हैं।'' यह देखते हुए कि बहुपक्षवाद पहले के मुकाबले कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गया है, कैल्विनो ने कहा कि जी -20, आईएमएफसी, आईएमएफ और बाकी सभी अंतरराष्ट्रीय मंच और संस्थान वैश्विक चुनौतियों के जवाब में समन्वित कार्रवाई सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

शंघाई में कोरोना ने फिर दिखाया खौफनाक चेहरा

शंघाई। चीन के शंघाई में कोविड-19 से 11 और मरीजों की मौत के बाद बढ़ते जन आक्रोश की खबरों के बीच शहर में लॉकडाउन 26 अप्रैल तक बढ़ा दिया गया है। खबरों के अनुसार, 2.6 करोड़ की आबादी वाले शंघाई में कोरोना वायरस की मौजूदा लहर के दौरान मरने वाले लोगों की संख्या बढ़कर 36 हो गयी है। इसी बीच चीन से एक भयानक वीडियो सामने आया है। इसमें वीडियो में कचरे के बैग में कुत्ते और बिल्लियां को भरा गया है। जो हिलते हुए नजर आ रहे हैं। इस भयावह वीडियो में सड़क के किनारे कूड़े के बड़े-बड़े थैले रखे गए हैं, जिसमें जीवित बिल्लियां भरी पड़ी हैं। वीडियो को ट्विटर पर अपलोड किया गया है। इसके साथ ही ट्वीट करते हुए लिखा है कि शंघाई में 26 मिलियन लोग लॉकडाउन में हैं। ट्वीट में आगे लिखा गया है कि चीन के शंघाई में लोग अपनी बालकनियों से आत्महत्या कर रहे

हैं। वहीं, जो लोग कोविड पॉजिटिव पाए जा रहे हैं, उनके पालतू जानवरों को जिंदा मारा जा है।

शहर में पिछले 24 घंटे में संक्रमण के 17,629 नए मामले

शुक्रवार को जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार, शहर में पिछले 24 घंटे में संक्रमण के 17,629 नए मामले आए जो एक दिन पहले आए मामलों से 4.7 फीसदी कम है। एक मार्च के बाद से शहर में संक्रमण के कुल मामलों की संख्या 4,43,500 हो गयी है। हांगकांग स्थित 'साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट' की शुक्रवार को प्रकाशित खबर के मुताबिक, देशभर में कोविड-19 के 30,813 मरीजों का अस्पतालों में इलाज चल रहा है। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, शंघाई में कोरोना वायरस से 11 मरीजों की मौत हुई थी। इस बीच, शंघाई ने लॉकडाउन की अवधि 26 अप्रैल तक बढ़ा दी है। शहर में लॉकडाउन लगे चौथा हफ्ता चल रहा है।

मालदीव के राष्ट्रपति ने 'इंडिया आउट' कैंपेन को किया बैन, कहा-भारत के खिलाफ बोलना राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा

मालदीव। मालदीव में पिछले कई महीनों से जारी 'इंडिया आउट' कैंपेन के बीच वहां के राष्ट्रपति इब्राहिम मोहम्मद सोलिह ने ऐसे प्रदर्शनों को राष्ट्रीय सुरक्षा का हवाला देते हुए एक आदेश जारी कर प्रतिबंधित कर दिया। 'कई नारों से विभिन्न देशों के खिलाफ नफरत को उकसाने वाले अभियान पर रोक,' के शीर्षक से इस विशेष आदेश को जारी किया गया है।

इसमें खास तौर पर इंडिया आउट कैंपेन का जिक्र किया गया है और कहा गया है कि ऐसे संगठित अभियान का उद्देश्य दोनों देशों के बीच संबंधों और क्षेत्र में शांति और सुरक्षा बनाए रखने के प्रयास को बाधित करना है। राष्ट्रपति सोलिह ने सभी संबंधित अधिकारियों को कानून के उपलब्ध प्रावधानों के तहत कदम उठाकर आदेश को लागू करने को कहा है।

राष्ट्रपति की ओर से आदेश

राष्ट्रपति की ओर से आदेश को धिवेही भाषा में जारी किया गया है। इसमें कहा गया कि देश में तैनात राजनयिकों और राजनयिक मिशनों की सुरक्षा सुनिश्चित करना राष्ट्र का कर्तव्य है। कुछ महीने

पहले भारतीय राजनयिकों को धमकियां मिलने और भारत विरोधी अभियान में तेजी के बाद, भारतीय दूतावास ने अतिरिक्त सुरक्षा का अनुरोध किया था, जिसे सोलिह सरकार ने किया था। सोलिह ने आदेश में कहा कि इस कैंपेन के परिणामस्वरूप मालदीव अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अलग-थलग पड़ सकता है और इससे अन्य देशों के साथ मालदीव के द्विपक्षीय संबंध प्रभावित हो सकते हैं।

मालदीव में महीनों से चल रहा भारत विरोधी अभियान

मालदीव में भारत विरोधी अभियान का नेतृत्व पहले एक सोशल मीडिया कार्यकर्ता ने किया था, लेकिन पिछले दिसंबर में जेल से रिहा होने के बाद से पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल्ला यामीन इसका अहम चेहरा बन गए हैं। बुधवार को राजधानी माले में उनके आवास के बाहर एक बड़ा 'इंडिया आउट' बैनर लटका हुआ भी देखा गया था। पुलिस ने कोर्ट के आदेश पर इसे हटा लिया। दरअसल साल 2013 से 2018 तक के अपने कार्यकाल के दौरान यामीन ने मालदीव की विदेश नीति को चीन की ओर ज्यादा झुकाया। यामीन अब इंडिया आउट अभियान को फिर से हवा देकर अपने चुनावी अभियान में भी जुटे हैं। मालदीव में राष्ट्रपति चुनाव सितंबर 2023 तक होने हैं।

इस्राइलः गाजा में हिंसा तेज, येरूशलम में भी झड़पें, इस्राइली वायुसेना ने किए हवाई हमले

गाजा। इस्राइली वायुसेना और फलस्तीनी उग्रवादियों के बीच सुबह गाजा में गोलाबारी हुई। यह घटना येरूशलम के संवेदनशील पवित्र स्थान पर दोबारा हुई झड़प के बाद हुई, जिससे क्षेत्र में तनाव है। गाजा मोर्चे पर लड़ाई येरूशलम में इस्राइली पुलिस व फलस्तीनियों में झड़प के बाद शुरू हुई। बता दें कि पिछले साल भी इसी तरह का तनाव हुआ था जिसकी परिणति इस्राइल-गाजा युद्ध के रूप में हुई थी। पिछले साल 11 दिनों तक दोनों पक्षों में यह सबसे बड़ी लड़ाई हुई थी। इस सप्ताह गाजा से रॉकेट दागे जाने के बाद महीनों से जारी संघर्ष विराम टूट गया। फलस्तीनी उग्रवादियों ने गाजा पट्टी से इस्राइल की ओर बुधवार और बृहस्पतिवार रॉकेट दागे जिसके बाद इस्राइली विमानों ने समुद्र किनारे बसे हमास शासित क्षेत्र में आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया। इस्राइली सेना ने बताया कि एक रॉकेट इस्राइल के शहर स्डेरोट में गिरा जबकि दूसरा लक्ष्य से पहले ही गाजा में ही गिरा।

इस्राइल ने किए हवाई हमले

इस्राइली लड़ाकू विमानों ने बृहस्पतिवार तड़के मध्य गाजा पट्टी क्षेत्र पर हवाई हमला किया। सोशल मीडिया पर किए गए पोस्ट में धुंए की गुबार दिख रहा है। इस्राइली सेना ने बताया कि उसके विमानों ने गाजा से विमान रोधी मिसाइल दागे जाने के बाद हमास के एक अन्य ठिकाने को भी निशाना बनाया।

बाइडन ने यूक्रेन के शरणार्थियों को अमेरिका में प्रवेश करने में मदद करने के लिए एक नए कार्यक्रम की घोषणा की

वाशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने एक नए कार्यक्रम 'यूनाइटेड फॉर यूक्रेन' की घोषणा की। यह कार्यक्रम रूस के आक्रमण से भागने वाले यूक्रेनी शरणार्थियों को अमेरिका में शरण लेने की प्रक्रिया में तेजी लाएगा।

'यूनाइटेड फॉर यूक्रेन' कार्यक्रम व्यक्तिगत अमेरिकियों और गैर-लाभकारी संस्थाओं को यूक्रेनी शरणार्थियों को प्रायोजित करने की अनुमति देगा, ताकी वे आर्थिक रूप से उनकी मदद कर सकें। बाइडन ने गुरुवार को व्हाइट 'यूनाइटेड फॉर यूक्रेन' कार्यक्रम एक वेब पोर्टल पर केंद्रित होगा, जिसके माध्यम से यूक्रेनी शरणार्थियों की सहायता के लिए अमेरिकी नागरिक या कोई समूह प्रायोजक बनने और दस्तावेज

अपलोड करने के लिए आवेदन कर सकते हैं। यह पोर्टल सोमवार से काम करने लगेगा।

इस कार्यक्रम के तहत ऐसे यूक्रेनियन लोगों को अमेरिका में प्रवेश दिया जाएगा जो 11 फरवरी, 2022 तक यूक्रेन में रह रहे थे। प्रवेश दिए जाने से पहले उन्हें टीकाकरण, बायोमेट्रिक स्क्रीनिंग और पृष्ठभूमि की जांच से भी गुजरना होगा।

बता दें कि मार्च में, बाइडन ने कहा था कि अमेरिका यूक्रेन से आए 1,00,000 से अधिक शरणार्थियों को यहां शरण देगा। लेकिन अब तक यह प्रक्रिया कैसे काम करेगी, इस बारे में कोई विशेष जानकारी नहीं थी। अमेरिका में प्रवेश के लिए एक आधिकारिक मार्ग की कमी के कारण, हजारों यूक्रेनियन मेक्सिको चले गए और अमेरिका के सीमावर्ती स्थानों पर पहुंचे हुए हैं, जहां उन्हें एक विशेष शरणार्थी स्थिति के तहत प्रवेश दिया गया था। अमेरिका का अनुमान है कि युद्ध की शुरुआत से अब तक 50 लाख से अधिक लोग यूक्रेन से पलायन कर चुके हैं, जिनमें से अधिकांश महिलाएं और बच्चे हैं। जिसमें से 10 प्रतिशत से अधिक पोलैंड, रोमानिया और अन्य पड़ोसी देशों में शरण लिए हुए हैं। इसी बीच बाइडन प्रशासन ने अमेरिका में प्रवेश के लिए अपनी प्रक्रिया तेज कर दी है। हालांकि बाइडन प्रशासन यूक्रेन और लैटिन अमेरिका में शरणार्थियों की तेजी से बढ़ती संख्या को मैक्सिकन सीमा को सूचित किए बिना अमेरिका में प्रवेश करने से रोकने में भी रुचि रखता है।

अमेरिका के स्टेट डिपार्टमेंट और होमलैंड सिक्योरिटी विभाग का कहना है कि वे एक नया 'विनियमित' कार्यक्रम 'यूनाइटेड फॉर यूक्रेन' विकसित कर रहे हैं, जो अधिकांश शरणार्थियों के लिए 'मानवीय पैरोल' प्रदान करेगा। इस कार्यक्रम के तहत शरणार्थियों को अमेरिका में दो साल तक रहने के लिए, जब तक कि उनके पास देश में उनकी मदद करने के लिए एक प्रायोजक तैयार न हो, मंजूरी मिलेगी। अधिकारियों ने मौजूदा शरणार्थी कार्यक्रम के तहत स्थायी कानूनी मार्गों का विस्तार करने की भी योजना बनाई है।

इस कार्यक्रम के तहत बाइडन प्रशासन अमेरिका में शरण चाहने वालों को दृढ़ता से प्रोत्साहित करता है, जो वीजा मुक्त हैं और अमेरिका में अस्थायी शरण प्राप्त करने का सबसे सुरक्षित और सबसे प्रभावी तरीका है।

बाइडन ने यूक्रेन के लिए 80 करोड़ डॉलर की नयी सैन्य सहायता की घोषणा की

राष्ट्रपति जो बाइडन ने गुरुवार को रूस से रक्षा के लिए यूक्रेन को 80 करोड़ डॉलर की अतिरिक्त सैन्य सहायता देने की घोषणा भी की। बाइडन ने साथ ही कहा कि कांग्रेस को अतिरिक्त सहायता को भी मंजूरी देनी होगी। नए सैन्य सहायता पैकेज में अत्यावश्यक भारी हथियार, 1,44,000 कारतूस और ड्रोन शामिल हैं, ताकि यूक्रेन के दोनबास क्षेत्र के लिए बढ़ती लड़ाई में यूक्रेनी सेना क्षेत्र की रक्षा कर सके। यह यूक्रेन के लिए पहले स्वीकृत की गई करीब 2.6 अरब डॉलर की सैन्य सहायता का विस्तार है।

बाइडन ने कहा, ''हम इन्हें सीधे अग्रिम स्वतंत्रता मोर्चे तक भेजेंगे।'' उन्होंने कहा, ''रूसी राष्ट्रपति दावा कर रहे हैं कि पश्चिमी एकता में दरार पड़ जाएगी.....और एक बार फिर हम उन्हें गलत साबित करने जा रहे हैं।'' बाइडन ने अमेरिका और पश्चिमी सहयोगियों को यूक्रेन के लिए अपने समर्थन में दृढ़ रहने की आवश्यकता को रेखांकित किया। उन्होंने यह भी घोषणा की कि रूस से संबद्ध सभी जहाजों को अमेरिकी बंदरगाहों पर आने से रोका जाएगा। उन्होंने कहा कि अमेरिका, यूक्रेनी सरकार को प्रत्यक्ष आर्थिक सहायता के तौर पर 50 करोड़ डॉलर अतिरिक्त प्रदान करेगा।

डब्ल्यूएचओ ने दी फाइजर की 'पैक्सलोविड' को मंजूरी

वाशिंगटन। कोरोना महामारी के इलाज के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने बहुराष्ट्रीय दवा कंपनी फाइजर की 'पैक्सलोविड' गोली की अनुशंसा की है। इसके पहले रेमेडिसिविर और मोलनुपिरविर को मंजूरी दी जा चुकी है।

डब्ल्यूएचओ ने कहा कि वह फाइजर की एंटी वायरल गोली पैक्सलोविड के इस्तेमाल की अनुशंसा करता है। इसे अस्पताल में भर्ती किए जाने की जोखिम वाले हल्के व मध्यम श्रेणी के कोरोना रोगियों को दिया जा सकता है। इसके साथ ही डब्ल्यूएचओ ने चेताया है कि कोरोना रोधी दवाओं की उपलब्धता और कीमतों में पारदर्शिता का अभाव अब भी बड़ी चुनौती बना हुआ है। इससे निम्न व मध्यम आय वर्ग के देशों के लोगों को इलाज के लिए फिर कतारों में खड़े होने के लिए विवश होना पड़ सकता है।

दरअसल, पैक्सलोविड टैबलेट निर्मेट्रेलविर और रिटोनैविर गोलियों का मिश्रित रूप है। पैक्सलोविड के अध्ययन में पाया गया है कि इस गोली के सेवन से कोरोना रोगियों की अस्पताल में भर्ती होने की जोखिम 85 फीसद तक कम हो सकती है।

डब्ल्यूएचओ ने यह भी कहा कि फाइजर ब्रांड नाम वाली दवाएं संगठन की पूर्व योग्यता सूची में शामिल की जाएंगी, लेकिन

गुणवत्तापूर्ण स्रोतों से इनकी

डब्ल्यूएचओ ने कहा कि वह फाइजर की एंटी वायरल गोली पैक्सलोविड के इस्तेमाल की अनुशंसा करता है। इसे अस्पताल में भर्ती किए जाने की जोखिम वाले हल्के व मध्यम श्रेणी के कोरोना रोगियों को दिया जा सकता है।

जेनेरिक दवाएं अब भी उपलब्ध नहीं हैं। जेनेरिक दवाएं ब्रांड नाम वाली दवाओं का प्रतिरूप होती हैं, जो बहुत कम दावों पर बाजार में मिल सकती हैं। इससे कम व मध्यम आय वाले देशों को इलाज में सुविधा होती है।

यूएन के अधीन कार्यरत विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कहा है कि फाइजर व दवाओं के पेटेंट पूल के बीच बहुत सीमित लाइसेंस समझौता है। इसके कारण अनेक देश जेनेरिक दवाओं से लाभ नहीं उठा पाते हैं। इसलिए डब्ल्यूएचओ ने फाइजर से मजबूती के साथ सिफारिश कर रहा है कि वह अपनी मूल्य व लाइसेंस नीति को आसान व पारदर्शी बनाए ताकि जेनेरिक दवा निर्माता भी इन दवाओं का उत्पादन कर सकें तथा सस्ती दरों पर लोगों को मुहैया करा सकें।

अखंड भारत संदेश

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक

211019 से प्रकाशित
स्वामी श्री योगी सत्यम एवम् योग सत्संग समिति द्वारा
विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज
से मुद्रित एवम् क्रियायोग आश्रम अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।

Title UPHIN 29506